शाश्वत धर्म

मार्च १९९२ (१०)

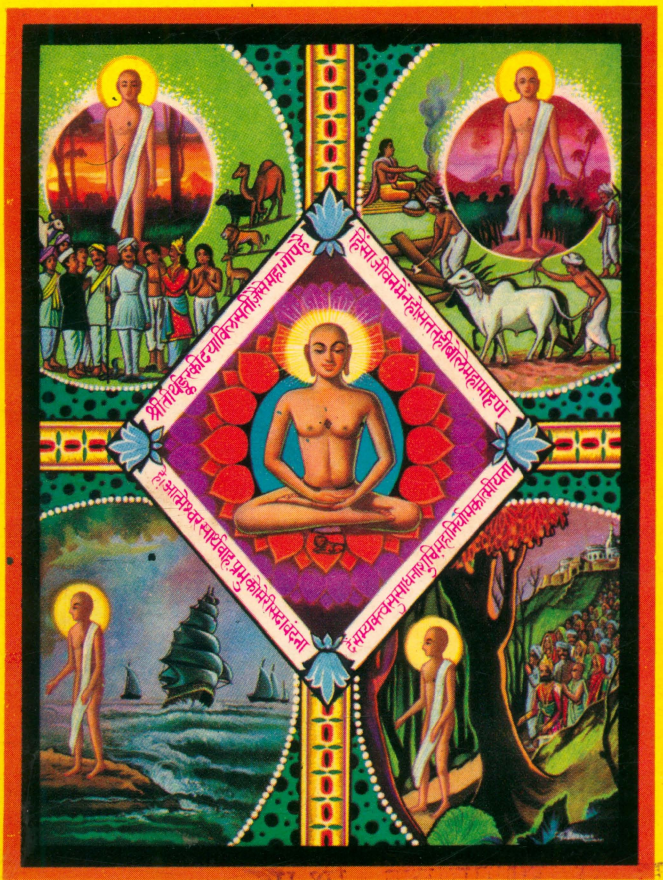

आ.श्री ... मंदिर
... कोबा
जि. गांधीनगर

संपादक - जे. के. संघवी

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी,

* श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी देहेरासर - थराद. • श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ जैन संघ-आणंद

• श्री सौधर्मवृहत्पागच्छ जैन संघ- जावरा.

शाश्वतधर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक - व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.

संपादक : जे. के. संघवी

सहसंपादक : शांतिलाल सुराना

: संपर्क सूत्र :

☎ 5340724

शाश्वतधर्म कार्यालय,

जामली नाका, थाने - ४०० ६०१. (महाराष्ट्र)

सदस्यता शुल्क

बीस वर्षीय – तीन सौ रूपये
पांच वर्षीय – एक सौ रूपये
वार्षिक – पच्चीस रूपये

विज्ञापन शुल्क (एकबार)

पूरा पृष्ठ – ३००/- रूपये
आधा पृष्ठ – १७५/- रूपये
पाव पृष्ठ – १००/- रूपये
अंतिम पृष्ठ – ५००/- रूपये
(विशेषांक पर यह दर लागू नहीं है।)

वर्ष : ३९ ★ अंक १० ★ मार्च १९९२

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

शाश्वत धर्म-मार्च १९९२

अनुक्रम

सम्पादकीय	जे. के. संघवी	३
अरिहंत परमात्माकी चार उपमाएँ	आ. श्री जयंतसेनसूरिजी	५
आहार	मुनि श्री प्रशांतरत्नविजयजी	७
श्री वासुपूज्य जिन स्तवन (१२)	मुनि श्री जयानंद विजयजी	११
एक दृष्टि समाचार पत्रों पर	धर्ममित्र	१३
आओ कमल से कुछ सिखें।	मुनि श्री रत्नसेनविजयजी	१५
क्षणिकाएं	मुनि श्री तरूणसागरजी	१७
अष्टप्रवचन माता–मुक्तिदाता	साध्वी डॉ. दिव्यप्रभाजी	१८
ज्ञान कसौटी (१२)	श्री महेन्द्र जे. संघवी	२७
आचारांग की सुक्तियाँ	श्री पुखराजजी भंडारी	२८
मानव जीवन में मौन का महत्व	श्री प्रकाशलता वोर्दिया	३३
क्या आप जानते हैं कि – –	संकलन	३१
शब्दसागर ईनामी स्पर्धा (८)	श्री प्रदीप एम. जैन	३७
स्वास्थ्य चर्चा		४०
जीवनके आयाम (कविता)	कु.कान्ता शर्मा	६
भारत रक्षक का निरिह जीवन (प्रेरक प्रसंग)	विवेक भारती	१४
सरेराह चलते-चलते	मुसाफिर	४१
समाचार दर्शन		४३
परिषद के प्रांगण से		४८
नव प्रकाशित साहित्य		५५
तपस्या पण मोंधवाडी नां भरडामां !	श्रीमती गीता जैन	
राजमती (४)	पं. पूर्णानंद विजयजी 'कुमार श्रमण'	
पयुरसा प्रजाना तमाम वर्गना	श्री सेवंती.म. संघवी	64

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं हैं।

संपादकीय

संस्कारों का अवमूल्यन

भारतीय संस्कृति परम्परा से उच्च आदर्शों व संस्कारों की पुरस्कर्ता रही हैं। हमारा भव्य भूतकाल व इतिहास इस बात का साक्षी है कि यहाँ डाकू के दिल में भी दया के संस्कार भरे होते थे, मजबूरी के कारण वह चोरी या लूट करता हो तो भी उत्तम संस्कारों के कारण वह उसे पाप समझता था, इतना ही नहीं उपकारी के प्रति कभी कृतघ्न नहीं होता था। ऐसे अनगिनत कथा प्रसंग इस बात के साक्षी है कि पेशे से बुरा कार्य करनेवाले भी अमुक मर्यादा में अपने संस्कारों को बराबर निभाते थे। हमारी दृष्टि में वे भले ही पढे-लिखे या डिग्रीयाँ हासिल किये हुए नहीं थे किन्तु अनपढ़ होते हुए भी उन्हे भाषा की कुछ तमीज थी, कुछ जरुरी जानकारी, कुछ समझदारी, कुछ विवेक होता था। आज साक्षर या पढे लिखे, डिग्रियाँ हासिल किये हुए कई लोगों में न भाषा की तमीज हैं, न समझदारी हैं न विवेक हैं। इन पढे-लिखों के पास ये सारी बातें न होकर भी अपनी साक्षरता का गलत इस्तेमाल करते हुए कुछ ऐसी चीजें पढ़ते हैं कि जिन्हें न पढ़ना ही बेहतर होता है। साक्षरता के प्रसार के साथ ही आज शिक्षा का स्तर गिरा हैं और सामान्यतः पढने-लिखने की जो चीजें उपलब्ध हैं उनकी गुणवत्ता पर भी बुरा असर पड़ा हैं, आज बाजार में निम्नस्तर की जो किताबें, पत्र-पत्रिकायें उपलब्ध है व धड़ल्ले से बिक रही हैं उन्हें देखकर तो लगता है कि ऐसे पढे-लिखों से तो अनपढ़ ही ठीक हैं क्योंकि वे ऐसा कुछ तो नहीं पढते।

ध्यान रहे अच्छे संस्कार आयात नहीं किये जा सकते उन्हें तो प्रयत्न पूर्वक अपनाने पड़ते हैं। आज की शिक्षा ज्ञान, संस्कार या चारित्रवान बनने की नहीं किन्तु मात्र व्यवसाय एवं व्यवहार लक्षी बन गयी हैं। जहाँ पैसा ही सब कुछ हो गया हैं, परिणाम स्वरुप आजकी शिक्षा ने समाज को डॉक्टर, वकील, इन्जीनियर, तो दिये हैं लेकिन सुशिक्षित सज्जन का सर्जन नहीं किया।

शिक्षा को भ्रष्ट राजकारण से मुक्त किया जाकर उसमें मूलभूत सुधार किया जाय तो 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् 'विद्या वह जो मुक्ति प्रदान करे' वाली बात चरितार्थ हो सकती हैं वरना आज तो वह मुक्ति के बजाय बंधन एवं स्वतंत्रता के बजाय स्वच्छंदता की ओर ले जा रही है।

समाज भी पैसों की अपेक्षा आदमी के चारित्र को महत्त्व दें, ध्यान रखें पैसा कुछ हैं लेकिन सब कुछ नहीं। पैसे से भोजन मिल सकता हैं, भूख नहीं; चश्मा मिल सकता हैं, आंखे नहीं; मनोरंजन के साधन मिल सकते हैं, मन को शान्ति नहीं। **पैसों के दुश्चक्र ने भी भ्रष्टाचार व अनैतिकता को पनपा कर ईमानदारी व नैतिकता के संस्कारों का गला घोंटा हैं।**

'आत्मवत सर्वं भुतेषु' अर्थात् स्वयं की आत्मा जैसे सभी जीवों को मानने के बजाय मानव आज पूर्ण स्वार्थी बन गया हैं। वह दूसरे किसी की परवाह न कर स्वयं जिवित रहना

चाहता हैं। अपने जीवन की रक्षा के लिये व सुख के लिए हजारों जीवों की हत्या भी शान्त हृदय से करने को तैयार हो गया हैं। विविध प्रकार से जीवों की हत्याऐं एवं कत्लखानों द्वारा पशुवध करते हुए वह यह नहीं सोच रहा हैं कि मैं प्रकृति व पर्यावरण के विरूद्ध जाकर आनेवाली पीढि के लिए एक गंभीर समस्या पैदा कर रहा हूँ, इस प्रकार दया, करूणा, वात्सल्य, प्रेम के संस्कार भी आज मानव भूलता जा रहा हैं।

हिंसा के दौर से गुजरते हुए मानव आज अत्यंत निष्ठुर हो गया हैं। गर्भपात द्वारा मानवीय हत्याऐं करते-करते वह आतंकवाद के सिकंजे में आकर निर्दोष मानवों की कत्ल करते हुए भी नहीं हिचकिचा रहा हैं। मानव आज दानव का चोला पहनकर संस्कारों की धज्जियाँ उड़ाने पर तुला हुआ हैं।

ऐसी भयावह स्थिती में भी समझदार विवेकशील अहिंसा में आस्था रखने वाले लोग लगभग खामोश हैं व तमाशा देख रहे हैं। संस्कारों के अवमूल्यन की मौजूदा स्थिती जारी रही तो आनेवाला भविष्य अंधकारमय होगा। हमारी चुप्पी का बडा भारी मूल्य चुकाना पडेगा यहाँ तक कि कहीं हमारी अस्मिता ही समाप्त न हो जाए।

शांत मन से हम वर्तमान में उत्पन्न स्थितियों का जायजा लें, उसे समझें व संस्कारों के अवमूल्यन को बचाते हुए पुनः उच्च आदर्शों/संस्कारों की स्थापना का व्रत धारण करें। हम सभी उसकी शुरुवात स्वयं से करना प्रारंभ करें। जिस प्रकार एक दीपक स्वयं प्रकाश देते हुए हजारों हजार दीपक जलाने की क्षमता रखता है, उसी प्रकार संस्कार दीप की ज्योति से हम भी सारे जग को प्रकाशमान करें।

J.K.Sanghvi

(जे.के.संघवी)

शब्द सागर स्पर्धा क्र. ६ के उत्तर एवं परिणाम

शाश्वत धर्म के जनवरी १९९२ अंक में प्रकाशित शब्द सागर स्पर्धा क्रमांक ६ के उत्तर निम्नांकित हैं

१) इलायची कुमार २) अनुत्तर विमान ३) आहारक शरीर ४) अशोक वृक्ष ५) जवाहरात ६) नीलाम्बर।

परिणाम - प्राप्त उत्तरों में से १३ प्रतियेगियों के उत्तर सही पाये गये। लकी ड्रॉ द्वारा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार की घोषणा कर, पुरस्कार सम्बन्धितों को भेज दिया गया है।

प्रथम श्री अशोक कुमार सुरजमलजी भंडारी-भिनमाल, **द्वितीय** - श्री शंकरलाल मेहता- लाडनू, **तृतीय** - श्री जितेन्द्र पी. जैन-थाने।

शेष सफल प्रतियोगी ● श्री मणीलाल नाथूलाल जैन - बाग ● श्री अक्षय ए. जैन - विजयवाड़ा ● श्री भावेश कुमार - विजयवाड़ा ● श्री मुनिसुव्रत स्वामी जैन पाठशाला - थाने ● श्री महेन्द्र जे. संघवी - थाने ● श्री लादूराम प्रजापत - लाडनू ● कु. नीरू बी. जैन - थाने ● कु. संगीता जे. संघवी - आहोर ● श्री एस. आर. डूंगरवाल - बड़वाह ● श्री सुरेन्द्र जे. संघवी - आहोर।

आवरण-पृष्ठ-
चित्र-कथा

अरिहंत परमात्मा की चार उपमायें

– आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी

शास्त्रों में अरिहन्त परमात्मा के चार विशेषण बताये गये हैं। अरिहन्त परमात्मा कैसे हैं? तो कहते हैं; वे महामाहण हैं, महानिर्यामक हैं, महासार्थवाह हैं और महागोप हैं।

महामाहण

'माहण' ब्राह्मण को कहते हैं। भगवान् का आदेश है – मा हण अर्थात् तू किसी की हत्या मत कर। भगवान् के इस आदेश का जो पालन करता है, वह ब्राह्मण है। भगवान् ऐसे माहणों में – ब्राह्मणों में, महान् हैं; इसलिए वे महामाहण हैं। ब्राह्मण किसे कहते हैं? जिसे ब्रह्म का–आत्मा का ज्ञान है, वह ब्राह्मण है। ब्राह्मण की दृष्टि आत्माभिमुखीन होती है। वह आत्म गुणों को प्रकट करने में तत्पर रहता है। भगवान् ने तो ब्रह्म का सम्पूर्ण ज्ञान कर लिया है, आत्मा को अपने केवल ज्ञान से जान लिया है और कैवल्य–दर्शन से देख लिया है; इसलिए वे महामाहण हैं। वे शुद्ध परम ब्रह्म हैं।

महानिर्यामक

नाविक समुद्र पार करा सकता है, अपनी नाव के सहारे। भगवान् बहुत बड़े सामर्थ्यवान नाविक हैं। वे धर्मनौका के महानिर्यामक हैं। इस धर्म की नौका पर जो सवार होता है, भगवान् उसे इस संसार समुद्र से पार कर देते हैं। भगवान् के बताये धर्म के अनुसार चलनेवाला इस अपार संसार–समुद्र से पार हो जाता है। भगवान् महानिर्यामक हैं।

महासार्थवाह

प्राचीन काल में जब लोग व्यापार के लिए दूर देश जाते थे, तब अपना 'सार्थ' (कारवाँ) बना कर जाते थे। सार्थ का अर्थ है संघ। उस सार्थ का मुखिया सार्थवाह कहलाता था। सार्थ के सभी लोग सार्थवाह के आदेश का पालन करते थे और उस पर विश्वास रखते थे। वह सार्थवाह अपने सार्थ की सब चिन्ताएँ दूर करता था और कुशलतापूर्वक मुकाम तक पहुँचाता था। सार्थवाह अपने सार्थ का योगक्षेम वहन करता था।

भगवान् महासार्थवाह हैं। यह संसार–अटवी बड़ी भयंकर है। इसमें जानमाल का बड़ा खतरा है और भटक जाने के भी अनेक अवसर हैं। यह संसार अटवी अनेक भूल–भुलैयों से भरी है। यहाँ से पार होना और मंजिल तक पहुँचना – मोक्ष तक पहुँचना – बड़ा कठिन है। भगवान् मोक्ष तक जाने का मार्ग जानते हैं। उनके सार्थ में जो भी प्रवेश करता है, उसे वे मोक्ष तक सुरक्षापूर्वक पहुँचाते हैं। भगवान् स्वयं योगक्षेम वहन करते हैं। योग का अर्थ है, अप्राप्य को प्राप्त करवाना और क्षेम का अर्थ है, जो प्राप्त हो गया, उसकी रक्षा करना। इस प्रकार भगवान् महासार्थवाह बन कर हमारा मार्ग प्रशस्त करते हैं।

महागोप

भगवान् महागोप हैं। गोप गायों को अपने अधिकार में रखता है। इधर–उधर भागने वाली गायें गोप की आवाज सुनते ही उसके सामने आ जाती हैं। भगवान भी संसार–अटवी में भटक रहे भव्य जीवों को अपने अधिकार में रखते हैं और उनकी रक्षा करते हैं। भगवान् की वाणी सुनकर इधर–उधर भटकने वाले भव्य जीव मार्ग पर आ जाते हैं। गोप जैसे गायों को सही–सलामत अपने मुकाम तक ले जाता है, उसी प्रकार भगवान् भी भव्य जीवों को सही–सलामत मोक्ष तक ले जाते हैं। भगवान् सही अर्थों में महागोप हैं।

'गो' का अर्थ 'इन्द्रिय' भी होता है। जो इन्द्रियों को अपने अधिकार में रखता है; उन्हें इधर–उधर भटकने नहीं देता; वह गोप है। अरिहंत परमात्मा ने तो इन्द्रियों को पूरी तरह अपने अधिकार में कर लिया है; अतः वे महागोप हैं।

जीवन के आयाम

——— कु. कान्ता शर्मा

मेरे मानस की यह नगरी
अनगिन अहसासों से संवरी ।
अवसाद से मन अवसन्न,
क्षण भंगुर है यह जीवन ॥१॥

नश्वर यहां मानव की देह,
त्यागना होगा इसका नेह
क्षणिक ही यहां हास-उल्हास,
बुझाता जो जीवन की आस ॥२॥

जहां आपस में हो सद्भाव.
कहां हो सत का वहां अभाव ?
चिरन्तन यहां मृत्यु व जन्म,
आत्म तत्व ही लगे गहन ॥३॥

अहम आत्मतत्व के साधन,
श्रवण मनन् और चिन्तन् ।
ब्रह्म आश्रित हो जाता है,
परम पद को पा जाता है, ॥४॥

सुख दुःख रूपी धूप छांव में,
क्षणिक खुशी क्षणिक आह में ।
बहुत समय चुक जाता है;
जीवन दीपक बुझ जाता है ॥५॥

प्रशंसनीय हो जीवन क्षण,
सृष्टा की करूणा के कण ।
नियति ! कौन झुठला पाता है,
अंतसमय जब आता है ॥६॥

अद्भुत इस जग का निर्माण,
सहज कहां पर है निर्वाण ?
बनना मिटना ही आयाम;
मृत्यु संसृति का पूर्ण विराम ॥७॥

आहार

मुनि श्री प्रशान्तरत्न विजयजी

मानव का शरीर एक मशीन के समान हैं। जैसे मशीन को भी निश्चित समय होने पर Oiling करना आवश्यक माना जाता हैं, वैसे ही इस देह को भी निश्चित समय होने पर भोजन देना अपना कर्तव्य बन जाता है, अगर इस शरीर से हम कार्य करवाना चाहें तो।

कभी सुबह ..... कभी शाम,
कभी दोपहर में..... कभी रात्रिमें

अर्थात् जब भी मनपसन्द एवं स्वादिष्ट पदार्थ नजर में आ जाय तब उसपर टूट पडना बिल्कुल अनुचित हैं। इस से शरीर रूप मशीन की संचालन व्यवस्था ठप्प ही हो जायेगी।

शरीर को अगर तंदुरस्त रखना हैं तो हमें हमारे द्वारा ग्रहण किये जाते आहार के विषय में ज्यादा सावधान रहना पडेगा।

कलाई पर रही हुई घडी को भी २४ घण्टों में एक बार चाबी देते हैं, तब जाकर वह नियमित रूप से कार्य देती हैं। ठीक ऐसी ही वास्तविकता अपने इस शरीर यन्त्र की भी हैं। यदि नियमित एवं प्रमाण पुरस्सर आहार ग्रहण करें तब तो हमे अस्पताल के द्वार देखने नहीं जाना पडे।

देखिये, प्रसिद्ध डोक्टरों के अभिप्राय आप जो आहार ग्रहण करतें हैं, उसके सिर्फ तीसरे ही भाग से जीवन जीया जा सकता हैं, अन्य दो भाग से डॉक्टर जीते हैं। (Dr.S. Copland) नब्बे प्रतिशत दर्द के मूल में आहार की ही गलती देखी जा रही हैं। (Dr. Villium Oslar) जो आहार के नियम पालता हैं, उस व्यक्ति को दवाई से कोई प्रयोजन नहीं रहता '(डॉ. बोलिंगराज)

प्रसिद्ध डॉक्टर भी यह अभिप्राय देतें है कि जितना संयम हमारा आहार पर रहेगा उतने ही हम स्वस्थ रहेंगे।

प्रथम आहार की व्याख्या एवं निष्पति देख लें। संस्कृत में हृ धातु लेना, हरण करना अर्थ में प्रयुक्त हैं। आहीयते इति आहारः आ उपसर्ग के भिन्न भिन्न अर्थ हैं, यहाँ पर मर्यादा यानि अभिविधिका अर्थ युक्ति संगत हैं। जो मर्यादा से ग्रहण किया जाय वह हैं आहार। बेमर्याद जिस को पेट में डाला जाय वह अपने स्वास्थ्य के लिये.प्रहार सम बन जाता हैं।

मन को स्वस्थ रखने हेतू तन का भी स्वास्थ्य अत्यन्त आवश्यक माना गया है।

आहार संयम के कुछ निर्देश –

☆ भोजन करते वक्त मन को प्रशान्त एवं प्रसन्न रखना चाहिये।
☆ क्रोधादि कषायों से त्रस्त होकर यदि भोजन किया जाय तो पथ्याहार भी हमारे लिये अपथ्य बन सकता हैं।

☆ भोजन के समय अन्य चिन्ताएँ छोड देनी चाहिये।

☆ कहा गया हैं, "When will you in Rome You have to Roman." जब आप जो क्रिया करते हो उस समय उसमें ही पूर्ण एकाग्र रहना चाहिये। तब ही की गयी क्रिया का सम्पूर्ण फल हमें प्राप्त हो सकता हैं, अन्यथा नहीं।

☆ भोजन के समय १/४ हिस्सा अवश्य छोड देना चाहिये कुछ दिनों तक अतृप्ति की समस्या महसूस होगी पर अभ्यास यानि आदत से वह समस्या भी हल हो जायेगी।

☆ मुख में रखे हुए प्रत्येक कवल को अच्छी तरह चबाना चाहिये, चबाया हुआ भोजन ही अधिकतम मात्रा में उपयोगी सिद्ध होता हैं। उससे ही रस–रक्त–मांस–मेद–अस्थिमज्जा एवं शुक्र रूप सप्त धातु का निर्माण संभव हैं।

☆ केमिकल युक्त पदार्थ खाना स्वास्थ्य को हानिकर हैं।

☆ नशेवाले पदार्थों से हमारी पाचन क्षमता मन्द हो जाती हैं।

☆ रसायन नमक के बजाय सामुद्रिक या फिर आयोडिन युक्त नमक स्वास्थ्य प्रद हैं।

☆ मिर्च मसाले मिलाकर या गर्म आहार नहीं लेना चाहिये।

☆ यथा संभव आहार को अपने स्वयं के ही प्राकृतिक रूप से लिया जाय तो वह ज्यादा असरकारक होता है।

☆ बाजार में उपलब्ध खाद्य पदार्थों में से मूल विटामिन्स आदि निकाल लिये जाते हैं, उस में रंग आदि की जो मिलावट की जाती हैं वह भी स्वास्थ्य के लिए हानिकर्ता हैं। वे पदार्थ कितने ही दिनों तक पडे रहतें हैं, इससे भी अभक्ष्य बन जाते हैं। अतः त्याज्य ही हैं।

शाकाहार ही प्राथमिक कक्षा का खुराक हैं। शाकाहार पाचन में भी सरल हैं। शाकाहारी खुराक के स्वयं के ही विशेष प्रकार के स्वाद एवं सुगन्ध भी हैं। अपने भारत देश के लिए तो शाकाहार ही सर्वाधिकरूप से अनुकूल रह सकता हैं, क्योंकि भारत संस्कृति प्रधान देश हैं। हमें किस विधि से क्या करना इसका अथेति निर्देश हमारे ऋषिमुनियों ने दिया हैं।

दशवैकालिक सूत्रकार पू. आ. श्री शय्यंभव सूरिजी महाराज ने ठीक ही तो बताया हैं –

"जयं चरे जयं चिट्ठे, जय मासे जयं सए,
जयं भुंजंतो भासंतो, पावं कम्मं न बंधई॥"

चलना, खड़े रहना, बैठना, सोना, खाना, पीना, बोलना, ये सब क्रियाएँ हमें यतना (उपयोग) पूर्वक ही करनी चाहिये, जिससे हमें पाप कर्म का बंध न होवें।

जैन धर्म तो अहिंसा परमोधर्म हैं ही किन्तु – इस्लाम धर्म मान्य ग्रन्थ में भी शाकाहार के उपलक्षण से जीवदया का विधान हैं क्योंकि खुदा जगत के पिता हैं, जगत के सब जीव खुदा के खुद के ही हैं। खुदा के लिये तो मनुष्य हो या फिर जानवर सब समान जीव हैं। कुराने शरीफ, सुरा उलमायद सिपारा मंजल–३ की तीसरी आयात में स्पष्ट फरमान हैं "मक्का की हद में किसी भी जानवर को मारना नहीं अगर कोई गल्ति से मार भी दें तो उस के स्थान पर वैसा ही दूसरा जानवर रख देना।"

कुराने शरीफ सुरा ने हज की ३६ वीं आयात में साफ साफ शब्दों में लिखा है

''मांस या खुन मुझे कभी पहूँचनेवाले नहीं है, सच्चे दिल की प्रार्थना अवश्य मैं सुन सकता हूँ।''

इससे यह सिद्ध हुआ कि कोई धर्म हमें मांसाहार की बात कहता नहीं, मांसाहार दानव यानी शैतान का धर्म हो सकता हैं अपना तो कभी भी नहीं हो सकता।

अत्यन्त क्षुधातूर रहने से जैसे हानि होती हैं, वैसे ही अधिक भोजन भी कोई लाभप्रद नहीं हैं, सप्रमाण भोजन से बल, बुद्धि, तेज की वृद्धि होती हैं, किन्तु अतिमात्रा में किये गये भोजन से विलास वृद्धि ही हो सकती हैं, जडता भी आ जाती हैं, अधिक भोजन ज्यादातर इस कारणों से किया जाता हैं –

– भोजन अत्यन्त स्वादिष्ट बना हो।
– भोजन ज्यादा पकाया गया हो।
– साग्रह अधिक परोस दिया गया हो।
– साथ में बैठे मित्रों से स्पर्धा लग गई हो।
– तीव्र क्षुधा परिषह सताता हो।
– भावि में भोजन कब मिलें? यह समस्या हो समझ लिजिये –

पाचन शक्ति से अधिकमात्रा में किया गया भोजन अजीर्ण का कारण बनता हैं।

शास्त्रकार महर्षि फरमातें हैं हर पन्द्रह दिन में एक बार उपवास करें तो कभी भी हम रोग ग्रस्त नहीं बन सकते हैं। निर्जल उपवास से जठराग्नि प्रदिप्त होती हैं। प्रदिप्त अग्नि में कितने ही रोग जलकर भस्म हो जाते हैं।

– उपवास के और भी बहुत से लाभ हैं जैसे कि – खाने–पीने में जो समय फिजूल खर्च होता था उसकी बचत।
– सब रोगों की जड कच्चा आम हैं वह उपवास से पक्व होता हैं। परिणामतः शरीर से व्याधि दूर रहती हैं।
– जठराग्नि प्रदिप्त होने से रोग भस्म हो जाते हैं।
– वात–पित्त कफादि की विषमता सम हो जाती हैं।
– दस्तें व पिशाब की शिकायतें दूर हो जाती हैं।
– शरीर को पूर्ण रूप से विश्राम मिलता हैं।
– एलोपेथिक दवा से इकट्ठा हुआ जहर खत्म हो जाता हैं।
– अवकाश के समय में आत्मचिन्तनादि कर सकते है।
– प्रातः शीघ्र उठकर ध्यान–जापादि का आनन्द ले सकते हैं।
– तपधर्म के सेवन से निकाचित कर्म की निर्जरा सहज में ही हो जाती हैं।
– वीतराग देव की आज्ञापालन से आराधक बन सकते हैं।

उपवास की इतनी सारी उपलब्धियाँ देखी फिर तो उपवास किसे कहतें है यह भी समझना परमावश्यक बन जाता हैं।

उपदेश प्रसाद सूत्रकार फरमातें हैं –

''कषाय विषयाहार त्यागो यत्र विधीयते,
उपवासः स विज्ञेयः शेषं लंघनकं विदुः''

कषाय–विषय एवं आहार इन तीनों का जहाँ त्याग किया जाता हैं, उसे विज्ञानी उपवास कहतें हैं, जहाँ केवल आहार त्याग ही हैं वह लंघन ही रह जाता हैं।

प्रतिदिन उपवास तो हम नहीं कर सकतें हैं किन्तु पर्वदिनों में त्याग–तपस्या में वृद्धि के भाव रखने चाहिये। भोजन के विवेक के विषय में महाकवि कालिदास भी कहतें हैं जो चलते चलते खाता हैं, वह मूर्ख में गिना जाता हैं, अतः सदा विधिवत् बैठकर ही भोजन ग्रहण करना चाहिये, अन्यथा हमारे एवं पशु के बीच क्या अन्तर रहेगा?

एक विज्ञप्ति

आप सभी को ज्ञात है कि पिछले वर्षों में कागज, मुद्रण, डाक दरों व अन्य खर्च में भारी वृद्धि हुयी है, इसलिए हमने एप्रिल १९९२ से 'शाश्वत धर्म' की सदस्यता शुल्क में वृद्धि करने का निर्णय लिया है, जो निम्नांकित रहेगा –

★ **तीन वर्षीय – एक सौ रूपये**
★ **दस वर्षीय – तीन सौ रूपये**
★ **बीस वर्षीय – पांच सौ रूपये**

(विज्ञापन शुल्क की नयी दरें अगले अंक में प्रकाशित की जायेंगी)

१ एप्रिल १९९२ के बाद 'शाश्वत धर्म' के सदस्य बनने पर नयी दरें लागू होंगी, किन्तु उसके पहले ३१ मार्च १९९२ तक सदस्यता शुल्क पूर्व के अनुसार ही रहेगा।

सुंदर कागज, सुवाच्य मुद्रण, नयनरम्य चार रंगी आकर्षक कवर पृष्ठ के साथ ही पुरे परिवार के लिए रूचिकर सामग्री लेकर सम्यग्ज्ञान व सुसंस्कारों का संदेशवाहक 'शाश्वत धर्म' के समय पर प्रकाशन का हम वादा करते हैं, आशा है आप सभी पाठकों, ग्राहकों एवं शुभचिन्तकों का आत्मीय सहयोग जैसा है वैसा ही लगातार रहेगा।

आप सभी से ग्राहक बनाकर 'शाश्वत धर्म' के प्रचार/प्रसार करने एवं समय–समय पर मंगलप्रसंगों में अर्थ सहयोग देने व दिलाने का आग्रहपूर्ण निवेदन करते हूए विराम लेता हूँ।

विनित

J. K. Sanghvi

(जे. के. संघवी)
सम्पादक – शाश्वत धर्म

श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी कृत चतुर्विंशति जिन स्तवन (धारावाहिक)

श्री वासुपूज्य जिन स्तवन (१२)

विवेचन - मुनिराज श्री जयानंदविजयजी

(सूरि जिन - - - - - - ए राग)

वासु पूज्य वीतराग विचारी, आव्यो हुं तस आगे ।
मारे किम हवे मोह मिथ्यात्वी, जिहां अनुभव रस जागे रे ।
मुनिजन सेवो श्री वासुपूज्य ॥ टेर ॥१॥

गुरुदेव श्री कहते है कि आप श्री के पास से राग सर्वथा दूर हो गया है ऐसे हैं श्री वासुपूज्य स्वामी मैं आपको वीतराग समझ कर आप के पास आया हूँ ।

एक सामान्य राजा के शरण में जाने वाला व्यक्ति भी सामान्य शत्रु के भय से मुक्त हो जाता है । वैसे ही मैं तो राग का सर्वथा विनाश करने वाले वीतराग के शरण में आ गया हूँ । अब मुझे मोह मिथ्यात्वादि अंतरंग शत्रु कैसे मार सकेंगें ? अब वे मेरा अंश मात्र भी अहित नहीं कर सकेंगे ।

आपके शरण में आनेवाला, आपके प्रति पूर्ण श्रद्धावान होता है । पूर्ण श्रद्धावान समकिती होता है, और समकिती में अनुभव रस जागृत हो जाता है । आंशिक आत्मानुभव का ज्ञान हो जाता है । जहां अनुभव रस जागृत होता है, वहां मुनिभाव या मुनि बनने का भाव जागृत हो जाता है । अतः हे मुनिभगवंतो तुम श्री वासुपूज्य भगवंत की सेवा करो ।

गुरुदेव श्री ने मुनिजन सेवो शब्द का प्रयोग करने के द्वारा " चलमाणे चलिए " भगवती सूत्र के सिद्धांत का आधार लिया है । जो श्रावक श्राविका भी मुनि बनने की भावना युक्त हैं वे भी मुनि है । मुनि बनने हेतु प्रयत्न शील हैं वे भी मुनि है । इस अपेक्षा से 'मुनिजन सेवो' शब्द योग्य है । सभी के लिए, चतुर्विध संघ के लिए यह शब्द बोलने में कोई हरज नहीं .

(जिन्हें शिवसुख प्राप्त करना हैं वे सभी वासुपूज्य भगवंत की सेवा करें)

मुद्रा उदासीन मन में भाती, देखी थयो दीन दक्ष ।
निश्चलता निय नी निज चित्ते, जाचुं किम अन्य जक्षरे । मु.॥२॥

हे वासुपूज्य भगवंत ! सांसारिक भावों से सर्वथा उदासीन भावयुक्त आपकी मन मोहक मुद्रा (मुझे) मेरे मनें में विशेष रुप से प्रिय है । ऐसी मुद्रा को देखकर मैं आत्म संपत्ति से प्रगट रुप में गरीब होते हुए भी दक्ष हो गया हूँ ।

मेरे मन में मेरे आत्मस्वरुप की एवं आप के वीतराग स्वरुप की निश्चलता इतनी दृढ हो गई है कि अब मैं दूसरे यक्षादि देव को कैसे याचूं ? उनकी सेवना कैसे करुं ? अब मैं किसी रागी देव की उपासना नहीं करुंगा।

राखे जिनशासननी रीति, चौसठ इंद्र चित्त चोखे ।
सघलाय अनरथ दूर नसाडे, प्रीतिये समकित पोखेरे ।मु. ॥३॥
तो पण किम ही तेहने ऊपर, ममता नहीं मन मांहे ।
देखो देव ए दीन दयाला, सुर सानिध्य नहीं सा हे रे ।मु. ॥४॥

जैन शासन की यह रीति है कि इंद्रादिक सभी देव समकिती आत्माओं की सहायता में तत्पर रहते हैं । बिना साधना किये भी उनके संकट दूर कर देते हैं । गुरुदेव श्री कहते हैं कि सभी चौंसठ इन्द्र उस

जिन शासन की रीति की पालना परिपूर्ण रुप से कर रहे हैं। उस रीति के अनुसार साधकों के सभी अनरथ अनर्थों को दूर भगा देते हैं। समकिती आत्मा के, प्रति प्रीति होने से प्रीतिपूर्वक उनको देखकर हर्षान्वित होते हैं। समकित गुण की अनुमोदना करते हैं।

ऐसे चौसठ इन्द्र एवं उनके सेवक दूसरे असंख्य समकित दृष्टि देवताओं के पास याचना करने की ममता मुझे अंश मात्र भी उत्पन्न नहीं हो रही है। क्योंकि देवाधिदेव स्वयं उनकी सेवा नहीं चाहते . जब मेरे स्वामी चौंसठ इन्द्रों के विज्ञप्ति करने पर भी उनकी सेवा नहीं चाहते तो मैं उनका भक्त होकर दूसरों की मेहरबानी कैसे मांगु ? उनसे याचना कैसे करुं कि आप मेरे संकट दूर करो ? कर्मक्षय स्वयं की शक्ति से करना है।

देवाधिदेव ने यह स्पष्ट शब्दों में कहा है कि कर्मक्षय स्वयं की शक्ति से ही होता है। कर्मक्षय दूसरों की रागी द्वेषी देवों की सहयता से हो सकता होता तो तीर्थंकर भगवंत चौसठ इन्द्रों को आज्ञाकर सभी भव्यात्माओं को शिव सुख प्राप्त करवा देते।

श्री महावीर प्रभु के परमभक्त श्रेणिक को नरक में क्यों जाने देते ? श्री नेमिनाथजी श्री कृष्ण को नरक में क्यों जाने देते ?

कर्मक्षय तो निज पुरुषार्थ से ही होता है।अतः मैं स्वयं अपनी शक्ति से कर्मक्षय करने की भावना युक्त होकर पुरुषार्थ द्वारा सिद्धपद प्राप्त करुं।

सूरि राजेन्द्र नी ऋद्धिशोभे, जसु जग जस जन जंपे।
पण ए प्रीतम प्राण पियारो, रंजे नहीं रज लिंपे रे। मुनि. ॥५॥

गुरुदेव श्री कहते हैं कि देखो ! देवाधिदेव तीर्थकर भगवंत श्री वासुपूज्य भगवंत की ऋद्धि कैसी शोभाय मान है ! विश्व में तीर्थंकरों के जैसी ऋद्धि कहीं दृश्यमान नहीं हो सकती। आत्मिक संपत्ति एवं भौतिक संपत्ति दोनों प्रकार की ऋद्धि तीर्थंकरों के अलावा इस विश्व में चौदह राज लोक में कहीं दृष्टि गोचर नहीं हो सकती विश्व के सभी भव्यात्मा देवाधिदेव की सेवा चाहते हैं।

सेवा चाहना एवं सेव्य का खुश होना इन दोनों में अंतर है। महत्व सेवा चाहने का नहीं है महत्व है सेव्य का खुश होना ।

गुरुदेव श्री कहते हैं कि प्राणों से भी प्रिय प्रितम कर्म रुपी रज के लिंपन के कार्य में लेश मात्र भी खुशी प्रमोद नहीं दर्शाते। अर्थात् जो-जो आत्माएँ भगवंत की सेवा इच्छा पूर्वक करते हैं पर इच्छा है भौतिक सुख प्राप्त करने की तो उन भक्तों पर भगवंत खुश रंजित नहीं होते। भगवंत तो कर्मक्षय को लक्ष्य बनाकर देवाधिदेव की सेवा पूजा आज्ञा की आराधना द्वारा करता है उस पर रंजित खुश होते हैं।

गुरुदेव श्री ने इस स्तवन में स्पष्ट शब्दों में कहा है , कि देवाधिदेव स्वयं चौसठ इंद्रों की सेवा नहीं चाहते पर वे इंद्रादि देव स्वयं उनकी सेवा स्वेच्छा से करते थे। तो मैं प्रभुभक्त होकर रागी द्वेषी देवदेवियों के पास याचना कैसे करुं ? अगर उनके पास याचना करता हूँ तो मैं भगवंत के सिद्धांतों की अवहेलना द्वारा भगवंत की भी अवहेलना करता हूँ। भगवंत का भक्त तो भगवंत के मार्ग पर चलने वाला होता है। ऐसे भगवंत के शरण में आ जाने के बाद मिथ्यात्व एवं मोह रुपी अंतरंग शत्रु मुझे किस प्रकार दुःख दे सकेंगे?

इस प्रकार इस स्तवन में गुरुदेव श्री ने देव देवियों के पास याचना से मुक्त होने का एवं शरण लेने योग्य एक मात्र मोह विजेता देवाधिदेव ही हैं ऐसा दर्शाकर, प्रभु की शरण लेने वालों का मोह किसी भी प्रकार से अहित नहीं कर सकता, यह कहा है।

एक दृष्टि : समाचार पत्रों पर

★ **सन् १९९०–९१ में सबसिड़ी की रकम १०,७०० करोड़ से ज्यादा थी, जिसमें उर्वरक (रासायनिक खाद) पर ७००० करोड़ रूपये थी। (जनसत्ता १०–२–९२)**

– इतनी बडी रकम सबसिड़ी में देकर इसका लाभ रासायनिक खाद के कारखानों को मिलता है। छोटे किसान जो देशी खाद का इस्तेमाल करते हैं उन्हे कोई फायदा नहीं होता। दूसरी ओर सबसिडी के कारण किसान देशी खाद को छोड़कर रासायनिक खाद की ओर प्रवृत्त होता है, जिसके दुष्परिणाम तो सामने आ रहे हैं। एवं दी गयी सबसिडी के रूपयों की पूर्ति जनता की जेब से टेक्स वसूल कर की जाती है, या विदेशी कर्ज लेकर, परिणाम स्वरूप महंगाई और बढती जाती है व उर्वरक उद्योग कमाते हैं।

★ **महानगर की युवा पिढ़ी पर नशीले पदार्थों की जानलेवा लत का खतरा मंडरा रहा है। आज बम्बई की हालत इतनी बदतर है कि हर गली–नुक्कड पर नशीले पदार्थ आसानी से उपलब्ध हैं। (जनसत्ता २५–१२–९१)**

– नशीले पदार्थों का कारोबार दिन दुगुना रात चौगुना बढ रहा है। तस्कर धन लाभ के लालच में अफीम, हशीश, गांजा, चरस, एल.एस.डी. हेरोईन, मैंड्रेक्स, क्रैक, कोकेन, ब्राऊन शुगर, हेरोईन आदि की लत किसी भी प्रकार से नवयुवकों में लगाने के नये–नये तरीके ढूंढ निकालते हैं। एक बार इनकी लत में चढने के बाद उसे छोड़ना मुश्किल हो जाता है। कई लोगों के जीवन व परिवार इनके कारण बर्बाद हो गये। समाज व सरकार को इस विषय में रोकथाम के लिए कोई ठोस कदम उठाने चाहिये।

★ **नक्सलियों ने गया में ३९ हत्याएं की। पूरा गांव घेर कर घंटो आगजनी व नरसंहार करते रहे। (जनसत्ता १४–२–१९९२)**

– अपने आप को संस्कारी एवं विकसित कहलाने वाला मानव आज कितना गिर गया है, उसका यह उदाहरण मात्र है। शैक्षणिक स्तर में सुधार होने के बाद ऐसी घटनायें हमें सोचने को मजबूर कर रही है कि आझादी के ४४ वर्षों बाद भी हम कैसी राजनिति में जी रहे हैं। सम्प्रदायवाद एवं जातिवाद का कैसा जहर लगातार घोला जा रहा है। ऐसी नृशंस हत्याओं के बाद भी सत्तास्थान पर बैठने वालों के कान पर जूं भी नहीं रेंगती। मात्र घटनास्थल पर जाने का दिखावा कर वे पांच हजार से एक लाख तक की रकम मृतक के परिवारों को देने की घोषणा कर देते हैं। यद्यपि वह रकम भी हमारे और आपके जेब काटकर टेक्स द्वारा वसूली जाती है।

– *'चकोरदृष्टि'*

प्रेरक प्रसंग

भारत रक्षक का निरिह जीवन

विवेक भारती

"अरे चन्द्रगुप्त। अब तो तुम सचमुच ही 'सम्राट चंद्रगुप्त' बन चुके हो। अब आज तुम मेरी एक इच्छा पूरी करो।" – चाणक्य ने अपनी लंबी चोटी की गाठ सहलाते हुए कहा।

"गुरुदेव! आप भी बहुत ही मीठी चुटकी लेते हैं। सारा साम्राज्य आप के इशारे पर नाचता है। हम सब आपकी आज्ञा के अधीन है। कहिए, आपकी क्या आज्ञा है? हमे उसको पुरी करने पर गुरु सेवा करने का गर्व होगा।" – चन्द्रगुप्त ने बहुत ही नम्रतापूर्वक निवेदन किया। फिर वह उन्हें ताकते रहे।

"अरे चन्द्रगुप्त! नहीं, नहीं, महाराज चन्द्रगुप्त! आज तुम्हें मेरी एक इच्छा ईमानदारी से पूरी करनी ही होगी। आश्वासन दो कि मेरी इच्छा सचमुच पूरी करोगे। वैसे भी मेरा हक है। मैंने तुम्हारी सभी इच्छाएं पूरी कीं। गिनाना तो नहीं चाहिए पर याद तो दिला ही देता हूं कि सम्राट के पद का हकदार बनाया। विश्व विजेता सेल्यूकस जैसे प्रतापी नरेश पर भी तुम्हारी विजय पताका फहरवाई। उसकी विश्व–सुंदरी पुत्री हेलेन को तुम्हारी पत्नी बनवाया। अमात्य राक्षस को तुम्हारे महामन्त्री के रूप में कार्य करने के लिए लगाया। राज्य का क्षेत्रफल बढ़ाने का हर एक अभियान सफल कराया। कहने का मतलब यह है कि इस गरीब ब्राह्मण से जो तुमने मांगा उसे जुटाने के लिए अपने आपको झोंका तुम्हारी सारी इच्छाएं पूरी हुई। तब क्या तुम मेरी एक आकांक्षा पूरी नहीं करोगे? तुम नहीं करोगे, यह मैं नहीं सोच रहा। परन्तु तुम क्या मेरी इच्छा पूरी करने का वायदा नहीं कर सकते हो? मैं गरीब ब्राह्मण नागरीक आज्ञा नहीं कर रहा। सिर्फ अपने नरेश से आश्वासन चाह रहा हू।" – चाणक्य ने चन्द्रगुप्त के अंतर में झाकते हुए कहा।

इधर सम्राट चन्द्रगुप्त चाणक्य के इस अजीब व्यवहार पर चकित थे जिसका सब कुछ है वह भी आश्वासन क्यों कर मांग रहा हैं।

तभी चाणक्य की आवाज फिर गूंजी – "चन्द्रगुप्त। क्या सोच रहे हो? क्या मुझे आश्वासन देने में कोई हिचक है तुम्हें?"

"नहीं गुरूदेव! वैसे, तो आपकी हर आज्ञा इस राज्य के लिए ब्रह्मा की लकीर है। फिर भी आप आश्वासन ही चाहते हैं तो ठीक जैसीं आपकी इच्छा होगी उसे पूरी कर मुझे प्रसन्नता होगी।" सम्राट चन्द्रगुप्त कह गए।

"वत्स चन्द्रगुप्त! तुम्हारा सितारा सदैव बुलंद ही रहे। आज तुम इस देश के शिखर पर हो पर मेरे जीवन की सार्थकता तुम्हारे इस राजमहल में नहीं किसी सरिता की सरोवर, वन या निर्जन में मेरी पर्ण कुटिया में है। कदाचित् तुम्हे यह स्मरण ही होगा कि मैं जब तुम्हारे यहां आया था तब अपना कम्बल, लोटा और डंडा यहां पर जमा करवा दिया था। मुझे अब वह अमानत वापस करा दो और मुझे बिदा करो ताकि मैं अपनी कुटिया आबाद कर सकूं।" – चाणक्य ने गम्भीरता से कहा।

आश्चर्यचकित चन्द्रगुप्त के मुंह से निकला –

"यह क्या, गुरूदेव।"

"अपना आश्वासन भूल गए क्या?"

"नहीं, गुरूदेव, नहीं।"

"तो फिर.....।"

....और अब सम्राट चन्द्रगुप्त के पास काई उत्तर नहीं था। तन पर चादर लपेटे चाणक्य डंडा फटकारते हुए आए थे, वैसे ही राजमहल से लौट गए अपनी कुटिया की दिशा में तेजी से।

आओ! 'कमल' से कुछ सीखें!

[मुनि श्री रत्नसेनविजयजी]

प्रकृति मंडल की विराट सृष्टि पर जब मैं अपनी नजर डालता हूँ तब मुझे कहीं सागर दिखाई देता है तो कहीं ऊँचे ऊँचे पर्वत। कहीं अपनी हजारों किरणों से सुशोभित सूर्य के दर्शन होते है तो कहीं अपनी सौम्य किरणों से रात्रि के अंधकार को चिरने वाले चन्द्र के। कहीं कलकल करके बहती हुई नदी दिखाई देती है तो कहीं शांत–प्रशांत सहस्रदल कमलों से युक्त मान सरोवर दिखाई देता है। कहीं तन के ताप को हरनेवाले हरे–भरे वृक्ष दिखाई देते है तो कहीं रेगिस्तान की धरती पर रेती के मोटे–मोटे टीले।

प्रकृति के ये सारे तत्व मूक मौन रहकर हमें कुछ न कुछ प्रेरणा करते रहते हैं। हाँ! उस मौन उपदेश को सुनने के लिए हमारे पास विवेक कर्ण की आवश्यकता है।

शांत–प्रशांत सरोवर में खिले हुए कमल को जब मैंने देखा तो मुझे लगा – वह मुझे बहुत कुछ प्रेरणा कर रहा है।

हाँ! कमल के उस मौन उपदेश को सुनने के लिए जब मैंने अपने कान दिए–– तब मेरे आनंद का पार न रहा।

किसी विद्वान की वाणी और वर्तन में अंतर दिखाई दे सकता है, परंतु कमल का वह उपदेश तो उसके स्व–आचरण के अनुरूप ही था।

अनेकविध विशेषताओं के कारण ही भारतीय संस्कृति में कमल का अपना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। अपनी अनेक विशेषताओं के कारण ही कमल प्रभु के चरणों में एवं प्रभु के मस्तक पर अपना स्थान धारण करता है।

तारक तीर्थंकर परमात्मा भी अपने धर्मोपदेश में कमल के स्वरूप का निर्देश कर कमल के समान जीवन जीने की प्रेरणा करते हैं।

कमल की सबसे बडी प्रेरणा है – अनासक्ति की। कमल कीचड़ में पैदा होता है, जल से अभिवृद्धि को प्राप्त करता है – परंतु वह कमल कीचड़ व जल से एकदम अलिप्त ही रहता है। सरोवर के बीच रहने पर भी वह सरोवर के जल से अलग ही रहता है।

'कमल' का यह मूक उपदेश है – संसार में जीओ किंतु अनासक्त भाव से। भौतिक पदार्थों के बीच रहने पर भी उन पदार्थों के प्रति हृदय में लेशमात्र भी आसक्ति नहीं होनी चाहिये।

भौतिक पदार्थों के प्रति जो आसक्त होता है, वह नीचे डूबता है और जो अनासक्त होता हैं वह कमल की भांति ऊपर उठता है।

शरीर के अन्य बाह्य बंधनों को तोड़ना आसान है किंतु आसक्ति के बंधन को तोड़ना अत्यंत ही कठिन है। जब तक आसक्ति का बंधन नहीं टूटता है, तब तक आत्मा भव के बंधन से कभी भी मुक्त नहीं हो सकती।

जीवन–व्यवहार में समस्त क्लेशों कां मूल भी यह आसक्ति ही है। हृदय में रही हुई आसक्ति के कारण ही व्यक्ति भौतिक पदार्थों के संग्रह के लिए अति प्रयास करता है और उन पाए हुए पदार्थों के संरक्षण के लिए रात और दिन श्रम करता है। आज तक दुनिया में जितनें भी झगडे पैदा हुए हैं उनमें मुख्य कारण धरती धन और स्त्री की आसक्ति ही है। धन धरती और स्त्री की आसक्ति से मुक्त व्यक्ति के लिए झगडे का लगभग कम ही अवसर हाथ लगता है।

कमल का यह संदेश है कि यदि संसार के भोग सुखों का त्याग करने का यदि तुम में सामर्थ्य नहीं हैं तो कम से कम उन पदार्थों की आसक्ति को तो तोड़ ही दो अर्थात् उन पदार्थों का भोग करना ही पड़े तो भी अनासक्त भाव से करो।

सचमुच, आसक्ति ही सबसे बडा भयंकर बंधन है। इस बंधन से मुक्त आत्मा अन्य सब बंधनों को तो सहज ही तोड़ देती है। आसक्ति के बंधन से जकडा हुआ व्यक्ति अन्य सब बंधनों से मुक्त भी हो तो भी उसकी मुक्ति का कोई अर्थ नहीं है।

भौतिक पदार्थ जितने भयंकर नहीं हैं, उससे भी अधिक भयंकर उन पदार्थों के प्रति रही हुई आसक्ति ही है।

बाह्य पदार्थों का त्याग तो और भी सरल है, परंतु उन पदार्थों की आसक्ति को तिलांजलि देना अत्यंत ही कठीन है।

कमल का यह संदेश – जीओ किंतु निर्लेप भाव से। जीवन में यदि यह निर्लेप भाव आ जाय तो जीवन आत्मा के असीम आनंद से भर जाएगा।

आसक्ति ही हमारे समस्त दुःखों की जड़ है। धन की आसक्ति पुत्र परिवार की आसक्ति, पद–प्रतिष्ठा की आसक्ति, राज्य–सत्ता की आसक्ति इत्यादि अनेक प्रकार की आसक्तियाँ हमारे जीवन के नंदनवन को नर्कागार में बदल देती है।

कमल की अपनी दुसरी विशेषता है – निर्मलता। कमल के चारों ओर कीचड़ भी होता है – परन्तु वह सर्वथा बेदाग होता है। उसकी एक भी पँखुड़ी पर किसी भी प्रकार का दागा नहीं होता है। इसी कारण वह सर्वथा मल रहित निर्मल और स्वच्छ होता है। निर्मल कमल का यही उपदेश है, जीवन निर्मल होना चाहिये। अपने जीवन वस्त्र पर किसी प्रकार का दाग नहीं चाहिये। जीवन निष्कलंक हो। अर्थात् हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार और परिग्रह के पाप से जीवन कलंकित नहीं होना चाहिये।

जिसके जीवन में हिंसा का पाप रहा हुआ है, जो व्यक्ति बात–बात में झूठ का आश्रय लेता है। जो व्यक्ति धनादि के लोभ में चोरी का पाप करता है। जिसकी जीवन–चादर व्याभिचार के पाप से मलीन बनी हुई हैं – जो धन के संग्रह में ही अत्यंत लिप्त है – ऐसे व्यक्ति के जीवन को निर्मल या पवित्र कैसे कह सकते हैं?

कमल की भांति यदि जीवन में निर्मलता प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने जीवन को हिंसा, असत्य, चोरी, अब्रह्म एवं परिग्रह इन पांच भयंकर पापों से मुक्त बनाना

होगा, जिसके जीवन में ये भयंकर पाप नहीं है, वही व्यक्ति पवित्र जीवन/निष्पाप व निर्मल जीवन जी सकता है।

कमल की तीसरी विशेषता है – वह अत्यंत ही सुगंधी होता है। अपने निकट आनेवाले सभी को वह समान भाव से सुगंध ही प्रदान करता है। कोई कमल को सम्मान दे अथवा कोई कमल को मोड़ दे – फिर भी कमल तो सबसे सुगंध ही प्रदान करता है।

कमल की सुगंध पवित्र आचार की प्रतिक है। सुगंध के कारण कमल सर्वत्र सभी को अच्छा लगता है, उसी प्रकार जिसके जीवन में पवित्र आचार की सुगंध रही हुई है, वह व्यक्ति सभी को प्रिय बन जाता है।

कमल की सुगंध की भांति जिसके जीवन में पवित्र आचारों की सुगंध रही होती है, ऐसे व्यक्ति को कौन नहीं चाहेगा ?

जिसके जीवन में दुराचार और व्याभिचार की दुर्गंध रही हुई है – ऐसे व्यक्ति के संपर्क से भी अपने को नुकसान ही होता है।

मल–मूत्र स्वयं तो दुर्गंधी है ही, उनके संपर्क में आनेवाले को भी दुर्गंध ही प्रदान करते है। अतः समझदार व्यक्ति जिस प्रकार मल–मूत्र की गंदगी से दूर रहना पसंद करता है, उसी प्रकार जिसके जीवन में दुराचारों की दुर्गंध रही हुई हैं – सज्जन व्यक्तियों को ऐसे व्यक्तियों से सदैव दूर ही रहना चाहिये।

□◇□◇□◇□◇□◇□

क्षणिकाएँ

हथकण्डा

शाकाहारी हो नहीं सकता,
कोई अण्डा।
ये तो क्रुर स्वार्थियों का है,
बर्बर हथकण्डा॥

इसीलिये

कत्लघरों में प्रतिदिन,
फूट–फूट रोती मानवता।
इसीलिये सड़कों पर,
अट्टहास करती दानवता॥

श्री दिलिप धींग – बम्बोरा

उन्होंने कहा

अंडा को शाकाहारी
मान लें तब कैसा रहेगा ?
मैंने कहा –
वैश्या को माँ मानने
जैसा रहेगा !

आज का आदमी

दोहरा जीवन जी रहा है,
एकान्त मयखाने में
'शराब'
और समाज में 'पानी'
छानकर पी रहा है।

मुनि श्री तरूणसागर

अष्ट प्रवचन माता-मुक्तिदाता

साध्वी डॉ.दिव्यप्रभा

''माँ'' यह कितना मधुर शब्द है! याद आती है कभी आपको अपनी माता की! माँ का वात्सल्य कितना मधुर होता है। उसकी गोद में जाते ही वह अपना वात्सल्यमय हाथ फैलाती है, मस्तक पर हाथ रखकर सर्व कषायों में मुक्त करती है, पीठ पर हाथ फिराकर सर्व पापों का क्षय करती है!!!अहा! एक मीठा चुम्बन करके लोकाग्र की सिध्दावस्था का आनंद प्रदान करती है। माँ...माँ वह स्मित देकर दुःख मुक्त करती है। आँखों से आँखें मिलाकर आत्म-दर्शन जगाती है।

माँ, सर्व मुनियों की माँ - ''**अट्ठपवयण माया**'' अष्टप्रवचन माता! उसे एक ही चिन्ता है-मेरा वत्स कब मुक्ति का सम्राट बनें! मैं कब राजमाता बन जाऊँ! हर पल, हर क्षण वह अपने बेटे की सुरक्षा में अपना सर्वस्व अर्पित करती है। कहीं मेरा लाल कोई पाप न कर डाले । मन से, वचन से, काया से....आहा! सर्वकरण, सर्वयोग- सर्वत्र उपयोग, सर्वत्र सुरक्षा!

माँ धन्य है तेरे को! यदि तू न रहती तो न जाने मेरा क्या होता? कौन मेरी रक्षा करता? कौन मुझे जिनवाणी का दुग्ध पान कराता? माँ! माँ! मैं ने तेरे वात्सल्य को नहीं समझा है। वत्स हूँ तेरा, पर निर्लज्ज हूँ! मैंने तुझे कद से नापा, रूप से देखा पर.....पर तेरा वात्सल्य नहीं समझा! माफ कर दे-माफ तो माँ ही करती है। माँ! मुक्ति दे दे। तेरे उपकारों को तेरा वत्स नहीं भूल सकता। अब तेरी पाँच इन्द्रियाँ रूप पाँचों महाव्रतों को मुझ में एक रूप कर दे, तेरी चार आजान बाहु और वात्सल्यमयी गर्दन रुप पाँचों समितियों से मुझे आलिंगन दे दे। माँ-तेरे चरण द्वय और सम्पूर्ण मातृ स्वरूप तीनों योगों में मैं नतमस्तक हूँ! मेरी रक्षा कर माँ। मुझे मुक्ति का दान दे। तेरा वत्स अब तेरा विश्वास घात नहीं करेगा।

मेरे अध्यात्म-जीवन के विकास में तेरी गरिमा अत्यन्त अलौकिक है। सम्पूर्ण द्वादशांगी तुझ में ही समाविष्ट है।[1] माँ! तु जगदम्बा है और जिनभगवन् जगत पितामह[2] है। संयम के तथ्यों की वास्तविक अनुभूति पाकर माँ! मैं धन्य हो गया।

''माँ'' की सार्थक संज्ञा का विशद और विलक्षण रूप है-पाँच समिति रुप पंचांग और तीन गुप्ति रूप रूपत्रय। इसका पालन ही माँ का अनुपम दर्शन और आत्मावलोकन है, इससे ही संयम की सफलता पाना है। उससे प्रकटते झलकते तथ्यों का पालन करने वाला पावन हो जाता है।

अष्टप्रवचन माता का निखरता अनुपम रुप इस प्रकार है-

पाँच समिति :

१- **ईर्या समिति** – ज्ञान-दर्शन-चारित्र की प्राप्ति या वृद्धि के लिए उपयुक्त अवसर में युग परिमाण भूमि [चार हाथ प्रमाण] को एकाग्र चित्त से देखते हुए प्रशस्त पथ में यतनापूर्वक गमनागमन करना ईर्या समिति है।

वस्तुतः श्रमण धर्म गुप्ति प्रधान धर्म है। उत्सर्ग मार्ग में काया का गोपन संवर प्रधान माना है, प्रथम ईर्यासमिति कामगुप्ति का अपवाद है।

प्रश्न होता है कि कायगुप्ति में काया का गोपान होता है तो फिर साधु को चलने की क्या आवश्यकता?

इस प्रश्न का समाधान करते हुए पूज्यपाद तिलोक ऋषि जी म. सा. ने ईर्या के महत्त्वपूर्ण चार कारण प्रस्तुत किये हैं।[३]

(१) गुरुवंदन (२) विहार (३) आहार (४) निहार

चलने की क्रिया जब शास्त्र विधनायुक्त होती है तब उसे ईर्या कहते है।निम्नलिखित आगमोक्त निर्देशों के अनुसार चलने वाले श्रमण का चलना ही निर्दोष चलना माना गया है-

१- श्रमण को चलते समय असम्भ्रान्त रहना चाहिए, क्योंकि भ्रान्त अवस्था में चित्त अशान्त रहता है अत: चलते समय जीव रक्षा नहीं कर सकता।

२- श्रमण को अमूर्छित- आसक्ति त्यागकर चलना चाहिए, क्योंकि आसक्त व्यक्ति का मन किसी अभिलषित वस्तु में लगा रहता है, अत: वह जीव रक्षा में उपयोग नहीं लगा सकता!

३- श्रमण को मन्द गति से चलना चाहिए, क्योंकि शीघ्र गति से चलने वाला जीवरक्षा करता हुआ नहीं चल सकता।

४- श्रमण को चलते समय 'अनुद्विग्न' प्रशान्त रहना चाहिए, क्योंकि— उद्विग्न अवस्था में व्यक्ति भयभीत रहता है अत: वह विवेकपूर्वक नहीं चल सकता

५- श्रमण को 'अव्याक्षिप्तचित्त' से चलना चाहिए, क्योंकि —विक्षिप्त चित्त, चंचल चित्त वाला व्यक्ति मार्ग पर दृष्टि रखकर नहीं चल सकता।[४]

६- श्रमण को दौडते हुए नहीं चलना चाहिए, क्योकि दौडने वाला जीवोंको बचाता हुआ नहीं चल सकता।

श्रमण धीर और साहसी होता है अत: उसका दौडना व्यावहारिक दृष्टिसे भी अच्छा नही, माना जाता, क्योंकि अधीर या भयभीत व्यक्ति ही प्राय: दौडते है।

७- श्रमण को चलते समय बातें नहीं करनी चाहए, क्योंकि जब मन बातचीत करने में लगा रहता है तब वह जीव रक्षा करने में दत्तचित्त नहीं हो सकता।

८- श्रमण को चलते समय हंसना भी नहीं चाहिए, क्योंकि हंसते हुए मार्ग पर दृष्टि रखकर नहीं चल-सकता। इसी प्रकार गाते हुए खाते हुए या ऐसी ही कोई अन्य क्रिया करते हुए नहीं चलना चाहिए।[५]

९- श्रमण का गवाक्ष, गली, स्नानगृह आदि पर दृष्टी डालते हुए नही चलना चाहिए, क्योंकि गवाक्ष आदि की ओर देखते हुए चलने वाला रास्ते के जीव-जन्तुओं को नहीं देख सकता। गवाक्ष आदि की ओर देखते हुए चलने से श्रमण की साधुता के सम्बन्ध में शंका उत्पन्न होती है। अत: श्रमण को मार्ग पर दृष्टि रखते हुए ही चलना चाहिए।[६]

१०- श्रमण को क्रुद्ध होकर नहीं चलना चाहिए, क्योकि क्रुद्ध मानव का मन अशान्त होता है, अत: वह विवेकपूर्वक नहीं चल सकता।[७]

११-श्रमण चलते समय अपने हाथी-श्रमणादि को पहाड़ पर, समभूभाग पर या सरोवर आदि के किनारे पर चरते हुए पशु तथा पक्षी आदि की ओर अंगुली निर्देश करके या हाथ लम्बा करके न दिखावे। ऐसा करने से पशु-पक्षी भयभीत होते हैं।

१२- श्रमण चलते समय अपने साथी- श्रमणादि को पहाड़ पर बने किले आदि की ओर

संकेत करके न दिखावे, ऐसा करने से किले आदि के रक्षकों को श्रमण के प्रति गुप्तचर होने की आशंका होती है।

१३- श्रमण को मनोहर शब्द सुनते हुए नहीं चलना चाहिए।

१४- श्रमण को मनोहर रुप देखते हुए नहीं चलना चाहिए।

१५- श्रमण को चलते समय सुगन्ध या दुर्गन्ध के सम्बन्ध में राग-द्वेष भरे संकल्प रखकर नहीं चलना चाहिए।

१६- श्रमण को मनहर रसास्वादन करते हुए नहीं चलना चाहिए।

१७- श्रमण को सुखद स्पर्श का संवेदन करते हुए नहीं चलना चाहिए।

इस प्रकार प्रथम ईर्या समिति साधक आत्मा के लिए परम विशुद्धि का कारण है परन्तु ईर्या की विशुद्धि के भी चार महत्वपूर्ण कारण आगम में निर्दिष्ट है-

१-आलम्बन २- काल ३- मार्ग और ४-यतना।

आलम्बन - यहां आलम्बन का अर्थ सहारा, उद्देश्य और लक्ष्य है साधक-जीवन में जितनी आवश्यक क्रियाएँ है उनका प्रधान लक्ष्य रत्नत्रय की उपलब्धि है अत: ईर्या समिति के आलम्बन ज्ञान-दर्शन- चारित्र है।

२- **काल**— ईर्या समिति के काल केसम्बध में दो विभाग है—दिन और रात। ईर्या समिति का पालन दिन में हो सकता है, रात्रि में नहीं। अत: साधक श्रमण-श्रमणियों को रात्रि में नहीं चलना चाहिए।

आगम के अनुसार वर्षाकाल के चार मास है—श्रावण, भाद्रपद, अश्विन और कार्तिक किन्तु अगमोक्त पांच कारण उपस्थित होने पर आत्मरक्षा के लिए वर्षावास क्षेत्र को छोड़कर अन्यत्र जा सकते हैं। यथा—

१- अराजकता फैलने पर या सुरक्षा व्यवस्था समीचीन न होने पर।

२- दुष्काल होने पर या भिक्षा दुर्लभ होने पर।

३- किसी के व्यथा पहुँचाने पर।

४- बाढ़ आने पर।

५- अनार्यों का उपद्रव होने पर।

३- **मार्ग**- मार्ग दो प्रकार के है— द्रव्यमार्ग और भावमार्ग। स्थलमार्ग जलमार्ग और नभमार्ग में चलना द्रव्यमार्ग है और अपनी चित्तवृत्ति में लगे हुए संस्कारों में प्रवृत्त रहना-चलना-विचरना ईर्या में भावमार्ग है।

यतना- यतना का अर्थ है-प्रत्येक क्रिया को विवेकपूर्वक करना। यतना के चार प्रकार हैं-

१- द्रव्ययतना २- क्षेत्रयतना

३- कालयतना ४- भाव यतना

१- द्रव्ययतना-दिन में आँखो से देखकर चलना। रात्रि में रजोहरण से प्रमार्जन करके चलना।

२- क्षेत्रयतना-चार हाथ प्रमाण क्षेत्रों को देखते हुए चलना।

३- कालयतना-जितने समय तक चलना उतने समय तक विवेकपूर्वक चलना।

४- भावयतना–सदा उपयोग पूर्वक चलना। भावयतना से श्रमण के संयम की रक्षा होती है। संयम की रक्षा का अर्थ है–स्वयं श्रमण की रक्षा और अन्य प्राणियों की रक्षा। श्रमण के भाव, विचार-संयम से विचलित न हों, यही भावायतना है।

२- **भाषा समिति**–मार्ग में चलते हुए मुनि मौन रहे। अत्यावश्यक होने पर जो मर्यादा पूर्वक बोला जाता है वह भाषा समिति है। इस कारण दूसरी समिति का नाम भाषा समिति कहा जाता है। वचन गुप्ति उत्सर्ग है पर भाषा समिति उसका अपवाद है। मुनि मौनधारी, गुण-ज्ञान का संग्रह करने वाले, कुलीन और आत्मध्यान में लीन गुप्तिवान और उत्सर्ग युक्त होते हैं। इन सर्व दृष्टियों से वचन योग आश्रव स्वरूप है फिर भी पर के कारण, आत्महित के उपदेश हेतु अनुपम उपदेश निर्जरा का कारण बन जाता है। इसी कारण उत्सर्ग रूप वचन गुप्ति का भाषा समिति अपवाद है।

अकारण साधु बोलता नहीं अत: बोलने के कारण पर विशेष स्वरूपी भाषा का प्रयोग स्पष्ट करने हेतु इस समिति में भाषा के प्रकारों द्वारा उसका स्वरुप बताया है। भाषा के विविध प्रकार-स्वरूपों का वर्णन करते हुए सोलह, दस और चार प्रकार की भाषाएँ बताई हैं।

[१]–साधु द्वारा नहीं बोली जाने वाली १६ प्रकार की भाषाएँ निम्न है-

१- कर्कश २- कठोर ३- छेदक ४-भेदक
५- पीड़ाकारी ६-हिंसाकारी ७सावद्य ८-मिश्र
९- क्रोधकारी १०-मानकारी ११-मायाकारी १२-लोभकारी
१३- रागकारी १४-द्वेषकारी १५-विकथा १६-मुहकथा

[२]- भाषा के दस दोष टालकर साधु को बोलना चाहिए-

१-कुबोल दोष २ सहसाकार दोष
३-असदारोपण दोष ४-निरपेक्ष दोष
५-संक्षेप दोष ६-क्लेश दोष
७-विकथा दोष ८-हास्य दोष
९-अशुद्ध दोष १०-मुणमुण दोष

[३]- भाषा के चार प्रकार इस प्रकार हैं–

१-सत्यभाषा २-असत्यभाषा
३-संत्यासत्यभाषा ४-असत्याऽमृषा [व्यवहार भाषा]

इनमें २ और ३ नम्बर स्पष्टत: साधु के लिए निषिद्ध हैं। एक और चार नम्बर की भाषा के प्रयोग का निषेध भी है और विधान भी है।

३- **एषणा समिति**–जिसने ईर्या समिति के गुणगान किए हैं और जो भाषा का भेद स्वरूप जानता है, उसे यह समझना आसान है कि वेदनीय कर्म के उदय से जीव को भूख की संज्ञा या संवेदना जगती है। इस वेदनीय कर्म के उपशमन हेतु साधु को एषणा समिति का स्वरूप भेट जानना चाहिए। एषणा समिति अनशन तप उत्सर्ग का अपवाद है।

निज गुण को ग्रहण करने वाले आत्मा का अपना चैतन्य स्वरूप निश्चय से गत्यांतर में अनाहारी है,फिर भी काया योग से युक्त होने से उसे व्यवहार से आहार के पुद्गल ग्रहण करने पड़ते

हैं। जड़ काया के साथ चैतन्य का यह कैसा नेह-प्रिति है। "इस आत्मा ने देह से प्रिति कर अनन्त पदगल स्कन्ध ग्रहण किये फिर भी उसे तृप्ति क्यों नहीं होती?" ऐसा सोचकर गुणीजन संत आत्मा को वश में कर पुद्गल स्कन्ध को ग्रहण नहीं करते हैं। परन्तु काया को रखने में अशनादि-आहारादि ही कारण सम्बन्ध रुप है। आत्मत्त्व अनन्त शुद्ध स्वरुप होने पर भी वह ज्ञान के बिना जाना नही जा सकता और आत्मा के उस ज्ञान स्वरुप को प्रकट करने में सुत्रों का स्वाध्याय ही परम उपाय रुप है और यह उपाय देह के बिना नहीं होता, अत: देह से ही काम लेना है यह सोचकर गुणवान आत्मा काया को आहार देकर उसकी सुरक्षा करते हैं[१०]।

निरुपाय ऐसे मुनि को आहार लेना ही पड़ता है लेकिन उसकी भी विशेष विधि है—

साधु आहार तो करे लेकिन वह आहार ४७ दोष से रहित होना चाहिए और भ्रमर जैसे पुष्प को बिना किलामना उपजाए एक-एक फूल पर से रस पीता है वैसे साधु भ्रमरवत भिक्षा ग्रहण करे और गृहीत भिक्षा भी रुक्ष होनी चाहिए। रुक्ष आहार भी स्वाद लिए बिना और मुर्च्छा भाव से रहित ग्रहण करे। इतना ही नहीं, कभी भिक्षा में आहार शीघ्र मिल जावे तो हर्ष न करे और न मिले तो शोक भी न करे।

'आचारांग' सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कंध में इसे पिंडेषणा कहा है। इसी प्रकार यहां पाणेषणा, शय्येषणा. वस्त्रेषणा, संस्तारक एषणा, पायपुं छण एषणा, रजोहरण एषणा आदि एषणा के विविध प्रकार बताये है।

४- आदान भांड मात्र निक्षेपणा समिति—ईर्या समिति, भाषा समिति और एषणा समिति का समाधिपूर्वक पालन करने वाले गुणवान साधु को अन्य समितियों का पालन करने हेतु उपधि आदि की आवश्यकता रहेगी, क्योंकि बिना उपधि आहारादि किसमें ग्रहण किया जाय। इसी कारण ज्ञानी महापुरुषों ने भव्य जीवों को निर्वाण सुख प्राप्ति के परम उपाय स्वरुप आदान भांड मात्र निक्षेपणा समिति का भावपूर्वक कथन किया है।

पांच संवर की भावना युक्त मुनि प्रमाद का त्याग कर सर्व परिग्रह से मुक्त हो एकान्त मोक्ष मार्ग की आराधना में संलग्न रहता है अत: वह पर- भाव से मुक्त होता है तो उसे किसी प्रकार के उपकरण की क्या आवश्यकता है? उसे तो देह की ममता का त्याग कर [ज्ञान दर्शन-चरित्र] तीन रत्नों की सान्निधि की सुरक्षा करनी होती है। यह जो कथन है वह उत्सर्ग स्वरुप है। अब जो अपवाद मार्ग का निवारण प्रस्तुत किया जा रहा है वह उपधि के उपयोग का स्वरुप होने पर भी विकथा प्रमादों आदि के निवारण रुप है।

साधु के प्रत्येक उपकरण के पीछे महत्वपूर्ण कारण रहे हुए है। प्रत्येक का विधान अपने रहस्य के साथ प्रस्तुत है। जिनवर ने उपदेश प्रदान करते हुए इन सर्व रहस्यों को प्रधानता दी है—

१- रजोहरण—अहिंसा पालन हेतु, याने हिंसा का निरोध करने हेतु।

२- पात्र— आहार ग्रहण हेतु।

३- मुंहपत्ति—अहिंसा पालन हेतु याने वायुकाय रुप जीवों की हिंसा प्रतिषेध हेतु।

४- वस्त्र—नग्न साधु को देखकर जगत के स्त्री-पुरुष साधु की दुगंछा करते है।

अत: वस्त्र परिधान संयम-सुरक्षा में सहायक बन सकता है।

इस प्रकार पुद्गल को ग्रहण करना और छोड़ देना ऐसा जिनवर प्रदत्त अपवाद मार्ग बहुत श्रेष्ठ है क्योंकि पुद्गलों का ग्रहण करना सहज है। ग्रहण करते समय ममत्व-त्याग और यतना मे विवेक तथा निरुपयोगिता के समय सर्वथा त्याग यही इस व्यवहार समिति की विशेषता है।

साधु का निश्चल ध्येय कर्म से मुक्ति पाना है और उस हेतु उसे सर्व उपधियों का त्याग कर मुक्ति से प्रीति बांधकर सर्व आचारों को जीतकर अणगार बनना है। अत: संयमी-आत्मा को उपधि के प्रति ममत्व का त्याग कर श्रेणी पर आरुढ़ हो तत्व ज्ञान के परम रस में निमग्न होना चाहिए।

५- **परिष्ठापनिका समिति**— साधु अन्तर बाह्य कोई भी उपधि कौं ग्रहण करेगा, अन्त में वह त्याज्य ही है अत: वीतराग ने मुक्ति के भाव प्रधान मंगलधाम की प्राप्ति के उपायों मे समिति प्रकरण में पॉचवी परिष्ठापनिका समिति का उपदेश दिया है। पुज्यपाद तिलोक ऋषि जी म.सा. ने इस समिति का नाम अभयव्रत भी दिया है।[११]

साधु को देह से ममत्व नहीं बढ़ाना चाहिए, क्योंकि देह से ममता बढ़ाने से चारों कषाय हमें प्रिय हो जाते है। कषायों के प्रिय हो जाने पर देह का ममत्व और स्नेह बढ़ता है और चंचलता भी बढ़ती है। अत: उत्सर्ग मार्ग पर चलने वाले ज्ञानादि हेतु काया का पोषण करते है। काया जहां है, वहां मल अवश्य है। आत्मा निर्मल है शरीर तो मलयुक्त है। अत: काया-पोषण के साथ इस उत्सर्ग की प्रकिया भी यदि यतनापूर्वक की जाय तो साधक केवलज्ञान की स्थिति प्राप्त कर सकता है। निष्कर्ष में यतना ही कैवल्य की दायिनी है।

कल्पों से रहित जिनकल्पी ऋषि, मुनि वस्त्र,पात्र, आहार, शिक्षा आदि को कर्म-वर्धक और संयम-बाधक द्रव्य मानकर उन्हे भी दूर परठा देते हैं, मन के भीतर उत्पन्न कषाय रूप मैल का विसर्जन कर वे किसी भी प्रकार ;की उपधि से युक्त नहीं होते हैं।

- अपवादमार्गी स्थविरकल्पी मुनि अपवाद मार्ग पर चलते हुए भी किस प्रकार मोक्ष ध्येय को पूर्ण कर सकते है, यह इस समिति में समझाया गया है।

स्थविरकल्पी साधु द्रव्य से दिन में परिष्ठापनिका भूमि मंडल को देखकर और रात को उसी दर्शित भूमि पर प्रस्त्रवणादि परठाते हैं परन्तु भाव से तो राग-द्वेष रुप भाव मल का त्याग करते हैं।

परिष्ठापना हेतु 'उत्तराध्यन सूत्र' में दस लक्षण युक्त निम्न दस विधान बाताये है—

१. जहां कोई आता नहीं और देखता भी नहीं।
२. जहां पर परठने योग्य पदार्थ से किसी व्यक्ति को आघात न पहुँचे।
३. परठने की भूमि सम हो।
४. पोलार रहित अर्थात तृणादि से अच्छादित व दरारों से युक्त न हो।
५. कुछ समय पहले ही अचित हुई हो।
६. विस्तीर्ण हो (कम से कम एक हाथ लम्बी-चौड़ी)।
७. बहुत गहराई (कमसे कम चार अंगुल नीचे) तक अचित्त हो।

८ ग्रामादि से कुछ दूर हो।

९. मूषक, चींटियाँ आदि के बिलों से रहित हो।

१०. त्रस प्राणियों एवं बीजों से रहित हो।[१२]

तीन गुप्ति :

मनोगुप्ति-समिति श्रेष्ठ है साथ- साथ सरल भी है परन्तु गुप्ति अतीव दुष्कर है। उसके धारण करने वाले मुनि निज गुणों को प्रकट कर निज स्वरुप का ज्ञाता हो अष्टकर्म से रहित सिद्ध अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

मन-वचन- काया रुप तीनों योगों में भी मनोयोग की गति अति तीव्र है। मन को स्थिर करना अति दुष्कर होने से तीन दण्ड में मनोदण्ड को ही बड़ा माना गया है। मन रहित (असंज्ञी) जीव क्रूर कर्म करता भी है तो वह मन रहित होने से प्रथम नरक से आगे (दूसरी, तीसरी आदि में) नहीं जाता है। संज्ञी जीव जिसकी अवगाहना मात्र अंगुल के असंख्यात भाग की हो, (वह देह से क्रूर कर्म न भी कर सकता हो तो भी मन से क्रुर कर्म कर।वह सातवाँ नरक में उपन्न हो सकता हैं(असंज्ञी) मत्स्य की काया सहस्त्र योजन लम्बी चौड़ी हो और क्रोड़ पूर्व स्थिति का उसका आयुष्य हो तो भी वह प्रथम नरक से आगे नहीं जा सकता है। यही मन का गम्भीर रहस्य है। इसी कारण भव्यात्मा मुनि मनगुप्ति की आराधना कर मन की तीव्र गति को वश में करता हैं तो आत्मा (जन्म-मरण रुप) रोग से मुक्त होता हैं।

योग के द्वारा ही पुद्गल सचय होता है और योग के द्वारा ही कर्मो के साथ आत्मा की सदा नवीन संधि होती है।

इन्हीं कारणों को जानकर मुनि! तू निज आत्मगुण में लीन हो शीघ्र निर्विकल्पक स्थिति को प्राप्त कर। सविकल्पक गुण अपवाद मार्ग में साधु का अवश्य है परन्तु उत्सर्ग मार्ग का ज्ञाता हो जाने पर निर्विकल्पक मुनि को क्षण बाद भी अपवाद के प्रति अंश मात्र भी रुचि नहीं होती। शुक्लध्यान के आलंबन को धार कर वह मुनि ध्यानलीन हो आत्म स्वरुप दर्शन में स्थिर हो जाता है।

२. वचन गुप्ति-आगम के अनुसार मनोयोग की अपेक्षा वचन योग की अधिकता बताई गयी है। पन्नवणा[१३] सूत्र में दो सौ उनचालीस (२३९) वें बोल में वचन योग के स्वरूप में कहा है कि भाषा का संठाण वज्र जैसा है।[१४]त्रस प्राणी द्वारा बोली जाने वाली इस भाषा को ग्रहण करते समय शास्त्रोक्त आठ-कर्कश,मृदु,गुरू,लघु,शीत,उष्ण,स्निग्ध और रूक्ष स्पर्श में से चार विरुध्द स्पर्शो को जीव फरसता है[१५]और प्रगट करते समय आठों को फरसता है।

भाषा या ऋध्दियुक्त वचन ये नामकर्म के प्रभाव से ही हैं। ऐसे वचन-योग का गोपन वचन गुप्ति है।

भाषा वर्गणा के पुद्गलों के ग्रहण निसर्ग की[१६]उपधि जो आत्मवीर्य को प्रेरित करती है,आत्मा उसे क्यों ग्रहण करती है,इसके उत्तर में कहा है-यह करने का कारण भी आत्मा को शुध्द करना ही है।इस शुध्दि के साधन १२ प्रकार के तप हैं।इन साधनों के द्वारा काया का गोपन कर आत्मा कर्मो के घातिक वर्ग से मुक्त हो सकता है।

वचन गुप्ति का प्रारम्भ कौन-से गुण-स्थानक से होता है और कौन-से गुणस्थानक तक वह

रहती है, इत्यादि समाधान हेतु कहा है—

वचन गुप्ति का उदय सम्यक्त्व (चौथे) गुणस्थानक से होता है और वह अयोगी (१४वें) गुणस्थान तक उपादान रूप स्थिर रहता है। अत: जिन मुनियों के मन में चित्तशुद्धि पूर्वक गुप्ति में रूचि रमणता आती है उनके मन में समिति प्रपंच रूप और गुप्ति निश्चय सम्यक्त्व रूप प्रतीत होती है।

३. **कायगुप्ति**—योगों में काया योग तीसरा योग है। इसका कंपन स्वभाव है, इसे स्थिर करना अत्यन्त दुष्कर है। जिस प्रकार जब जोर से पवन चलता हो उस समय नाव को स्थिर करना मुश्किल है, वैसे ही कंपन स्वभाव के कारण काया को स्थिर करना दुष्कर है।

कंपन के प्रकारों के बारे में गौतमस्वामी और भगवान महावीर का प्रस्तुत संवाद द्रष्टव्य है—

गौतम—भन्ते! एजना कंपने कितने प्रकार की कही गयी है?

इसके उत्तर में प्रभु कहते हैं—है गौतम! एजना पाँच प्रकार की कही गई है। योग द्वारा आत्म-प्रदेशों का कंपन होना या पुद्गल द्रव्यों का चलना इसका नाम एजना है। इस प्रकार एजना कंपनादि रूप होती है। कंपनादि रूप यह एजना द्रव्यादि के भेद से पाँच प्रकार की है।

जैसे—द्रव्यएजना—द्रव्यों की एजना नरकादि जीव संपृक्त पुद्गल द्रव्यों का —शरीरों का कंपन।

क्षेत्रेजना—नरकादि क्षेत्रों में वर्तमान जीवों की अथवा जीव संपृक्त पुद्गल द्रव्यों की जो एजना कपंन है वह क्षेत्र एजना है।

कालेजना—नरकादि काल में वर्तमान जीवों की अथवा जीव संपृक्त पुद्गल द्रव्यों की जो एजना है वह कालएजना - भावेजना नरकादि भव में वर्तमान जीवों को अथवा जीव द्रव्य संपृक्त पुद्गलों की जो एजना है वह भावेजना है।[१७]

मोक्ष प्राप्ति तक काया तो रहती ही है फिर यह कंपन कहाँ तक रहता है? इस प्रश्न का समाधान करते हुए कहा है—

- १४ वे गुणस्थानक में शैलशा अवस्था का प्रारम्भ हो जाता है। 'भगवती-सुत्र' में गौतम स्वामी के यह पूछने पर कि क्या शैलेशी अवस्था प्राप्त होने पर भी कंपन होता है?

परमात्मा ने कहा—"नोइणट्ठे, समट्ठे, नऽन्नत्थेणं परप्पयोगेणं"।[१८]

पूर्व कर्मक्षय हेतु आत्मा प्रयास करता रहे पर जीवात्मा यदि नवीन कर्मो का बंधन करता ही रहे तो फिर मोक्ष कब हो सकता है? इस प्रश्न के उत्तर में कहा है—

यदि देह को ही स्थिर कर दिया जाय तो नवीन कर्म बन्धन का कारण ही नहीं बनता, क्योंकि काया के स्थिर करने पर भाषा अपने आप स्थिर होती है और विषयों के रस-भोग अपने आप समाप्त जाते है। मन का योग भी न रहने से क्रिया के साथ कर्म भी रुक जाते है।

प्रस्तुत विवरण के बाद आत्मा ने यह स्वीकार तो किया कि काया को गुपित करना अत्यावश्यक है यह श्रेष्ठ भी है, मोक्ष का कारण है परन्तु यह गुप्ति की कैसे जाय ?

अष्टप्रवचनमाता अपने वत्स की सुरक्षा के लिए समाधान देती है-

जीव का स्वरूप चैतन्य निराकार स्वरूप है, उसका स्वभाव सदा उपयोगी है। यह देह जड़

पुद्गल के द्वारा कर्म ग्रहण करता है।अत: यह निश्चय से ध्यान रखना कि इसे छोड़े बिना तुझे सुख की प्राप्ति नहीं होगी।इसके लिए तुझे तप के बारह प्रकारों को जानकर,संयम को १७ प्रकार से समझकर,दस प्रकार के मुनिधर्म का आलम्बन लेकर उसका मन-वचन-काया से पालन कर, २२ परिषह पर विजय प्राप्त करनी होगी।मुक्ति-प्राप्ति का यही एक उपाय है,ऐसा समझकर हे भव्यात्मा !मन-वचन-काया को वश में कर समिती के पांच प्रकार स्वरूप इस जघन्य ज्ञान आराधना द्वारा तू शीघ्र ही भव-जल संसार से पार हो जा।

इस प्रकार अष्टप्रवचन माता का आशीर्वाद प्राप्त करने वाला साधक शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त करता है।

संदर्भ सूची

१. दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं —उत्तराध्ययन, अ. २४, गा. ३
२. जगणाहो, जगबंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं —नंदीसूत्र, गा १
३. मुनि चाले चिऊं काणे, गुरु वन्दन अन्य गामेजी।
आहार निहारने कारणे ते जावे अन्य ठामेजी॥
—अष्ट प्रवचन माता-ढाल १, पद-४
—तिलोक काव्य कल्पतरू-भाग ४, पृ. ४४७

४. दशवैकालिक अ. ५, उद्दे. १, गाथा १-२
५. दशवैकालिक, अ. ५, उद्दे. १, गाथा १४
६. दशवैकालिक, अ. ५, उद्दे. १, गाथा १५
७. दशवैकालिक, अ. ८, गाथा २५
८. जे भिक्खू वासावासं पज्जोसवियंसी दूइज्जइ, दूइज्जंयं वा साइज्जइ।
—निशीथ, उद्दे. १०. सू. ६४१

९. क- जो कप्पइ निग्गंथाणं वा, निग्गंथीणं वा पढमपाउसंसि गामाणुगामं दुइज्जित्तए।
ख- पंचहिं ठाणेहिं कप्पइ, तं जहा—१. भयंसी वा, २. दुब्भिक्खंसि वा, ३. पव्वहज्जे वा णं कोइ, ४. दओघंसि वा एज्जमाणंसि, ५. महाय वा अणारिएसु।
—स्थानांग, अ. ५. उद्दे. २, सूत्र ४१२.

१०. अष्टप्रवचनमाता—ढाल ३, पद २-६
११. पंचमी सुमति जाणो काइ तस नाम परठावणी मानो हो।
अभय व्रत वधावो जी, जयणासु परिठावो हो मुनिवर
समिति सदा सुखकारिणी रे..... ॥
तिलोक काव्य कल्पतरू, भाग ४, पृ. ४५७

१२. उत्तराध्ययन, अ. २४, गा. १७-१८
१३. भाषा पद-पद ११ वाँ सूत्र ८५८
१४. पन्नवणा सूत्र-पद ११, सूत्र १५ की वृत्ति
१५. पन्नवणा सूत्र-पद ११, सूत्र ८७७
१६. विज्ञान ने इस बात को प्रायोगिक रूप प्रदान किया है। आज भी आकाशवाणी में प्रथम शब्दों के ग्रहण निसर्ग के समय ग्राफ के रूप में वे तरंगों के रूप में प्रकट होते दिखाई देते हैं। विशेष स्पष्टीकरण हेतु आगम में उनका मोनोग्राफ इस प्रकार है—

ग्र	ग्र	ग्र	ग्र	ग्र	ग्र	ग्र	०
०	नि	नि	नि	नि	नि	नि	नि

देखिये—पन्नवणा सूत्र, पद-११ सूत्र ८७९
१७. भगवती सूत्र, शतक-१७, उद्देशक-३, सु. २-४, पृ. ७८१
१८. भगवती सूत्र, शतक-१७, उद्देशक-३, सु. १, पृ. ७०१

ज्ञान कसौटी (१३)

श्री महेन्द्र जे. संघवी — थाने

(स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले एक कागज पर लिखे, फिर इसी अंक पर पृष्ठ **35 में** दिये गए उत्तरों से मिलाएं। – सम्पादक)

(नोट - सभी प्रश्नों के उत्तर 'प' से शुरू होते हैं।)

१) सोलह सतियों में से दो का नाम ?
२) वह सूत्र जिसमें आचार्य महाराज के छत्तीस गुणों का वर्णन हैं ?
३) पाँच सौ चोरों के मुखिया जिन्होंने चारित्र अंगीकार करके आत्मोत्थान किया ?
४) नवपदजी में आचार्य महाराज का वर्ण ?
५) एक अभ्यंतर तप का नाम ?
६) भगवान महावीर के एक गणधर का नाम ?
७) यह कीचड़ और पानी में उत्पन्न होकर निर्लिप्त रहता हैं ?
८) जैन साधु - साध्वियाँ क्या धारण करते हैं ?
९) हर आत्मा में असंख्याता क्या होते हैं ?
१०) किये हुये आहार को ..... का काम तेजस शरीर करता है।
११) जिसको ज्ञान देना होता है, उसकी ..... देखकर ही ज्ञान दिया जाता है।
१२) पाप से पिछे हटने की क्रिया को ..... कहते हैं।
१३) सुसंस्कारों एवं धार्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिये बच्चों को ..... भेजना चाहिये।
१४) मोक्ष में जाने से पूर्व आत्मा संसार की अनेक योनियों में ..... करती रहती है।
१५) श्रेणिक महाराजा का जीव आनेवाली चौवीसी में ..... तीर्थंकर होगा।
१६) छः द्रव्यों में से एक ?
१७) नमस्कार महामंत्र किस भाषा में है ?
१८) चित्त में गहरे पैठ कर आत्मचिंतन याने .....
१९) स्वाध्याय के कितने सोपान हैं ?
२०) ....., पुद्गल द्रव्य का आत्यान्तिक माप घटक है।
२१) संयम अंगीकार करने के बाद ..... से क्या डरना।
२२) पांच समिती + तीन गुप्ति = अष्ट ..... माता।
२३) सबसे अच्छा मरण
२४) जहाँ महावीर स्वामीजी ने निर्वाण पाया था।
२५) तीर्थंकर का जन्म होने पर इन्द्र उन्हें मेरू पर्वत पर ले जाकर ..... करते हैं।

● मै तो वंदू चरण महावीर ●

जिनका स्वरूप निरखकर मनवा, होवत नहीं अधीर।
जिनके चरण शरण से मिटती जग प्रपंच की पीर॥
हो कुकर्मन की गति स्थिर, मैं तो वन्दू चरण महावीर।
धन्य योगीश्वर धन्य विश्वेश्वर, महिमा जगति ने गायी॥
निर्मोही वीतरागी मुनीश्वर, मुक्ति की युक्ति बताई।
ज्ञानी तपस्वी धीर, मैं तो वंदू चरण महावीर॥

—— श्री सोभाग्यमल सेठीया (रतलाम)

धारावाहिक—

।। 卐 ।। आचाराङ्ग की सूक्तियाँ ।। 卐 ।।

संकलन-श्री पुखराज भण्डारी

(६१) **'कम्मंच पडिलेहाए कम्ममूलं च जं छणं।। १-३-१-१११ ।।'**

● कर्म का भली प्रकार पर्यालोचन करे। कर्म का मूल (मिथ्यात्व आदि) जो क्षण हिंसा है, उसका निरिक्षण करके उसका परित्याग करे।

(६२) **'सम्मतदंशी न करेति पावं।। १-३-२-११२ ।।'**

● **समत्वदर्शी** साधक पाप (हिंसादि आचरण) नहीं करता।

(६३) **'कामेसु गिद्धा णिचयं करेति संसिच्चमाणा पुणरेति गब्भं।। १-३-२-११३ ।।'**

● कामभोगों मे आसक्तजन कर्मों का संचय करते रहते हैं। आसक्तिरूप कर्मों की जड़े बार बार सींची जाने से वे पुनः पुनः जन्म धारण करते है।

(६४) **'अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे।। १-३-२-११५ ।।'**

● हे वीर! तू (इस आतंक-दुःख के) **अग्र** और **मूल** का विवेक कर उसे पहचान।

नोट :— (१) मोहनीय कर्म सब कर्मों का **मूल** है। शेष सात **अग्र** हैं।

(२) मिथ्यात्व **मूल** है, शेष अव्रत, प्रमाद आदि **अग्र** हैं।

(६५) **'एस मरणा पमुच्चति से हु दिट्ठ भये मुणी। लोगंसि परमदंसी विवित्तजीवी उवसंते समिते सहिते सदाजते कालकरंकी परिव्वए।**
बहु च खलु पावं कम्मं पगडं।। १-३-२-११६ ।।'

● वह **निष्कर्मदर्शी** मरण से मुक्त हो जाता है। वह मोक्षपथ का ज्ञाता है।वह **आत्मदर्शी** मुनि लोक में **परममोक्ष** को देखता है। वह विविक्त (रागद्वेष से रहित जीवन जीता है। **उपशान्त** (पाँच समिति युक्त), **समित** (सम्यक्प्रवृत्त), **सहित** (समन्वित) होता है। अतएव सदा **संयत** (अप्रमत्त-यतनाशील) होकर **पंडितमरण** की आकांक्षा रखता हुआ (जीवन के अंतिम क्षण तक) परिव्रजन विचरण करता है।

(६६) **'अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे, से केयणं अरिहइ पूरइत्तए।। १-३-२-११८ ।।'**

● वह असंयमी पुरुष **अनेक (चंचल)-चित्तवाला है।**
वह चलनी को जल से भरना चाहता है।

(६७) **'अणोमदंसी णिसण्णे पावेहिं कम्मेहिं।। १-३-२-११९ ।।'**

● **अनवमदर्शी** (सम्यक्दर्शनचारित्ररूप मोक्षदर्शी साधक) पापकर्मों से विषण्ण-उदासिन रहता है।

(६८) **'कोधादिमाणं हणिया य वीरे, लोभस्स पासे णिरयं महंतं।**
तम्हा हि वीरे विरते वधाते, छिंदिज्ज सोतं

लहुभूयगामी।। १-३-१-१२०।।'

● वीर पुरुष कषाय के आदि अंग क्रोध व मान को नष्ट करे। लोभ को साक्षात् नरक के रूप में देखे। इसलिए **लघुभूत** (मोक्षाभिलाषी) बनने का इच्छुक वीर हिंसा से विरत होकर **स्रोतों** (विषयवासना) को छिन्न-भिन्न कर डाले।

(६९) **'संधि लोगस्स जाणित्ता आय ओ बहिया पास। तम्हाण हंता ण विघातए।। १-३-३-१२२।।'**

● साधक (धर्मानुष्ठान की अपूर्व) **संधिवेला** समझकर प्राणिलोक को दुःख न पहुँचाये। अपनी आत्मा के समान बाह्य-जगत् (दूसरी आत्माओं) को देख! सब आत्माओं को समान समझकर मुनि न जीवों का हनन करे, न घात करवायें।

(७०) **'आगतिं गतिं परिण्णाय दो हिं वि अंतेहि अदिस्समाणेहिं से ण छिज्जति, ण भिज्जति, प डज्झति, ण हम्मति कंचणं सव्वलोए।। १-३-३-१२३।।'**

● समस्त प्राणियों की गति-अगति को जानकर जो दोनों **अंतो** (रागद्वेष) से दूर रहता है, वह समस्त लोक में छेदा नहीं जाता, भेदा नहीं जाता, जलाया नहीं जाता, और मारा नहीं जाता।

(७१) **'का अरति के आणंदे? एत्थंपि अग्गहे चरे।। १-३-३-१२४।।'**

● उस **धूतकम्प** (क्षीणकषाय) योगी के लिए क्या अरति है, और क्या आनंद? इस विषय में (रति-अरति के मध्य) अनाग्रह (अनासक्ति)-पूर्वक विचरण करे।

(७२) **'पुरिसा! तुममेव तुमं मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि? ।। १-३-३-१२५।।'**

● हे पुरुष (आत्मन्)! तू ही तेरा मित्र है। फिर बाहर मित्र कहाँ ढूँढ रहा है?

(७३) **पुरिसा! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ, एवं दुक्खा पमोक्खसि।। १-३-३-१२६।।'**

● हे पुरुष! अपना (आत्मा का) ही निग्रह कर। इसी विधि से तू दुःखों (कर्मों) से मुक्ति प्राप्त कर सकेगा।

(७४) **'पुरिसा! सच्चमेव समभिजाणाही।**
सच्चस्स आणाए से उवट्ठिए मेधावी मारं तरति।। १-३-३-१२७।।'

● हे पुरुष! तू सत्य को भली भाँति समझ! सत्य की आज्ञा (मर्यादा) में रहनेवाला मेधावी **मार** (मृत्यु, संसार) को तर जाता है।

(७५) **'से वंता कोहं च माणं च मायं न लोभं च।। १-३-४-१२८।।'**

● वह (सत्यार्थी साधक) क्रोध, मान, माया, लोभ का (शीघ्र ही) वमन (त्याग) कर देता है।

(७६) **'जे एणं जाणति से सव्वं जाणति, जे सव्वं जाणति से एगं जाणति।। १-३-४-१२९।।'**

● जो एक (आत्मा) को जानता है, वह सबको जानता है। जो सबको जानता है, वह एक (आत्मा) को जानता है।

(७७) **'सव्वतो पमत्तस्स भयं, सव्वतो अप्पमत्तस्सणत्थि भयं।। १-३-४-१२९।।'**

● प्रमत्त को सब ओर से भय है, अप्रमत्त को कहीं से भी भय नहीं होता।

(७८) **'जे एगं णामे से बहु णामे, जे बहु णामें से एगं णामे।। १-३-४-१२९।।'**

● जो एक (मोह) को झुकाता है, वह बहुतों को (कर्मों को) झुकाता है। जो बहुतों को झुकाता है, वह एक (मोह) को झुकाता है।

(७९) **'दुक्खं लोगस्स जाणित्ता वंता लोगस्स जंति वीरा महाजाणं।। १-३-४-१२९।।'**

● साधक लोक (प्राणिसमूह) के दुःख को जानकर (उसके हेतु कषाय त्याग करे)। वीर साधक लोक के संयोग (ममत्व-संबंध) का परित्याग कर **महायान** (मोक्षपथ) को प्राप्त करते हैं।

(८०) **'परेण परं जंति, णावकखंति जीवितं।। १-३-४-१२९।।'**

● वे उत्तरोत्तर आगे बढ़ते जाते हैं। उन्हें फिर (असंयमी) जीवन की आकांक्षा नहीं रहती।

(८१) **'सड्ढी आणाए मेधावी।। १-३-४-१२९।।'**

● (वीतराग की) आज्ञा में श्रद्धा रखने वाला मेधावी होता है।

(८२) **'लोगं च आणाए अभिसेमेच्चा अकुतोभयं।। १-३-४-१२९।।'**

● साधक जिनाज्ञा से लोक (कषायरूप लोक) को जानकर, (विषयों का) त्याग कर देता है, वह **अकुतोभय** (पूर्णरूपेण अभय) हो जाता है।

(८३) **'अत्थि सत्थं परेणपरं, णत्थि असत्यं परेण परं।। १-३-४-१२९।।'**

● शस्त्र (असंयम) एक से एक बढ़कर तीक्ष्ण से तीक्ष्णतर होता है, परन्तु अशस्त्र (संयम) एक से एक बढ़कर नहीं होता।

(८४) **'से मेहावी अभिणिवट्टेजा कोहं च माणं च मायं च लोभं च पेज्जं च दोसं च मोहं च गब्भं च मारं च णरगंच तिरियं च दुक्खंच। एयं पास गस्स दंसणं उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स-आयाणं निसिद्धा सगडब्भि।। १-३-४-१३०।।'**

● क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रेम, द्वेष, मोह, गर्भ, जन्म, नरक, तिर्यंच और दुःख उत्तरोत्तर अनुवर्ती है। अतः मेधावी इन सबको लौटा (दूर भगा) दे। यह समस्त कर्मों का अन्त करनेवाला हिंसा-असंयम से उपरत एवं **निरावरण-वृष्टा** (पश्यक) का **दर्शन** (आगमोक्त उपदेश) है। जो पुरुष कर्म के आदान कारण को रोकता है, विषय-कषाय को रोकता है, वही स्वकृत कर्म का भेदन (संवर-निर्जरा) कर पाता है।

(८५) **'किमत्थि उवधि पासगस्स ण विज्जति? णत्थि-त्ति वे मि।। १-३-४-१३१।।'**

● क्या **सर्ववृष्टा** की कोई उपाधि होती है, या नहीं होती? नहीं होती-ऐसा मैं कहता हूँ।

(८६) **'सव्वे पाणा सव्वे भूता सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा, ण अज्ज वेत्तव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परितावेयव्वा, ण उद्देयव्वा।। १-४-१-१३२।।'**

● त्रिकाल में अर्हन्त भगवान् ऐसा प्ररूपण करते हैं—समस्त प्राणियों, सर्वभूतों, सभी जीवों और सभी सत्वों का (शस्त्र आदि से) हनन न करना चाहिए बलात् उनको शासित नहीं करना चाहिए, दास नहीं बनाना चाहिए, न उन्हें परिताप देना चाहिए, और न उनके प्राणों का विनाश करना चाहिए।

सर्व दृष्टिकोणों से देखो, तब दिखता है सत्य महान्।
जन मन का सब भेद मिटाने, अनेकान्त का तत्व महान।।

क्या आप जानते हैं कि – – – –

- जब सारी दुनिया में हिंसा की प्रवृत्तियाँ घट रही है और लोग हिंसा के दुष्परिणामों से परेशान होकर शान्ति की तलाश में भटक रहे हैं, ऐसे समय में महावीर, बुद्ध और गाँधी के देश भारत में हिंसा का भीषण तांडव दिनोंदिन तेजी से बढ़ता जा रहा है।

- आजादी से पहले देश में २८० कत्लखाने थे जो आज २८०० से भी अधिक हो गये हैं। हैदराबाद में ३०० एकड़ जमीन पर एक बड़ा कत्लखाना आकार ले रहा है। इसमें सिर्फ निर्यात के लिए पशु काटे जाएंगे। अमेरिकी कम्पनी के सहयोग से केरल में एक २२ हजार करोड़ रूपए का कत्लखाना प्रस्तावित है। यदि हमने अभी से इसका विरोध न किया तो सरकार चुपचाप इसे भी मन्जुरी दे डालेगी। यहाँ तक कि चन्द स्वार्थी तत्त्व इस घृणित कार्य को उद्योग का दर्जा दिलाने में जुटे हैं। अज्ञानता के कारण सरकार मुर्गी पालन को उद्योग मान बैठी है और डेयरी उद्योग को दी जाने वाली ३० प्रतिशत की आर्थिक सहायता (सबसिडी) बन्द करके मुर्गी पालन को यह छूट दी जा रही है। सौंदर्य–प्रसाधन, दवा आदि के लिए भी क्रूरतापूर्वक पशु–पक्षियों का अन्धाधुन्ध वध किया जा रहा है।

- मांस निर्यात के समय भी हमें यह कुतर्क दिया जाता है कि आयात के सामने निर्यात को सन्तुलित करने के लिए हमें जो कुछ भी मिलता है, हम उसका निर्यात करते हैं। जरा सोचिए तो सही कि दूसरे देश अपना पशुधन क्यों नहीं नष्ट करते? क्योंकि वे अपने देश का आर्थिक आधार नहीं तोड़ना चाहते और वहाँ के पर्यावरण को संतुलित बनाए रखना चाहते हैं।

- वस्तुतः आज मांस निर्यात द्वारा प्राप्त चन्द डालरों का लाभ कितना बड़ा घाटे का सौदा है यह बात उस समय समझ में आएगी जब दूध ५० रूपए लीटर हो जाएगा और घी सिर्फ म्युजियम में दिखेगा। पेट्रोल के भण्डार समाप्त हो जाने के बाद पेट्रोल, पेट्रोलियम गैस (ईंधन) और खाद के आयात में ही हमारा खजाना खाली होता जाएगा।

- यदि हमारा पशुधन सुरक्षित रहा तो खाद, गोबर गैस का अक्षय उर्जा भण्डार तथा अधिक संख्या में पशु होंगे तो उनकी प्राकृतिक मृत्यु के पश्चात् चमड़ा, सींग आदि का भारी भण्डार घरेलू उपयोग तथा निर्यात के लिए उपलब्ध होता रहेगा।

- पशुधन की रक्षा का सबसे सुगम मार्ग शाकाहार है। मानव स्वास्थ्य की दृष्टि से भी शाकाहार सर्वश्रेष्ठ है। जब लोग मांसाहार करेंगे ही नहीं तो कत्लखाने किसके लिए चलाए जाएंगे? सच तो यह है कि अहिंसा और शाकाहार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

- शाकाहार से बढेंगी सात्विक वृत्तियाँ और तामसी प्रवृत्तियों में कमी होगी। फलतः दुनिया में अपराध अपने आप घटने लगेंगे। जो काम सेना, कानून और पुलिस नहीं कर पाई उसे शाकाहार के प्रचार–प्रसार से साधा जा सकता है।

- रासायनिक खाद से धरती की उर्वरक शक्ति घटती है और क्रमशः कम व घटिया फसल पैदा होती है। रासायनिक कीटनाशक से फसलें भी जहरीली हो जाती हैं और पेड़, पौधों को भी हानि पहुँचती है। जबकि गोबर की खाद सर्वोत्तम होती है तथा गोमूत्र एक श्रेष्ठ कीटनाशक है। हाल ही में शोध से जो तथ्य प्रकाश में आए हैं उनके अनुसार इस तरह का अनाज आदि खाने से पशु–पक्षी तक मर रहे हैं और मानव जाति में फैल रही है; तरह–तरह की बीमारियाँ।

- दूध ना दे सकनेवाली गाय और भैंस से भी प्रतिवर्ष ३५०० कि. ग्रा. गोबर और ३००० लीटर मूत्र मिलता है। इससे ३००० सी. एफ. टी. बायोगेस, ८० टन खाद तथा २००० लीटर कीटनाशक बनता है। इसके अलावा इनकी प्राकृतिक मृत्यु से चमड़ा, सींग, खुर, बाल आदि अनेक चीजें मिलेगी।

- ''इस जेट युग में लोग विगत के प्रतीकों के रूप में बैलगाड़ियों का उल्लेख करते हैं किन्तु भारत में हमारे सभी बिजलीघरों, जिनकी अधिकतम क्षमता २२००० मेगावाट हैं, से अधिक शक्ति पशु प्रदान करते हैं। यदि उनको हटा दिया जाए तो बिजली उत्पादन पर और २५४० अरब डालर का पूंजी निवेश करने के अतिरिक्त कृषि अर्थ व्यवस्था को खाद और सस्ते ईंधन की हानि होगी।

- ''कृषि का अधिकतर कार्य बैलों से होता है। इनसे मिलने वाली ऊर्जा ४०,००० हजार मेगावाट के बराबर है। इनसे देश को दो खरब सत्तर अरब (२७००० करोड़) रूपये का लाभ मिलता है। इसमें देश की ४० खरब की सम्पत्ति लगी हुई है।

- न केवल जैन, बौद्ध या हिन्दू धर्म में बल्कि इस्लाम और ईसाई धर्म में भी गोवंश के महत्त्व को स्वीकारा गया है। कुरान का एक पुरा अध्याय गाय की सुरक्षा पर ही है।

- चीन जैसे कम्युनिस्ट देश में तक गोवध अपराध है। अफगानिस्तान में गोवध पर कानूनी प्रतिबन्ध है। एक साल पहले बर्मा में भी गोवंश वध पर कानूनी प्रतिबन्ध लागू किया गया है।

- डॉ. सयद महमूद ने अपनी पुस्तक ''काऊ प्रोटेक्शन अण्डर मुस्लिम रूल ए हिस्टोरिकल सर्वे'' में लिखा है कि अकबर ने अपने सम्पूर्ण विशाल राज्य में आदेश जारी करके गोवंश वध पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया था। ''आइने अकबरी'' में इसका विस्तार से उल्लेख किया गया है।

- जहाँगीर ने भी यह हुक्म जारी किया था कि रविवार (अकबार का जन्म दिन) और शुक्रवार (जहाँगीर की ताजपोशी का दिन) को और किसी भी ग्रहण वाले दिन किसी भी जानवर को न मारा जाय और न ही आखेट किया जाए।

मानव जीवन में मौन का महत्व

सुश्री प्रकाशलता बोर्दिया

मौन रहने वाले व्यक्ति की साग्रहिणी वृत्ति विकसित हो जाती है। वह गुरु-गम्भीर व्यक्ति बन जाता है और उसकी बात में वजन आ जाता है। सब लोग उसकी बात को ध्यान से सुनते हैं, अवसर मिलने पर वह वक्ता को उसकी वाक्य-विन्यास, शब्द-चयन, विराम, व्याकरण आदि सम्बन्धी त्रुटियां भी बता देता है। इस प्रकार वह वक्ताओं को अधिक अच्छा वक्ता बनाने का पुण्य कार्य भी करता है। मौन रहकर व्यक्ति ज्ञान और सम्मान दोनों अर्जित करता है, और एक निर्विवाद व्यक्ति के रुप में सामाजिक प्रतिष्ठा का अधिकारी बनता है।

बोलने वाला व्यक्ति अपनी बात कहता है यानी अपनी गांठ से कुछ देता है और सुनने वाला व्यक्ति कुछ न कुछ प्राप्त करता है। इस प्रकार लोक- व्यवहार की दृष्टि से भी मौन रहने वाला हमेशा फायदे में रहता है। अमरीकी विचारक **एमरसन** ने एक स्थान पर ठीक ही लिखा है कि 'आओ, हम मौन रहे,' जिससे फरिश्तों की वाणी सुन सकें। फरिश्तों की वाणी ज्ञान की वाणी कही गई है।

सामान्य वार्तालाप में जो लोग बोलते अधिक है, उनके प्रति इस प्रकार की बात कही जाती है— 'थोथा चना बाजे घना'। अधिक बोलने वाले लोग भी व्यर्थ की बात कहकर अनर्थ कर डालते है। मौन रहने वाला कोई बात मुंह से निकालने के पहले कम से कम चार बार यह सोचता है कि जो बात मैं कहना चाहता हूं, इसके द्वारा किस-किस व्यक्ति का क्या -क्या भला हो सकेगा। यदि ऐसा नहीं है, तो वह कम से कम यह अवश्य विचार करेगा कि मेरी बात द्वारा किसी को कष्ट तो नहीं पहुंचेगा, किसी की कुछ हानि तो नहीं होगी। हम किसी भी दृष्टि से देख लें—भाषण करने की अपेक्षा मौन रहना श्रेयस्कर होता है। सन्त- महात्मा सदा से चुप रहकर, मौन रहकर आत्मचिन्तन पर बल देते आए हैं। उनका यह भी कथन रहा है कि मौन रहकर मन—मंथन द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है, वह गूंगे व्यक्ति द्वारा गुड़ के मधुर आस्वादन के समान अनिर्वचनीय होता है। ज्ञानियों के ज्ञान का निष्कर्ष भी यही है कि जो बोलता है, वह जानता नहीं है और जो जानता है, वह बोलता नहीं है। उर्दू के किसी कवि ने इसी तथ्य को काव्योचित भाषा में कहा है कि —

कह रहा है शोर-ए दरिया से समन्दर शकूर।
जिसमें जितना जर्फ है उतना ही खामोश है।।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मौन का महत्त्व :

मनोविज्ञान-विशारदों का कहना है कि बहुत बोलना हीनत्व भाव अथवा अतृप्त इच्छाओं वाले व्यक्तियों की पहचान है। इस श्रेणी के लोग अधिक बोलकर अपनी दुर्बलताओं को छिपाना चाहते हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों को ही लक्ष्य करके कवि रहीम ने कहा है—

'रहिमन' जह मन की बिथा, मन में राखो गोय।
लोक-हंसाई सब करें, बांट न लैहे कोय।।

मौन रहने से व्यक्ति को एक अनोखी मानसिक शान्ति का अनुभव होता है। यह कथन सर्वथा उपयुक्त है कि 'शान्ति का फल मौन के वृक्ष पर लगता है।'

वैज्ञानिक दृष्टि से मौन का महत्त्व :

अधिक बोलना एक रोग भी है तथा रोगकारक कुपथ्य भी है। रक्त-चाप (Blood Pressure) के कारणों के सम्बन्ध में शोध करने वाले एक वैज्ञानिक ने लिखा है कि बोलते समय हम अपने शरीरांगों एवं रक्त में होने वाले परिवर्तनों के प्रति उदासिन बने रहते हैं। बोलते समय हम केवल शब्दों का ही प्रयोग नहीं करते हैं बल्कि अपने शरीर के प्राय: प्रत्येक अंग पर जोर डालते हैं उसकी ऊर्जा का क्षरण करते है। सुखद वार्तालाप भी हमारे स्नायुओं को प्रभावित करता है और इस प्रक्रिया में हमारा रक्त-चाप बढ़ता रहता है। हम सब जानते हैं और देखते हैं कि चिकित्सक जब रक्त-चाप नापता है अथवा स्टेथोस्कोप द्वारा परीक्षण करता है, तब वह रोगी को चुप रहने का निर्देश देता है। जब हम चुप रहते, तब हमारा रक्त-चाप कम हो जाता है। इस प्रकार बोलने और मौन रहने की प्रक्रियाएं हमारे रक्त-चाप के संतुलन को बनाए रखती हैं।

मौन रहने से व्यक्ति की ऊर्जा सुरक्षित रहती है।

मौन का आध्यात्मिक दृष्टि से महत्त्व :

मौन रहने वाला स्वभावत: चिन्तशील और आत्मालोचन करने का अभ्यस्त हो जाता है पर अधिक बोलने वाला व्यक्ति गप्पें लगाता है, पर निन्दा रस में डुबकर अपने कर्त्तव्याकर्त्तव्य को भूल जाता है। आधुनिक युग के शीर्षस्थ विचारक श्री जे. कृष्णमूर्ति ने एक स्थान पर लिखा है कि 'Mind Your Own Business & Learn the Virtue of Silence' अर्थात् अपने काम पर ध्यान दो और चुप रहने के गुण का विकास करो।

मौन रहने से अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह आदि महाव्रतों का भी पूर्णरूपेण निरतिचार पालन हो सकता है। व्यक्ति कर्मों का उपार्जन नहीं करता, मौन रूपी तप करता है। जिससे निर्जरा होती है तथा संवर होता है। इस तरह मौन रूपी अमूल्य रत्न से व्यक्ति अपने जीवन के चरम लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करने में सफल हो जाता है।

व्यावहारिक दृष्टि से मौन का महत्त्व :

चतुर व्यक्ति विद्वानों की सभा में चुप रहकर ज्ञानार्जन करते हैं और मौन को अपने अज्ञान छिपाने का कवच भी बना लेते है। अधिक बोलना केवल अवगुण ही नहीं है—उसको मुर्खता का लक्षण भी कहा गया है—Garrulity is the sign of stupidity,

अरस्तू के विरंजन (Catharisis) सिद्धांत के अनुसार आत्माभिव्यक्ति द्वारा मनुष्य अपने मन को हल्का भले ही कर लेता हो, परन्तु अपने हल्केपन को भी प्रकट कर देता है।

व्यावहारिक जीवन का यह नियम है कि वाकयुद्ध में वही व्यक्ति विजयी होता है, जो कम से कम बोलता है। एक चुप सौ को हरा देता है। जो लोग अनावश्यक रूप से बोलते हैं, उन्हें प्राय: पछताना पड़ता है—

जीभरिया बढ़ बावरी, कही गई सरग पताल।
आपुनि कहि भीतर भई, जूती खात कपाल।।

हमारी जिह्वा दो कार्य करती है—बोलना और रसास्वादन। हम जितना बोलें, उसका चार गुना हमें सुनना चाहिए। इस समीकरण का निर्वाह करने की दृष्टि से **पाइथागोरस** नामक प्रसिद्ध दार्शनिक गणितज्ञ ने अपने विद्यापीठ में यह नियम बना रखा था कि जिज्ञासु छात्र श्रावक संघ (Order of Hearers) के सदस्य बनें और प्रथम तीन वर्षों तक कक्षा में बोलेंगे नहीं, भले ही कोई बात उनकी समझ में न आए। वे अध्यापक द्वारा प्रदत्त ज्ञान का श्रवण करें, मन्थन करें और प्रत्येक समस्या का समाधान स्वयंमेव खोजें।

महाभारतकार ने भी लिखा हैं कि मेधावी पुरुष विद्वानों की सभा में मूर्खों जैसा व्यवहार करता है। "सबकी सुनो और अपने मन की करो" —लोक व्यवहार के इस अमोघ सूत्र का पालन भी वही व्यक्ति कर सकता है जो बोलने की अपेक्षा दुसरों की बात सुनने का अर्थात् मौन रहने का अभ्यस्त होता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि 'बोलना यदि चांदी है तो चुप रहना स्वर्ण हैं—If Speech is Silver, Silence is Gold.'

पाठक स्वयं मौन के गुण का विकास कर ज्ञान राशि का संचय करके भौतिक व आध्यात्मिक विकास की प्रक्रिया को गति प्रदान कर सकते हैं।

इस अंकमे पृष्ठ 27 पर प्रकाशित ज्ञान कसौटी १२ के उत्तर

१) प्रभावती एवं पद्मावती २) पचिंदिय सूत्र ३) प्रभव ४) पीला ५) प्रायश्चित ६) प्रभास ७) पंकज ८) पंचमहाव्रत ९) प्रदेश १०) पचाने ११) पात्रता १२) प्रतिक्रमण १३) पाठशाला १४) परिभ्रमण १५) प्रथम १६) पुद्गलास्तिकाय १७) प्राकृत १८) प्रेक्षा १९) पाँच २०) परमाणु २१) परिषह २२) प्रवचन २३) पंडित मरण २४) पावापुरी २५) पक्षाल ।

प्रेरक प्रसंग

● फ्रान्स का सम्राट लुई पंद्रहवां एक दिन ताश खेल रहा था और किसी बात पर अपने प्रतिद्वन्दी को गलत साबित करते हुए जोश में बोलने लगा। सब दरबारी चुपचाप सुनते रहे। इतने में दे ग्रेसों नाम का एक राजदूत दरबार में आया। सम्राट लुई ने उससे पूछा -- 'अब आप ही बताँइये कि मैं गलत हूँ या सही ?

'आप गलत हैं, जहांपनाह !' राजदूत ने उत्तर दिया।

'सारी बात बिना जाने आप मुझे गलत कैसे कह रहे हैं ?'

'जहांपनाह ! अगर आप सही होते, तो आपके ये तमाम दरबारी इस तरह चुप्पी न साध लेते, बल्कि आपकी हिमायत में बढ़-चढ़कर बोलते।'

पंचम पुण्यतिथी के अवसर पर

स्व. श्री तगराजजी हिराणी

स्वर्गवास ३०–३–१९८७

हार्दिक स्मरणांजली

हम हैं आपके –

पुत्र – चम्पालाल, फतेहराज, कान्तिलाल, प्रकाशचन्द्र, गौतमचंद, राजु
पुत्री – ललिताकुमारी एवं समस्त हिराणी परिवार
रेवतड़ा जि. जालोर (राजस्थान)

प्रतिष्ठान –

1) BHAWANA ENTERPRISES
17–Kesava Iyer Street – **Madras** – 600 003. (T.N.)

2) PRIMIER METAL SUPPLIERS
A–9, Shree Ram Market, D.K. Lane Chick Pet – **Bangalore.**

शब्दसागर इनामी स्पर्धा (८)

साध्वीजी डॉ. प्रियदर्शनाश्रीजी
साध्वीजी डॉ. सुदर्शनाश्रीजी

प्रस्तुत स्पर्धा (८) का उत्तर अलग से फुलस्केप पेपर पर लिखकर पूर्ण नाम, पता एवं आपके शाश्वत धर्म की सदस्य संख्या के साथ कार्यालय के पते पर १० अप्रेल तक पहुंचाएँ।

प्राप्त उत्तरों में से सभी सफल प्रतियोगीयों को पुरस्कार राशि ५००/– (पांचसौ रूपये) का समान भाग वितरित किया जाएगा।

पुरस्कार सौजन्य स्व. पू. मातुश्री पुनीबाई की पुण्य स्मृति में पुष्पेन्द्रकुमार जैन, – इन्दौर द्वारा।

संयोजक – श्री प्रदीप. एम. जैन.

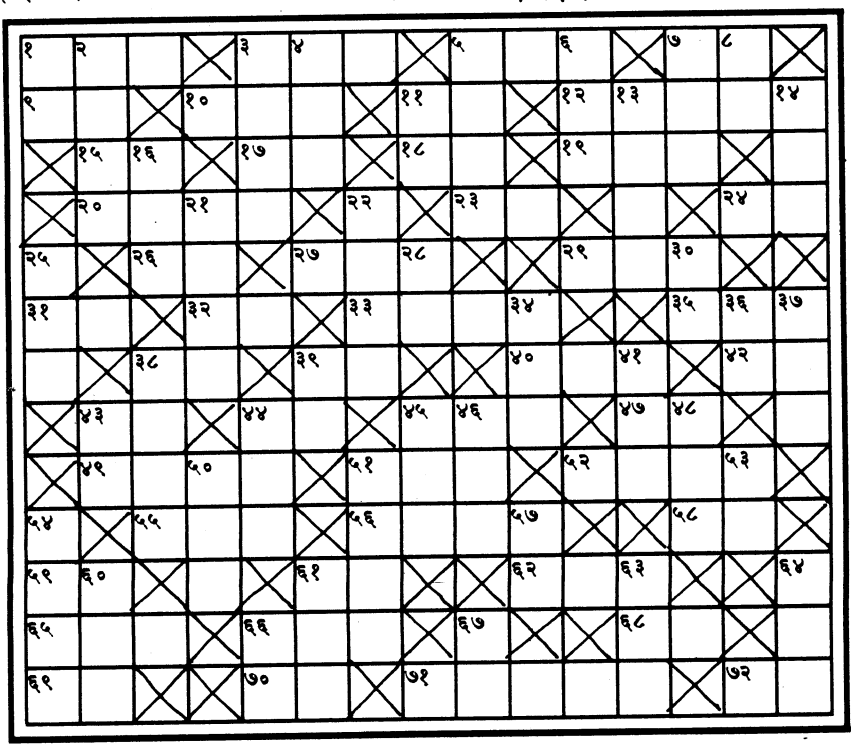

बाऐं से दांयी ओर –

१. ग्यारह गणधरों में से एक! (३)
३. चारित्र मोहनीय के भेदों में से एक। (३)
५. खेचर पक्षी में से एक। (३)

७. साधु बनने से पूर्व दृढ़ प्रहारी – – डालता था। (२)
९. षड् द्रव्य में से एक। (२)
१०. सम्यग्दृष्टि जीव संसार में जल – – – वत् निर्लिप्त रहता है। (३)
११. श्रमण – – धारी होते हैं। (२)
१२. सती सीता – –, – – – की आत्मजा थी। (२, ३)
१५. – – दिखाई देने पर 'नमो जिणाणं' बोलना चाहिए। (२)
१७. 'जयन्तसेन – – सई' श्रीमद् जयन्तसेनसूरि की एक सुंदर कृति है। (२)
१८. रति (प्राकृत में) (२)
१९. जंबूद्विप के चारों ओर – – – उदधि है। (३)
२०. एक भीषण रोग (४)
२३. – – – धर्म दस प्रकार के हैं। (२)
२४. मरूधर की पावन धरा – – प्रसूता रही है। (२)
२६. उपधानतप में ओढ़ने–बिछाने का एक उपकरण। (२)
२७. गुरू – – – तीन प्रकार के हैं। (३)
२९. गुरूजनों का हमेशा – – – करना चाहिए। (३)
३१. श्रावक की दिन – – नियमित–संयमित होती है। (२)
३२. – – आठ हैं। (२)
३३. श्रावक को सदैव – – – – कार्यों का त्याग करना चाहिए। (४)
३५. सच ही कहा है – – – प्रदेश माँ का पेट है'। (३)
३८. चौदह अशुचिस्थानों में से एक। (२)
३९. आत्मा (प्राकृत में) (२)
४०. – – – शय्यंभवसूरि के पुत्र थे। (३)
४२. द्रौपदी प्रभु–पूजा करके स्वयं – – मंडप में आई। (२)
४३. इस अवसर्पिणीकाल के एक तीर्थंकर की माता। (२)
४४. प्रबल पुण्योदय से इस काल में परमात्मा का शासन – –। (२)
४५. सदसद् का – – – होना चाहिए। (३)
४७. – – में ही सजा है। (२)
४९. तेइन्द्रिय जीवों के भेदों में से एक। (४)
५१. जो इधर से उधर आग लगाते हैं, वे – – – मुनि कहलाते हैं। (३)
५२. जय–विजय की भगिनी। (४)
५५. एकाग्रता पूर्वक नवकार का – – – करने से शूली का सिंहासन बन गया। (३)
५६. प्रतिष्ठादि मांगलिक कार्यों में बजनेवाला एक वाद्य–यंत्र (४)
५८. कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को प्रातः गौतम – – सुनते हैं। (२)
५९. – – भी एक देवी है। (२)
६१. – – पुरी में वीर ने अड़तालीस घण्टे देशना दी (२)
६२. कुंभार ने – – – साधु का कान मरोड़ा। (३)
६५. – – – तीन है। (३)
६६. दुःखी को देखकर दयालु के हृदय में – – – होता है। (३)
६८. श्री महामंत्र नवकार की – – गिनने से हर कार्य में सिद्धि मिलती है। (२)

६९. इस काल में श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी गु. साक्षात् – – जागती ज्योत है। (२)
७०. पुद्गल का स्वभाव – – न, पड़न, गलन है। (२)
७१. सौधर्म बृहत्तपोगच्छीय परंपरा में ७२ वी पाट पर होनेवाले सूरी (५)
७२. – – नवपद के वर्णों में से एक (२)

उपर से नीचे की ओर –

१. केवली प्ररुपित धर्म – – र्म है। (२)
२. रजोहरण को – – – – भी कहते हैं। (४)
३. पेट की एक बिमारी (४)
४. श्रीमद् जयन्तसेनसूरि की निश्रा में – – – जयन्ति मनाई गई। (३)
५. षडावश्यक में से एक (४)
६. आत्मीयजनों का वियोग होने पर नयन – – – हो जाते हैं। (३)
७. – – – भूत निकालने के लिए तांत्रिक प्रयोग साधुमर्यादा के खिलाफ हैं। (३)
८. भ. महावीर ने कहा है कि श्रमण तु – – त्मक भाषा का प्रयोग न करें। (२)
११. 'नमो अरिहंताणं' के प्रथमा – – से अष्टापद की यात्रा होती है। (२)
१३. पंचमंगल महाश्रुतस्कन्ध के – – – – हैं। (४)
१४. राजस्थान के – – – नगर में नंदीश्वर द्वीप तीर्थ है। (३)
१६. – – – दुर्ग पर कुमार पाल द्वारा निर्मित जिन मंदिर है। (३)
२१. कच्चा पानी व मिट्टी (प्राकृत में) (४)
२२. श्रमणीवृन्द – – – – होती है। (४)
२५. बेंतालीस दोषों को टालकर – – – लाने का विधान है। (३)
२८. वर्तमान काल के एक तीर्थंकर के गणधर (२)
३०. मनो – – सोलह सतियों में से एक है। (२)
३४. एक अलङ्कार का नाम। (३)
३६. – – राम का पुत्र है। (२)
३७. सुरसुन्दरी ने अरिदमन राजकुमार का – – किया। (२)
३८. बहुबीजवाली एक वनस्पति (४)
३९. स्थानांग सूत्र की शुरूआत 'एगे – –' से होती है। (२)
४१. इषुकार राजा की रानी – – वती थी। (३)
४३. केशलुञ्चन में साधु–साध्वी – – का उपयोग करते हैं। (२)
४४. गुर्वाज्ञा – – – में ही धर्म है। (३)
४५. गुरूजनों का – – – असह्य होता है। (३)
४६. नर्कगति की – – – महाभयंकर होती है। (३)
४८. – – – में छड़ी, चामर आदि आज भी विद्यमान है। (३)
५०. प्रत्येक वनस्पति काय के भेदों में से एक (३)
५१. आत्मा अमर है, शरीर – – – – हैं। (४)
५३. मोहनीय स्थान – – है। (२)
५४. सकलतीर्थ में से एक (४)
५७. प्रथम भिक्षाचर ने – – रस से पारणा किया था। (२)

६०. सरस्वती का पर्यायवाची (३)
६१. वस्तुतः – – – वड़ी आदि का काल एक महिने से अधिक नहीं है। (३)
६३. बहम की दवा लु – – हकीम के पास भी नहीं है। (३)
६४. श्रेणिक ने दासी से दान दिलवाया था। (३)
६६. कृष्ण ने – – को यमधाम पहुँचाया। (२)
६७. एक चक्रवर्ती का नाम (२)

शाश्वत धर्म के ग्राहक बनाईये, सम्यग्ज्ञान के प्रचार में सहयोग दीजिये।

स्वास्थ्य-चर्चा

गुणों का भण्डार
सरसों का तेल

१. सरसों का तेल सिर में लगाने से मस्तिष्क को बल मिलता है, नेत्रों की ज्योति बढ़ती है और बाल समय से पहले सफेद नहीं होते।

२. हल्दी और सरसों का तेल मिलाकर मंजन करने से पायरिया या मसूड़ों के रोग दूर होते हैं और दांत मजबूत व चमकीले हो जाते है।

३. थकान होने पर सरसों का तेल गर्म करके मालिश करने से थकान तुरन्त दूर होती है तथा शरीर में ताजगी आती है।

४. सरसों का तेल पैरों पर मलने से नेत्रों की ज्योति बढ़ती है।

५. सरसों का तेल कपूर मिला कर पसलियों और छाती पर मालिश करने से सीने का दर्द, कफ और सर्दी दूर होती है।

६. चेहरे की झांई और काले धब्बे दूर करने के लिए रात को सोते समय चेहरे पर सरसों का तेल अच्छी तरह मलकर सो जाइए सुबह उठकर बेसन से मुँह धो लिजिए। कुछ ही दिनों में झांई और काले धब्बे दूर हो जावेंगे।

७. छिल जाने, चोट लगने या कट जाने पर शरीर से रक्त तेजी से बहने लगता है। सरसों के तेल को पानी में फेंटकर छिले या कटे स्थान पर लगाने से खून बहना बन्द हो जाता है। जुकाम हो जाने पर नाक में सरसों का तेल लगाने से बड़ा आराम मिलता है।

८. यदि आप जुकाम और खुश्की से बचना चाहते हैं तो स्नान के पूर्व पैर के अंगूठों में पाँच मिनिट सरसों का तेल मलिये।

९. स्नान के बाद १ बूंद सरसों का तेल नाभि में लगाना भी स्वास्थ्य के लिए उत्तम प्रयोग है।

सरे राह चलते चलते

☆ **रासायनिक खाद से घातक रोग** – रासायनिक खाद का ५० प्रतिशत भाग ही फसल को पोषण देता है। इसका २५ प्रतिशत भाग मिट्टी में मिलकर नाइट्रोजन गैस में बदल जाता है और शेष २५ प्रतिशत भाग भूमिगत जल में मिलकर उसे प्रदूषित करता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक पत्रिका के अनुसार रासायनिक तत्वों के मिलने से भूमिगत जल का अम्लीकरण हो जाता है, जो मनुष्य द्वारा पिये जाने पर शरीर में विकार पैदा कर सकता है। ऐसे प्रदूषित जल में कैडियम, अल्यूमिनीयम, जस्ता, सीसा, नाइट्रेट आदि तत्त्व डायरिया या पेट के केंसर जैसे घातक रोगों को भी पैदा कर सकते हैं। **(जनसत्ता ८–२–९२)**

पश्चिमी विचारधारा को लेकर हमारे नेतागण देशी खाद की प्राप्ति के साधन गाय, बैलों को कत्लखाने पहुंचा कर रासायनिक खाद के बड़े बड़े कारखाने देश में खोले जा रहे हैं क्या उससे होनेवाले दुष्परिणामों पर वे ईमानदारी से विचार करेंगे ?

☆ **ध्वनि प्रदूषण से बढ़ते खतरे** – ध्वनि की तीव्रता को मापने की इकाई को डेसीबल कहते हैं। मनुष्य के लिए ४५ से ५० डेसीबल की ध्वनि निरापद मानी जाती है। इससे ज्यादा तेज ध्वनि के बीच अगर कोई व्यक्ति लम्बे अरसे तक रहे तो वह न सिर्फ मानसिक रूप से असंतुलित होगा बल्कि उसकी आयु भी कम हो जाती है। अनिद्रा, मानसिक तनाव, थकावट, चिड़चिड़ापन, मानसिक अशांति, घबराहट, अकुलाहट, सिरदर्द और रक्तचाप आदि ध्वनि प्रदूषण से पीड़ित रोगी के सामान्य लक्षण बताए जाते हैं। वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि अगर इसी रफ्तार से ध्वनि प्रदूषण में बढौतरी होती रही तो सन् दो हजार तक दस वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को ठीक से सुनने में दिक्कत आयेगी।

औद्योगिक विकास एवं वैज्ञानिकों द्वारा नयी–नयी खोजों ने प्रकृति के विरूद्ध जाकर एक असंतुलन पैदा कर दिया है।

☆ **नयी अर्थ व्यवस्था** – जिस तेजी के साथ विदेशी कम्पनियों को आमंत्रित कर उन्हे तमाम छूट दी जा रही है तथा देश के कुटिर उद्योगों की उपेक्षा की जा रही है उससे ऐसा आभास होता है कि भारत का सारा क्षेत्र ही विदेशीयों के हाथों में चला जाएगा। सरकार के कदम नई अर्थव्यवस्था के तहत देश को अंतर्राष्ट्रीय विदेशी कंपनियों, अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष तथा विश्वबैंक के जाल में फँसाने जा रहे हैं।

☆ **धर्म का राजनैतिक उपभोग** – दक्षिणभारत के महाकुंभ माने जाने वाले महामखम पर्व के अवसर पर कुंभाकोणम मंदिर के बाहर कुंड में प्रति बारह वर्ष बाद मेले में स्नान हेतु करीबन २५ लाख लोग आये थे। निश्चित ही संख्या के हिसाब से व्यवस्था कठिन थी लेकिन आगमन व निर्गमन के लिए जो भी व्यवस्था की गयी

थी, उसमें तामिलनाडू के मुख्यमंत्री आ जाने के कारण व्यवधान पड़ा। विशाल सुरक्षा एवं लाव लश्कर के घेरे में लोगों को लाठियाँ खानी पड़ी एवं इन बड़े लोगों की मनमानी एवं बदइंतजामी के कारण कोई पैंसठ लोग भगदड़ में कुचल कर मर गये। सन १९५४ में इलाहाबाद में अमावस्या स्नान के समय राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति की उपस्थिती के कारण फैली प्रशासनिक अव्यवस्था में करीबन एक हजार लोग मरे थे। इसके बाद न्यायाधीश कमलकांत वर्मा की अध्यक्षता में बनायी गयी समिति ने सुझाया था कि वी. आई. पी. ऐसे अवसरों पर न आए तो अच्छा है, मगर १९८६ में चौदह अप्रैल को हरिद्वार में मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह की स्नान लालसा हेतु उपस्थिती में फिर दुर्घटना घटी। असल में ये लोग धार्मिक भावना के कारण नहीं लेकिन लोगों के सामने अपने को प्रदर्शित करने के लिए आते हैं, इसलिए उनमें इतनी विनम्रता भी नहीं होती कि भगवान के घर में सुरक्षा कवच छोड़कर आम तीर्थयात्रियों की तरह आयें।

☆ **आत्म हत्यायें बढ़ रही है** – भारत मे राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ो के अनुसार देश में प्रतिवर्ष आत्महत्या के आंकडों में वृद्धि हो रही है। करीबन ५० हजार से ज्यादा आत्महत्याओं में प्रेमी–प्रेमिका ४.४० प्रतिशत एवं शेष में दहेज विवाद, परिजनों से क्लेश, गरीबी, बेरोजगारी और सामाजिक स्तर पर शामिल है। १९७७ और १९८७ के दौरान जनसंख्या में जहाँ २४.९० प्रतिशत की बढोत्तरी हुई वहीं इस अवधि में आत्महत्या के मामलों में ४७.५० प्रतिशत की वृद्धि हुई। आज स्वयं को ज्यादा शिक्षित व सभ्य मानने वाला मानव क्या इस पर विचार करेगा?

– 'मुसाफिर'

शाश्वत धर्म के पाठकों के लिये अभिनव भेंट योजना

मुनिराज श्री जयानन्द विजयजी द्वारा
लिखित/संपादित निम्नांकित हिन्दी साहित्य भेंट मिलेगा

प्रति पुस्तक दो रूपये के डाक टिकट डाक व्यय हेतु
'शाश्वत धर्म कार्यालय' जामली नाका, थानें
के पते पर भेजकर मंगवा सकते हैं –

(१) समाधान की ज्योत, (२) कामोविजेता जगतोविजेता (३) मुनि जीवन नो मार्ग (गुज.) (४) मुक्तिमहल का राजमार्ग (५) चिन्तन की रश्मियां (६) श्री साधुप्रतिक्रमण सूत्र (७) समाधान की रश्मियां (८) प्रकरण चतुष्टय (९) सम्यग् जिनेन्द्र गुण गंगा (मुनि श्री सम्यगरत्न विजयजी द्वारा लिखित)।

परमश्रद्धेय राष्ट्रसन्त जैनाचार्य श्री मधुकरजी की निश्रा में उपधान तप मालारोपण व तीन बड़ी दीक्षाएं सम्पन्न

(शाश्वत धर्म के प्रतिनिधी -- श्री. अशोक श्रीश्रीमाल द्वारा)

बाग में जैनाचार्य श्रीमद्विजयजयंतसेन सूरीश्वरजी म. की निश्रा में उपधान तप आराधना का समापन हुआ। मुख्य अतिथी मध्यप्रदेश शासन के उद्योग मंत्री श्री कैलाश जोशी तथा विशेष अतिथी त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष - जैन रत्न श्री गगलदास संघवी, परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सेवन्तीभाई मोरखीया, युवा उद्योगपति श्री चैतन्यजी काश्यप तथा शाश्वत धर्म के प्रधान सम्पादक श्री जे. के. संघवी थे।

- आरम्भ में गुरुदेव के मंगलाचरण के बाद मालापरिधान का कार्य आरम्भ हुआ। जिन तपस्वियों ने ४८दिवसीय यह तपस्या पहली बार की थी, उनके परिवार के लोगों ने उन्हें माला पहनाई तथा अभिनन्दन किया। मुख्य अतिथी - श्री कैलाश जोशी, समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री गगलदास संघवी, श्री चैतन्यजी काश्यप, श्री जे.के.संघवी तथा श्री सेवंतीभाई मोरखीया का स्वागत इस आराधना के संयोजक - श्री संघवी परिवार द्वारा किया गया।

स्थानीय समाज, केन्द्रिय परिषद तथा विभिन्न संस्थाओं एवं समाज द्वारा इस भव्य आयोजन पर संघवी परिवार का अभिनन्दन कर अभिनन्दन - पत्र भेंट किया कार्यक्रम में विभिन्न प्रान्तों से दस हजार से अधिक लागों ने भाग लिया।

- पूज्य गुरुदेव ने धर्म सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि मानव में त्याग की भावना सदैव रहना चाहिए। त्याग केवल आत्मविश्वास में ही वृद्धि नहीं करता, बल्कि इससे आत्मिक शान्ति का भी अनुभव होता हैं। हमारे विचारों एवं कार्यों में सद्भावना होना चाहिए। मानव के नाते प्राणिमात्र की सेवा उनकी सुरक्षा तन,मन और धन से करना चाहिये। प्रत्येक जीव के कल्याण का कार्य करना हमारा दायित्व होना चाहिये। भारत की संस्कृति एक अमूल्य निधि हैं। आपने शासन से आग्रह करते हुए कहा कि वे अपनी जवाबदारी समझे तथा प्राणी मात्र की रक्षा करें।

- युवा उद्योगपति एवं समाज और परिषद के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष - श्री चैतन्यजी काश्यप ने कहा कि आराधना से जीवन निर्मल बनता है। श्री समीरमलजी जैन ने कहा कि धर्म ही संस्कृति की रक्षा कर सकता है। प्रेम प्रकाश खत्री ने उत्थान की बात कही। म.प्र.शासन के उद्योगमंत्री श्री कैलाश जोशी ने कहा "संसार में अनेक धर्मों का प्रादुर्भाव हुआ और उसमें कई अस्तित्वहीन हो गए, किन्तु इस पावन धरा पर आज भी धर्म संस्कार सर्वोच्चशिखर पर हैं।" आपने बाग की जनता और विशेष कर संघवी परिवार की तारिफ करते हुए कहा कि धर्म को जीवित बनाए रखने तथा वैचारिक शुद्धि के लिए इस प्रकार के आयोजन तथा भामाशाहों की इस देश को सख्त आवश्यकता है जिसे ये आयोजन प्रेरणा देते हैं। इस अवसर पर राजगढ़ के श्री मोतीलालजी हरण ने आचार्य श्री को काम्बली वोहराई।

- आराधना में एक सौ सत्तर आराधक थे यह उपधान तपस्या जो ४८ दिन चलती है। विभिन्न धार्मिक क्रियाओं के साथ एक दिन उपवास तथा दूसरे दिन एकासना, पुनः अगले दिन उपवास क्रमशः चलती हैं।

- इस भव्य आयोजन में स्थानिय समाज, माहेश्वरी समाज तथा परिषद की विभिन्न इकाइयों ने भरपूर सहयोग किया। संघवी परिवार की ओर से नगर चौरासी अर्थात सम्पूर्ण शहर के भोज का आयोजन किया गया था।

कार्यक्रम का सफल संचालन श्री सुनील डैडी एवं अनिल जैन ने किया ।
उपधान दरम्यान आचार्य श्री की निश्रा में पौष सुदि ११ सोमवार को साध्वीजी श्री स्वयंप्रभाश्रीजी की शिष्याऐं साध्वीजी श्री विनीतगुणाश्रीजी, साध्वीजी श्री वात्सल्यगुणाश्रीजी एवं साध्वीजी श्री वैराग्यगुणाश्रीजी की बड़ी दीक्षाएं सम्पन्न हुयी ।

राष्ट्रसंत आचार्य श्री की प्रेरणा से माहेश्वरी समाज में जागृति

बाग - राष्ट्रसंत आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी का पदार्पण जिस नगर या गांव में होता है, वहां जैन-अजैन नागरिकों में अपूर्व जागृति एवं भाईचारा का निर्माण हो जाता है । बाग नगर के माहेश्वरी समाज की धर्मशाला जिर्णोद्धार का कार्य कई वर्षों से रुका पड़ा था । आचार्य श्री की मंगल प्रेरणा से विवाद का अंत होकर सभी ने एक आवाज से जय-जयकार के नारों के साथ जिर्णोद्धार हेतु योगदान देकर कार्यारम्भ किया । विशेष अर्थ सहयोग श्री रामचन्द्रजी झंवर एवं श्री भैरुलालजी राठी ने दिया । स्थानीय जैन समाज एवं उपधान आयोजक संघवी परिवार ने भी आर्थिक सहयोग प्रदान कर सर्वधर्म समभाव का उदाहरण प्रस्तुत किया ।

यतिन्द्रसूरि इन्द्र भवन का उद्घाटन एवं स्तवन पुस्तक विमोचन

आलीराजपुर (म.प्र.) - मध्यप्रदेश के सीमावर्ती नगर आलीराजपुर में आचार्य भगवंत राष्ट्रसंत श्रीमद्विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी का मुनिमंडलसह ३ फरवरी को मंगल पदार्पण हुआ । भव्य सोमैय्ये के साथ नगर के जैन-अजैनों ने भावभीना स्वागत किया । पूज्य आचार्यश्री की निश्रा में नवनिर्मित 'यतिन्द्रसूरि इन्द्र भवन' का उद्घाटन श्री रतनलाल चुन्नीलालजी - टाण्डावालों ने किया । भवन पर नाम लिखवाने का लाभ शा नानजी मोतीचंदजी काकड़ीवाला परिवार ने लिया । धर्मसभा का आयोजन आचार्यश्री की निश्रा में हुआ, जिसका प्रारंभ क्षेत्रीय सांसद श्री दिलीपसिंह भूरिया ने दीप प्रज्वलित कर किया । इस अवसर पर सुबह का स्वामीवात्सल्य श्री संघ द्वारा एवं शाम का स्वामीवात्सल्य व सिद्ध पूजन काकड़ीवाला परिवार द्वार उनके नूतन गृह कीर्ति के उद्घाटन निमित्त संपन्न हुआ । श्री सपनकुमार काकड़ीवाला द्वारा रचित 'स्तवनामृत चषक' का विमोचन श्री मणीलालजी पुराणिक ने किया ।

भीनमाल से आबुतीर्थ छ ' रि ' पालक संघ

प.पू. आचार्यदेवश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के आज्ञानुवर्ती मुनिराज श्री भुवनविजयजी, जयानन्दविजयजी, सम्यग्रत्नविजयजी, रामरत्नविजयजी, हरिश्चंद्र विजयजी आदि ठाणा एवं साध्वीजी महाप्रभाश्रीजी, प्रियदर्शनाश्रीजी, सुदर्शनाश्रीजी, हर्षपूर्णाश्रीजी, स्नेहलताश्रीजी, पुण्यप्रभाश्रीजी, तत्वलताश्रीजी, विज्ञानलताश्रीजी, मोक्षपूर्णाश्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में भीनमाल से आबुतीर्थ छ ' रि ' पालक संघ का आयोजन शा सांकलचन्दजी अनाजी हरण परिवार ने किया हैं । संघ भीनमाल से फाल्गुन वदि १३ दि. २ मार्च को प्रस्थान कर वरमाण तीर्थ, जीरावला तीर्थ, अचलगढ़तीर्थ की यात्रा करता हुआ देलवाड़ा तीर्थ (आबू पर्वत) जायेगा । वहाँ फाल्गुन सुदि ११ दि. १५ मार्च को तीर्थमाला का कार्यक्रम होगा ।

प्राचीनतम जैन मंदिर का जिर्णोद्धार

राष्ट्रसंत आचार्य देव श्री जयन्तसेनसूरिजी की प्रेरणा से पालसोड़ा (तहसील नीमच) स्थित श्री नेमीनाथ जिन मंदिर के जिर्णोद्धार का निर्णय लिया गया हैं । शिलान्यास व खनन मुहूर्त श्री मोतीलालजी हरण (राजगढ़) व श्री रतनचंदजी पारख (निम्बाहेड़ा) के करकमलों से संपन्न हुआ । इस अवसर पर त्रिस्तुतिक संघ के महामंत्री श्रीभंवरलालजी छाजेड़ एवं विधि कर्ता श्री भंवरलालजी नान्देजी भी उपस्थित थे ।

संघवी परिवार द्वारा

मानपाड़ा में जिन गृहमन्दिर, उपाश्रय का खनन मुहूर्त सम्पन्न

थाने (महाराष्ट्र) - थाने से चार किलोमीटर दूर चितळसर मानपाड़ा में निर्माणाधीन नूतन जिन गृह मन्दिर एवं उपाश्रय का खातमुहूर्त माघ सुदि १३ रविवार दि. १६/२/९२ को हर्षोल्लास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर पूज्य साध्वीजी श्री दिनमणीश्रीजी की शिष्याऐं पधारी थी । यहाँ २०-२५ जैन परिवार रहते हैं , जिनके दर्शन-पूजन आराधना हेतु मन्दिर व उपाश्रय की आवश्यकता महसूस की जा रही थी ।

राष्ट्रसंत आचार्यश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी की प्रेरणा एवं शुभाशिर्वाद से उपरोक्त गृहमन्दिर एवं उपाश्रय का निर्माण आहोर निवासी संघवी कुंदनमलजी भुताजी परिवार की ओर से सम्पन्न होगा ।

प्रातः ११-१५ बंजे शुभमुहूर्त में ॐ पुण्याहं - प्रियतांम् की धुन के साथ खनन् मुहूर्त किया गया । मानपाड़ा संघ की ओर से प्रेमराज, बाबुमलजी एवं थाना श्री संघ के अध्यक्ष - श्री चंदनमलजी पूनमचंदजी व मेनेजिंग ट्रस्टी - श्री बाबुभाई जैन ने संघवी परिवार का श्रीफल, तिलक व माला पहिनाकर स्वागत किया । संघवी परिवार की ओर से श्री जे.के.संघवी ने सभी को आत्मीय सहयोग देने हेतु अपील करते हुए कहाकि शीघ्र ही यह कार्य पूर्ण होकर मंगलप्रतिष्ठा का कार्य हो, ऐसी शासन देव से प्रार्थना हैं । पूज्य साध्वीजी महाराज के मंगलप्रवचन से प्रभावित होकर संघवी परिवार एवं नगर के कई महानुभावों ने मंदिर की प्रतिष्ठा जल्दी हो इसलिए कई प्रकार के अभिग्रह लिये ।

कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद संघवी परिवार की ओर से अल्पाहार रखा गया था ।

माघसुदि १२ को थाना से सकल संघ के साथ साध्वीजी श्री दिनमणीश्रीजी विहारकर मानपाड़ा पधारी । वहाँ हर्षोल्लास के साथ स्वागत किया जाकर विविध महानुभावों द्वारा आठ संघपूजन हुए । अल्पाहार व पूजन संघवी कुन्दनमलजी भुताजी परिवार की ओर से हुआ । पूजन पढ़ाने थाने से श्री राजस्थानी पार्श्व महिला मंडल आया था। [चित्र पृष्ठ 57पर]

पूना में उपधानतप सम्पन्न व चातुर्मास निर्णय

गणिवर्य श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में आदिनाथ सोसायटी पुणे में आयोजित उपधान तप मालारोपण कार्यक्रम २४ जनवरी को संपन्न हुआ । पूज्यश्री की प्रेरणा से ' श्री मरुधर विद्या प्रचारक मंडल ट्रस्ट ' बनाया जाकर उसके अंतर्गत ' दादा श्री कुशल जैन हाइस्कूल ' निर्माण की योजना बनायी गयी । पूज्य श्री ने अगला चातुर्मास सांचोर में करने की स्वीकृति दी है । पुणे से विहार कर क्रमशः कल्याण, भिवंडी, ठाणे होते हुए मार्च के प्रथम सप्ताह में बम्बई आकर अक्षयतृतीया पर पालीतणा पधारेंगे।

पलसोड़ा पंथ - अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के वार्षिक चुनाव श्रीमान भंवरलालजी नांदेचा नीमच वाले की उपस्थिति में सम्पन्न हुए जिसमें अध्यक्ष - श्री उमरावसिंह चौधरी, उपाध्यक्ष - कोमलसिंहजी सोनी, कोषाध्यक्ष - श्री राजेन्द्र बोकड़ीया एवं सचिव - श्री राजेन्द्रकुमार चौधरी सर्वानुमति से निर्वाचित किये गए।

आलीराजपुर में गुरु सप्तमी उत्सव

अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन बाल व बालिका परिषद के द्वारा गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी की जन्म व स्वर्गारोहण तिथि ८,९ व १० जनवरी को त्रि-दिवसीय स्तवन वाद-विवाद, स्वस्तिक मंडन, प्रश्नमंच एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनायी गयी । स्वस्तिक मंडन कार्यक्रम का उद्घाटन केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सेवंतीभाई मोरखीया ने किया ।

शाश्वत धर्म को सप्रेम भेंट

प. पू. आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में बाग में सम्पन्न उपधान तप में पू. आचार्य श्री की प्रेरणा से प्राप्त –

२१००/– उपाधान तप आराधकों द्वारा।

११०१/– शा. केशरीमलजी पोसीत्रा परिवार बाग निवासी की ओर से।

१०१/– श्रीमती रमीलाबहन कोचर C/o.श्री चांदमलजी सुरेशचंद्रजी कोचर–रतलाम। ● श्रीमती दाखाबाई कोलन – नागदा (जंक्शन) निवासी । ● श्रीमती कुसुमबहन विजयाबहन लोढ़ा – मन्दसौर निवासी। ● श्री हुकमीचंदजी रतीचंदजी साजी – गंधवानी निवासी। ● श्रीमती प्रेमलता बहन सागरमलजी जैन नागदा (जंक्शन) निवासी। ● श्रीमती मिश्रीबाई समीरमलजी जैन – टाण्डा निवासी। ● श्रीमती मोहनबाई कांतिलालजी गादिया – टाण्डा निवासी। ● श्री ज्ञानचंदजी राजमलजी पोरवाल – नीमच। ● श्रीमती सियाणीबाई – बालोदा निवासी। ● श्रीमती दाखाबहन पुष्पाबहन बोहरा – मेघनगर निवासी। ● श्रीमती राजकुंवरबहन, रतनबहन (फर्म–इन्द्रकुमार चांदमल) बाग निवासी। ● श्रीमती चन्द्रकांता बहन, विनीता बहन (फर्म–नेमीचंद जवानमल) बाग निवासी। ● श्रीमती ताराबहन जयंतीलालजी – इन्दौर निवासी।

५१/– श्रीमती शैतानमलजी वनवट – खाचरोद निवासी। ● श्रीमती कोकिलाबहन राजेन्द्रकुमारजी मेहता – झाबुआ निवासी। ● श्रीमती कमलाबहन इन्दरमलजी मंडलेचा – दसई निवासी। ● श्रीमती कमलाबहन सागरमलजी मंडलेचा – दसई निवासी। ● श्रीमती चमेलीबहन मथुरालालजी मोदी – राजगढ़ निवासी। ● श्रीमती दाखाबहन बाबुलालजी धाड़ीवाल – उज्जैन निवासी। ● श्रीमती सुगनबहन बाबुलालजी धाड़ीवाल – जावरा निवासी। ● श्रीमती वालीबहन सागरमलजी छाजेड़ – पारा निवासी। ● श्रीमती लीलाबाई शांतिलालजी कोठारी – टाण्डा निवासी। ● श्रीमती वन्दनाबहन प्रकाशचन्द्रजी लोढ़ा – टाण्डा निवासी। ● श्रीमती मधुबहन श्रीश्रीमाल – टाण्डा निवासी। ● श्रीमती मांगुबाई सकलेचा – बड़ावदा निवासी। ● श्रीमती लीलाबाई शंकरलालजी – बड़नगर निवासी। ● श्रीमती कांतीबाई राजमलजी डांगी – टाण्डा निवासी। ● श्रीमती गुणमालाबहन जयंतीलालजी बांठिया – टाण्डा निवासी। ● श्रीमती सुरजबाई सोभागमलजी – टाण्डा निवासी। ● श्रीमती सुशिलाबाई राजमलजी डांगी – टाण्डा निवासी। ● श्रीमती चंचलबाई मोतीलालजी जैन – टाण्डा निवासी। ● श्रीमती दीपमालाबाई अशोककुमारजी श्री श्रीमाल – टाण्डा निवासी। ● श्रीमती सूरजबाई शेतानमलजी बांठिया – टाण्डा निवासी। ● श्री वसन्तीलालजी सेठिया – बाग निवासी। ● श्री कन्हैयालालजी – रिंगनोद निवासी। ● श्री लालचंदजी जैन – अजंड़ निवासी। ● श्री राजमलजी जमींदार – इन्दौर निवासी। ● श्रीमती राजीबाई मांगीलालजी–रिंगनोद निवासी। ● श्रीमती चांदबाई तांतेड़ – लेड़गांव निवासी। ● श्रीमती मांगीबाई लुणावत – रतलाम निवासी। ● श्रीमती निर्मलाबाई

मूणत – रतलाम निवासी। ● श्रीमती सजनबाई – नारायणगढ़ निवासी। ● श्रीमती मोहनबाई पदमाबाई – राणापुर निवासी। ● श्रीमती कान्ताबाई – राजगढ़ निवासी। ● श्रीमती सुनीताबहन खजांची – राजगढ़ निवासी। ● श्रीमती काननबहन खजांची – राजगढ़ निवासी। ● श्रीमती नाथीबाई अंबोड – राजगढ़ निवासी। ● श्रीमती मांगुबहन भंडारी – राजगढ़ निवासी। ● श्रीमती किरणबहन मामा – राजगढ़ निवासी। ● श्रीमती सुशीलाबहन पानीवाला – कुक्षी निवासी। ● श्रीमती उर्मिलाबहन – कुक्षी निवासी। ● श्रीमती रतनबहन – कुक्षी निवासी। ● श्रीमती रंजनबहन – कुक्षी निवासी। ● श्रीमती किरणबहन (फर्म–बाबुलाल सोभाग्यमल) कुक्षी निवासी। ● श्रीमती मंजुबहन – कुक्षी निवासी। ● श्रीमती शान्ताबहन बाबुलालजी – अलीराजपुर निवासी। ● श्रीमती लीलाबाई जैन (मूणत) – खाचरोद निवासी। ● श्रीमती कान्ताबहन – भाटपचलाना निवासी। ● श्रीमती सोहनबहन – भाटपचलाना निवासी। ● श्रीमती सोहनबाई तिलोकचंदजी अंबोड़ – रतलाम निवासी। ● श्रीमती जसकुंवरबहन शांतिलालजी – पारा निवासी। ● श्रीमती कमलाबहन कुक्षी निवासी। ● श्रीमती सम्पतबाई तलेरा –रतलाम निवासी। ● श्रीमती सीरूबहन मोदी –राजगढ़ निवासी। ● श्रीमती दिवापी बहन सालेचा –भा भरा निवासी। ● श्रीमती चन्दाबाई लोढ़ा – लड़ेगांव निवासी। ● श्रीमती राजकुंवरबहन सिसोदिया –इन्दौर निवासी। ● श्रीमती माणकबहन –झाबुआ निवासी।

२०१/– आहोर निवासी मुथा थानमलजी की धर्मपत्नी श्रीमती सुखीदेवी द्वारा पेदअमीरम तीर्थ में उपधान तप मालापरिधान महोत्सव में तिसरीमाला परिधान करने के निमित्त शा. भंवरलाल थानमलजी मुथा द्वारा।

५१/– पू. आचार्य श्री वारिषेणसूरिजी म.सा.की प्रेरणा से श्री संघ तेनाली (आ.प्र.) द्वारा।

१११११/–आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. की प्रेरणा एवं निश्रा में आयोजित नागदा से श्री नागेश्वरतीर्थ छः'रि' पालक संघ के आयोजक नागदा निवासी शा. हस्तीमलजी धीरजमलजी नांदेचा परिवार द्वारा।

शुभप्रसंगों पर 'शाश्वतधर्म' को सहयोग देना न भूलें।

प्रेरक क्षणिकाएँ

– मुनि तरुण सागर

आज का आदमी
दोहरा जीवन जी रहा है,
एकान्त मयखाने में
– शराब
और
समाज में पानी छानकर
पी रहा है!

आज के आदमी
के अधरों पर अमृत,
हृदय में हलाहल है।
ऊपर से जितना शान्त
अंतरंग में उतना ही
कोलाहल है।

परिषद प्रांगण से

अध्यक्ष की ओर से

माननीय साथीगण,
सादर जयजिनेन्द्र !

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद मैदानी संगठन है। इसकी महत्वपूर्ण इकाई कार्यकर्ता है। कार्यकर्ताओं की शक्ति व क्षमता के आधार पर ही परिषद ने आज तक अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कदम बढाए हैं। हमारे सभी साथी शाखाओं के माध्यम से क्रियाशील हैं। देश भर में फैली परिषद की शाखाएं अपने कई कार्यक्रम आयोजित करती हैं तथा प्रवृत्तियां संचालित करती हैं। कई स्थानों पर शाखाओं ने रेखांकन योग्य कार्य किए हैं। जैसे जोगेश्वरी (बंबई) शाखा द्वारा आयोजित रानी (राजस्थान) में विकलांग सहायता शिबिर, सियाणा (राजस्थान) शाखा द्वारा आयोजित सूखा राहत शिबिर, झाबुआ शाखा द्वारा गौवंश संरक्षण हेतु पहल, अलीराजपुर शाखा द्वारा अस्पताल में एक्स-रे मशीन का प्रायोजन, जावरा शाखा द्वारा खाचरोद अस्पताल के सहायतार्थ ड्रा का आयोजन आदि-आदि। प्रत्येक शाखा उत्साहपूर्वक कार्य कर रही है। इन शाखाओं में स्वस्थ स्पर्धा विकसित करने तथा प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से वार्षिक पुरस्कार प्रारंभ किए हैं। ये पुरस्कार श्रेष्ठ कार्य करने वाली शाखाओं को दिए जाएंगे। पुरस्कारों के दो स्तर हैं - शाखा स्तर तथा व्यक्तिगत स्तर।

शाखा स्तर पर निम्नांकित वार्षिक पुरस्कार श्रेष्ठ कार्य पर दिए जाएंगे :-

- **चिकित्सा** - श्री मणीलालभाई मोरखिया पुरस्कार
- **सेवा** - श्री अशोक कुमारजी काश्यप पुरस्कार
- **शिक्षा** - श्री कुंदनमलजी भूताजी संघवी पुरस्कार

व्यक्तिगत स्तर पर निम्नांकित पुरस्कार दिए जाएंगे -

- **लेखन** - स्व. श्री जीतमलजी हीराणी पुरस्कार
- **शाश्वत धर्म प्रचार** - श्री सुखराजजी चमनाजी कबदी पुरस्कार

प्रत्येक पुरस्कार पांच सौ एक रूपए का होगा।

आशा है इन पुरस्कारों के लिए हमारी शाखाएं तथा हमारे साथी पूरे मनोयोग व परिश्रम से कार्य करेंगे। अगले परिषद अधिवेशन में इन पुरस्कारों का निर्णय लिया जाएगा। यह निर्णय प्रगति व मूल्यांकन के आधार पर होगा।

सेवंतीलाल एम. मोरखिया
राष्ट्रीय अध्यक्ष

महामंत्री का प्रतिवेदन

परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री - श्री सुरेन्द्र लोढ़ा ने अपने प्रतिवेदन में बताया कि परिषद के जावरा में सम्पन्न हुए राष्ट्रीय अधिवेशन में धार्मिक शिक्षा प्रचार तथा धार्मिक परीक्षा बोर्ड संचालित करने के लिए श्रीमद् यतीन्द्र - जयंत ज्ञानपीठ की स्थापना की गई है। ज्ञानपीठ संचालन समिति की पहली बैठक राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महा. के सानिध्य में जावरा में सम्पन्न हुई। इसके निर्णयानुसार मालवा क्षेत्र के बत्तीस ग्रामों तथा नगरों का चयन किया गया है जिनमें धार्मिक शिक्षा प्रचार का सघन कार्यक्रम प्रारंभ किया जाएगा। तीन-तीन नगरों पर एक-एक पर्यवेक्षक मनोनीत किए गए हैं जो कि दौरा कर इन स्थानों पर धार्मिक शिक्षा को गति दें। इन स्थानों की सूची इस प्रकार हैं :- १.निम्बाहेड़ा २. नीमच ३. मंदसौर ४. दलौदा ५. जावरा ६. रतलाम ७. पिपलौदा ८. आलोट ९. बड़नगर १०. उज्जैन ११. खाचरौद १२. महिदपुर १३. इंदौर १४. पारा १५. राजगढ १६. रिंगनौद १७. बाग १८. टाण्डा १९. कुक्षी २०. अलीराजपुर २१. दसई २२. मेघनगर २३. थांदला २४. बामनिया २५. कुशलगढ २६. झाबुआ २७. बड़ावदा २८. राणापुर २९. कचनारा ३० धुंधड़का ३१ भाटपचलाना ३२. नागदा

कार्यकर्ता शिबिर होगा

केन्द्रीय परिषद की ओर से परिषद कार्यकर्ताओंके लिए वर्ष में तीन शिबिर परिषद भवन राजगढ : जि. धार पर आयोजित करने की निर्णय किया गया हैं। प्रत्येक शिबिर में पचास कार्यकर्ता लिए जाएंगे तथा यह दो दिनों के लिए होगा। किसी भी शाखा परिषद के तीन से अधिक कार्यकर्ता शिबिर में नहीं आएंगे। जहां तक हो सकेगा शाखाओं के संगठन मंत्रियों को शिबिर में सम्मिलित किया जाएगा। शिबिर में संगठनात्मक दृष्टि से प्रशिक्षण तथा विचार विमर्श होगा। कार्यकर्ताओं की विभिन्न विषयों पर कार्यशाला भी आयोजित की जाएगी। राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने ऐसे पहले शिबिर के लिए शाखाओं से कार्यकर्ताओं के नाम भिजवाने हेतु परिपत्र जारी किया है। राष्ट्रसंत श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महा. की अनुमति से पहला शिबिर मार्च माह में आयोजित होने की संभावना हैं। राष्ट्रीय संगठन मंत्री -श्री कांतिलालजी भंडारी ने शिबिर को सफल बनाने का आव्हन किया हैं।

श्री तालनपुर तीर्थ पर परिषद का म.प्र.प्रान्तीय सम्मेलन

म. प्र. प्रान्तीय सम्मेलन श्री तालनपुर तीर्थ में [illegible] (इसके विस्तृत समाचार इसी अंक में पृष्ठ 51 पर प्रकाशित किये गये हैं)

नई शाखाओं की स्थापना

सारंगी (जि.झाबुआ) दिनांक २३ दिसंबर ९१ बुधवार को मूलनायक भगवान श्री कुंथुनाथ स्वामीजी के जिन मंदिर शिलान्यास मुहूर्त पर अखिल भारतीय श्री रोजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की शाखा का गठन केन्द्रीय संगठन मंत्री - श्री कांतिलालजी भण्डारी, पूर्व कोषाध्यक्ष- श्री केशरचंदजी तांतेड़, पूर्व प्रांतीय संगठन मंत्री - श्री भैरूलालजी भंडारी, श्री संतोष भाई कार्यकर्ता एवं शिलान्यासकर्ता-श्री मोतीलालजी हरण की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। जिसमें सर्वश्री महेन्द्रकुमारजी तलेसरा अध्यक्ष, बसंतीलालजी बंबोरी, प्रकाशचंदजी तलेसरा महामंत्री, विक्रमसिंहजी कोठारी कोषाध्यक्ष, नरवरसिंहजी ठाकुर संगठन मंत्री, अनिलकुमारजी बंबोरी प्रचार मंत्री तथा कार्यकारिणी सदस्य सर्वश्री मिलन कुमारजी मेहता, अनिलकुमारजी खाबीया, भूरालालजी तथा मुख्य परामर्शदाता -श्री शैतानमलजी माण्डोत चुने गये। इसके अलावा केन्द्रीय प्रतिनिधि के रुप में श्री मोहनकुमारजी तलेसरा तथा श्री विक्रमसिंहजी कोठारी का चयन किया गया। पन्द्रह सामान्य सदस्य भी चुने गये।

खारवा क़ला ! दिनांक १२ दिसंबर ९१ को श्रीमद् राजेन्द्रसूरिज्ञान मंदिर की भूमि का भूमि पूजन कार्य किया गया। उक्त अवसर पर खारवा कला जि. रतलाम शाखा परिषद की स्थापना की गई। जिसमें श्री अनोखीलालजी भण्डारी को सर्वानुमति से **अध्यक्ष** चुना गया। कार्य समिति भी गठित की गई।

केन्द्रीय कार्यसमिति की बैठक

श्री मोहनखेडा तीर्थ :राजगढः अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की केन्द्रीय समिती बैठक यहां राष्ट्र संत श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी म.सा. "मधुकर" की निश्रा तथा केन्द्रीय अध्यक्ष-श्री सेवंतीभाई एम. मोरखिया की अध्यक्षता में ११ जनवरी को सम्पन्न हुअी। बैठक के प्रारंभ में श्री अनिलजी जैन (अलिराजपुर) ने नवकार मंत्र की सामूहिक धुन करवाई। राष्ट्रसंतश्री ने मंगलाचरण प्रदान किया। केन्द्रीय संगठन मंत्री - श्री कांतिलालजी भंडारी ने राजगढ परिषद की ओर से प्रतिनिधियों का स्वागत किया।

राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरीश्वरजी महा. ने बैठक को संबोधित किया तथा कहा कि परिषद को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील रहना हैं। कार्यकर्ता गुरुभक्ति के साथ उत्साहपूर्वक कर्तव्य मार्ग पर जुटे रहें। हमें काम करना है तथा समाज का उत्थान करना है। राष्ट्रीय महांमत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने जावरा अधिवेशन के पश्चात का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत किया तथा कहा कि धार्मिक शिक्षा के प्रचार को सबसे अधिक प्राथमिकता देकर कार्य प्रारंभ किया गया है। श्रीमद् यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ ने पाठ्यक्रम स्वीकार कर लिया है। परिषद द्वारा डायरी का प्रकाशन किया गया है। केन्द्रीय पदाधिकारियों के दौरे हुए है। प्रत्येक शाखा में स्वयंसेवकदल गठित करने का प्रस्ताव है।

केन्द्रीय अल्प बचत मंत्री-श्री जवाहरलालजी जैन ने बैठक में सभी से आव्हान किया कि परिषद की शाखाओं में अल्पबचत योजनाएं प्रारंभ की जाएं। केन्द्रीय कोषाध्यक्ष - श्री प्रकाशजी कांठेड़ ने अगले वित्त वर्ष का बजट भी प्रस्तुत किया जिसे सर्वानुमति से पारित किया गया। श्री कांठेड़जी परिषद भवन राजगढ का प्रगति प्रतिवेदन भी प्रस्तुत किया। बैठक में सुदूर प्रदेशों तक से राष्ट्रीय कार्य समिति के सदस्यों ने भाग लिया।

अंत में केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सेवंतीभाई मोरखीया ने कहा कि परिषद के हर साथी को परिषद का कार्य अपना कार्य मानकर कर्तव्य मार्ग पर जुटे रहना हैं।

श्री तालनपुर तीर्थ पर श्री राजराजेन्द्र जयन्तसेन - विहार का भूमिपूजन - खनन - शिलान्यास समारोह एवं अ.भा.श्री रा. जै. न. परिषद का म.प्र. प्रान्तीय सम्मेलन सम्पन्न

पूज्य गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी द्वारा उद्धरित श्रीतालनपुर तीर्थ पर पूज्य राष्ट्रसंत आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी की प्रेरणा व निश्रा में माघवदि १३ दि. १ फरवरी १९९२ को श्री राजरोजन्द्र जयन्तसेन विहार का भूमिपूजन -खनन व शिलान्यास समारोह सम्पन्न हुआ ।

बाग में उपधान तप सम्पन्न करवा कर आचार्य श्री मुनिमंडल सह कुक्षी होते हुए यहाँ पधारे । पूज्यश्री के भव्य सोमैय्ये के पश्चात् शुभ महुर्तू में श्रीमति तेजकुंवरबाई काश्यप (रतलाम) द्वारा भूमिपूजन व खनन एवं श्रीसेवंतीभाई मोरखिया द्वारा शिलान्यास का कार्य सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री चैतन्यकुमारजी काश्यप ने की । इस अवसर पर त्रिस्तुतिक संघ के अध्यक्ष - श्री गगलदास हालचंद संघवी, उपाध्यक्ष श्री चैतन्यजी काश्यप, श्रीमति तेजकुंवरबाई काश्यप, परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष - श्री सेवंतीभाई मोरखीया, परिषद के प्रदेशाध्यक्ष - श्री सोहनरामजी सुराणा, प्रदेशमंत्री - श्री ओच्छवलालजी जैन, शाश्वतधर्म के सम्पादक श्री जे.के.संघवी, श्री वाड़ीभाई संघवी, श्री चंदुभाई वोरा, श्री जयंतीभाई आदि का स्वागत ट्रस्ट मंडल की ओर से साफा बंधाकर, तिलक व माला से किया गया ।

आज तक के तीर्थ के ज्ञात इतिहास के अनुसार पूर्व में इस तीर्थ को तुंगियापुर, तुंगियापत्तन, तारानगरी आदि नामों से जाना जाता रहा हैं । यहाँ वैभवशाली जैन श्रेष्ठिगण रहते थे एवं विशाल संख्या में जैन मंदिर थे । यहाँ स्थित प्राचीन बावड़ियाँ, एवं समय-समय पर कलायुक्त प्रस्तर खण्ड, प्रतिमाएं व सिक्कों का यत्र-तत्र मिलना इस नगर की प्राचीन वैभवता का सूचक है ।

इस अवसर पर श्री मनोहरलालजी पुराणिक द्वारा संपादित 'श्री तालनपुर तीर्थ:एक परिचय'की तृतीयावृत्ति का विमोचन श्री सेवंतीभाई मोरखीया द्वारा किया गया ।

निर्माणाधीन धर्मशाला के निकट चिकित्सालय बनाने हेतु मे. पुर्णिमा टॉर्च-कुक्षी वालों ने छः हजार वर्गफीट भूमि भेंट देने की घोषणा की । चिकित्सयालय निर्माण में श्री चैतन्यजी काश्यप, श्री मणीलाल प्रेमचंदभाई मोरखीया परिवार आदि अनेकानेक महानुभावों ने अर्थ सहयोग की घोषणा की ।

दोपहर भोजन के बाद अ.भा.श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के म.प्र. प्रान्तीय सम्मेलन का प्रारंभ हुआ । परिषद के केन्द्रीय अध्यक्ष - श्री सेवंतीभाई मोरखीया द्वारा दीप प्रज्वलन एवं श्री वाड़ीभाई संघवी द्वारा गुरूदेव के फोटो को माल्यार्पण किया गया ।

परिषद के प्रान्तीय अध्यक्ष - श्री सोहनराजजी सुराणा ने कहा कि पूज्य गुरुदेव के मध्यप्रदेश पदार्पण के पश्चात् अभूतपूर्व जागृति आयी है, उसे बनाये रखकर आगे कदम बढाना हैं ।

श्रीमति कांताबहन आंचलिया ने परिषद के चारों उद्देश्यों की पूर्ति में लग जाने का आव्हान किया।

संगठन मंत्री - श्री कान्तिलालजी भंडारी ने बताया कि परिषद भवन में वर्ष में तीन बार ज्ञान शिबिर का आयोजन होगा । इस वर्ष सारी व्यवस्था में अर्थसहयोग श्री मोतीलालजी हरण (राजगढ़) की ओर से दिया जायेगा ।

शाश्वतधर्म के सम्पादक श्री जे.के .संघवी ने परिषद के मुखपत्र शाश्वत धर्म के प्रचार/प्रसार हेतु

अपील की ।

परिषद के उपाध्यक्ष - श्री चैतन्यजी काश्यप ने कहा कि विवेकशीलता महत्त्वपूर्ण हैं । बोलने एवं आचरण में एकरुपता लाकर कार्यकर्ता कार्य करे तो उसका सीधा असर होता हैं ।

श्री ओच्छवलालजी जैन, श्री नथमलजी जैन, श्री जवाहरलालजी जैन, श्री अनिल जैन, श्री मणिलालजी पुराणिक आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये ।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री मोरखीया ने कहा कि सबको जोड़नेवाली इस संस्था से हम गौरव का अनुभव कर रहे हैं । परिषद के उद्देश्यों की पूर्ति में आस-पास की शाखाओं का सहयोग भी लेवें एवं केन्द्र द्वारा आपकी योजनाओं को साकार करने में तन-मन धन से सहयोग देने का विश्वास दिलाता हूँ । समय-समय पर पत्र द्वारा सुझाव या समस्या का समाधान प्राप्त कर सकते हैं । परिषद द्वारा किये जा रहे कार्यों का विवरण समय-समय पर प्रकाशनार्थ शाश्वत धर्म कार्यालय में भिजवायें ।

मध्यप्रदेश शासन को गौशालाओं के निर्माण हेतु सहयोग देने के लिए कानून बनाने के लिए निवेदन स्वरुप प्रस्ताव पारित कर भेजा गया ।

पूज्य राष्ट्रसंत आचार्यश्री ने फरमाया कि समर्पित कार्यकर्ता ही संस्था की जान होते हैं। जब तक समर्पण नहीं आयेगा, हम लक्ष्य में आगे नहीं बढ़ सकते । समर्पण आने पर त्याग की भावना आयेगी । समर्पण भाव में शक्ति हैं । लक्ष्यों की पूर्ति में उत्तरोत्तर आगे बढने के लिए, संस्था को जीवित रखने के लिए समर्पित कार्यकर्ताओं की एक कतार चाहिये ।

" मैं चाहता हूँ कि समाज के लिए यह संस्था वरदान बन जाये । "

सारे कार्यक्रम का संचालन श्री मनोहरलालजी पुराणिक (कुक्षी) ने किया । कार्यक्रम की समाप्ति के बाद सायं ५ बजे आचार्यश्री मुनिमंडल के साथ लक्ष्मणीतीर्थ की ओर विहार कर गये ।

वासना का ज्वार भाटा

मन के मानस सागर में
वासना के ज्वार भाटे आते
और
सदियों से रक्षित
तप, त्याग, संयम की फसल को
क्षणांस में
जड़मूल नष्ट कर जाते
तो
इतना तीव्र वेग है तेरा
फिर क्यों
तू विषयों का चेरा
अरे
पहिचान अपनी शक्ति
और कर साहस संग
मुक्ति पथ पर गमन
और बन जा
नित्य निराकार निरंजन
रे चपल मन
कर तू अर्हत् का भजन॥

शेष रहेगा कुरुप रूप

हे सखे!
मनमानी करना छोड़ दे
दुराभिमानी बनना छोड़ दे
जिस सौंदर्य पर
इतना गर्व है तुझे
वह तेरा सौंदर्य
धुप-सा ढह जायेगा
नीर-सा बह जायेगा
मोम-सा जल जायेगा
श्वान-सा सड़ जायेगा
ओस-बुँद-सा नश जायेगा
कर्पूर-सा उड़ जायेगा
बर्फ-सा गल जायेगा
शेष रहेगा कुरुप तन
रे चपल मन
कर तू अर्हत् का भजन॥

—मुनि तरुण सागर

समाचार सार

● **विजयवाड़ा** – नैत्र ज्योति संघ द्वारा नूना गांव में विशाल हॉस्पिटल का निर्माण किया जा रहा है जिसमें श्री राजेन्द्र जैन सेवा संघ द्वारा श्री राजेन्द्रसूरिजी की स्मृति में निर्माणाधिन हॉस्पिटल में एक आपरेशन कक्ष बनवाने हेतू पचास हजार रूपये का अनुदान संस्था के चेयरमेन द्वारा कलेक्टर को प्रदान किया गया। संस्था द्वारा प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी फरवरी में चौथा निःशुल्क नैत्र शिबिर आयोजित किया गया। शिबिर का उद्घाटन जिला–कलेक्टर श्री राजीव शर्मा ने दीप प्रज्वलित कर किया। शिबिर में करीब ४०० लोगों की आँखों की जांच की जाकर ७५ रोगियों की आंखों का आपरेशन किया गया।

● **मालपुरा (राज.)** – पू. श्री शीतल राजजी म. सा. आदि ठाणा के सानिध्य में दि.१६–२–९२ को मुमुक्ष विशालकुमार जैन, गांधीनगर दिल्ली निवासी की भागवती दीक्षा का कार्यक्रम श्री विजयचंदजी लोढ़ा जयपुर की अध्यक्षता एवं श्री सिरेमलजी नवलखा जयपुर के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

● **आहोर (राज.)** – श्री गौड़ी पार्श्वनाथ बावन जिनालय की वर्षगांठ निमित्ते दि.२२–२–९२ को आयोजित मेले का लाभ शा. चन्दनमल वच्छराजजी श्री श्रीमाल परिवार ने लिया। स्मरण रहे उपरोक्त बावन जिनालय की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संवत १९५५ फाल्गुन वदि ५ को गुरूदेव श्रीमद विजयराजेन्द्रसूरिजी ने करवायी थी।

● **अम्बिका नगर (फालना राज.)** – श्री नेमीनाथ जैन श्वेताम्बर तीर्थ–अम्बाजी नगर में पू. आचार्य श्री सुशीलसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा में उपधान तपाराधना सम्पन्न हुई। दि.२९.१.९२ को माल्यार्पण का आयोजन किया गया प्रथम माला श्री घीसुलालजी छोगमलजी सोलंकी परिवार चाणोद ने लेकर स्थानीय मन्दिर के जीर्णोद्धार में अपना अमूल्य सहयोग प्रदान किया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री गणपतिचंद भंडारी थे। डॉ. श्री जवाहरचंद पाटनी के करकमलों से ''ध्वजाएं फहरे जिनशिखर'' का विमोचन किया गया।

● **बालदा (सिरोही) (राज.)** – पू. आचार्य श्री गुणरत्नसूरिजी आदि ठाणा की निश्रा में सामूहिक ४००० उपवास व दो करोड़ आध्यात्मिक मंत्र जाप का आयोजन किया गया। आचार्य श्री की निश्रा में ही दि.१० फरवरी से विश्वशान्ति व आत्मशांति हेतू विश्वशान्ति रथयात्रा का आयोजन किया गया जो १५ फरवरी को जीरावला तीर्थ पहुंची।

● **पारा (म.प्र.)** – श्री राजेन्द्रसूरि बालविकास समिती द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मन्दिर का प्रथम स्नेह सम्मेलन दि.८–२–१२ को मनाया गया।

● **बम्बई (भायखला)** – बम्बई से मोहनखेड़ा तीर्थ छः रि पालक यात्रा

संघ का प्रस्थान दि.१६–२–९२ को हुआ। संघ रास्ते में विभिन्न मन्दिरों में दर्शन करते हुए दि.१९ को सुबह थाने मुनि सुव्रतस्वामी जिनालय पहुंचा जहां दर्शनकर कापूरबावडी के समीप ग्रीनवुड काम्पलेक्स में जाकर विश्राम किया। संघ चैत्रसुदि १३ को श्री मोहनखेडा तीर्थ पहुंचेगा।

- **बैंगलोर** – बैंगलोर जैन सेवा मंडल द्वारा लिखित निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया है जिसका विषय – ''मानव स्वास्थ के लिये शाकाहार ही सर्वश्रेष्ठ आहार है, क्यों?'' निबन्ध पहुंचने की अन्तिम तिथी २६–२–९२ है। संस्था की ओर से तीन पुरस्कार रखे गए हैं।

- **उज्जैन** – समस्त श्वेताम्बर जैन समाज के २९६ विवाह योग्य युवकों एवं युवतियों के सम्पूर्ण परिचय देने वाली पुस्तक ''श्वेताम्बर जैन वर–वधू दर्शिका'' के चतुर्थ संस्करण का हाल ही में प्रकाशन हुआ है। पुस्तक का मूल्य बीस रूपये है। पुस्तक साधारण डाक से मंगाने के लिये बीस रूपये तथा रजिस्टर्ड ए. डी. से मंगाने के लिये २८/– रुपये मनीऑर्डर द्वारा निम्न पते पर भेजिये :– श्री संचालक, अ. भा. श्वेताम्बर जैन वैवाहिक सूचना – केन्द्र, विक्रम मार्ग, ८८, लक्ष्मी नगर, उज्जैन (म. प्र.) ४५६ ०१०.

- **नीमच सीटी** – श्रीमती सुषमा दुग्गड़ के आर्थिक सहयोग से स्व. श्रीमती हुलास बाई दुग्गड़ की स्मृति में निर्मित जैन महिला आश्रम का उद्घाटन प्रसिद्ध उद्योगपति नेमीनाथ जैन ने, श्रीमती पारसरानी मेहता की अध्यक्षता एवं नीमच एस. डी. एम. श्री अमिताभ जैन के मुख्य आतिथ्य में किया।

श्री लक्ष्मणीतीर्थ – (अलीराजपुर) म.प्र. – दर्शनार्थ अवश्य पधारिये।

आपका पत्र मिला – – – –

■ शाश्वत धर्म तो आपके सद्प्रयत्न से गति ही नहीं प्रगतिशील हो रहा है इसके लिये धन्यवाद एवं बधाई।

मणीलाल पौराणिक – कुक्षी (म. प्र.)

■ माह फरवरी के अंक में सम्पादकीय बहुत उत्कृष्ट लगा। जागृत समाज, राष्ट्र के विकास में सहायक सिद्ध हो सकता है। आज हम सुषुप्त अवस्था में हैं शासक वर्ग भी केवल दिखावा मात्र करके अपने कार्यकाल के व्यतीत होने तक कुछ भी नहीं कर पाते। संस्कृति का जागरण हमारी जागृति में ही निहित है। **धनराज मेवाड़ा – चाणोद (राज.)**

नव प्रकाशित साहित्य

● **पर्व पीयूष प्रवचनावली (गुजराती)** – प्रवचनकार – आचार्य श्री यशोभद्रसूरीश्वरजी, संपादिका – साध्वीजी श्री चारूयशाश्रीजी, प्रकाशक – श्री वरली संभवनाथ जैन संघ, प्राप्तिस्थान – श्री कोट तपगच्छ श्वे. मू. जैन संघ, श्री शांतिनाथ जैन मंदिर, १८०–१९४, बोराबाजार स्ट्रीट बम्बई – १.

प्रताकार प्रकाशित ग्रंथ में चातुर्मासिक, अष्टदिवसीय पर्युषण, दिपावली, भाई–बीज, ज्ञानपंचमी, अक्षयतृतीया एवं मौन एकादशी पर्वों के व्याख्यानों का सुंदर संकलन किया गया है। ज्ञान भंडारों हेतु एवं साधु–साध्वियों के लिए व्याख्यान में उपयोगी प्रकाशन है।

● **गच्छाचार पयन्ना (गुजराती)** – सं. गुरूदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. द्वितीयावृत्ति प्रकाशक – शा. अमीचंदजी ताराचंदजी दाणी, मु. पो. धाणसा, जि. जालोर (राज.), प्राप्तिस्थान – शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने, ४०० ६०१ पृष्ठ–३३२; पोस्टेज खर्च हेतु पांच रुपये भेजने पर साधु–साध्वी अथवा ज्ञानभंडार में भेंट।

गच्छाचारपयन्ना में साधु–साध्वियों के आचार–विचार को विस्तृत दर्शाया गया है। श्रीमद् आनंदविमलसूरिजी के शिष्य श्री विजयविमल गणि ने इस पर संस्कृत मे टीका रची थी। गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्रसूरिजी ने ग्रंथ की विशेष उपादेयता हेतु इसका गुजराती भाषा में विवेचन किया है। प्रस्तुत ग्रंथ में मूल गाथा, संस्कृत छाया, मूल गाथा का अर्थ एवं विस्तृत विवेचन इस प्रकार क्रम रखा गया है। प्रसंग कथायें भी इसमें दी गयी है। साधु साध्वियों के आचार विशेष एवं कर्तव्य का इसमें मुख्य रूप से विस्तृत वर्णन होने के कारण संयमी आत्माओं को इसे अवश्य ही पढना चाहिये। ग्रंथ पक्की बायडिंग व सुंदर ऑफसेट प्रिंटिंग में छपा है।

● **सम्यग् जिनेन्द्र गुण गंगा** – रचयिता – मुनिराज श्री सम्यगरत्नविजयजी म. सा. प्रकाशक – मुथा घेवरचंद हिम्मतमलजी तिलेसरा, आहोर (राज.) प्राप्तिस्थान शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने (महाराष्ट्र); मूल्य–सदुपयोग; पृष्ठ ३१२ (मंगवाने हेतु दो रूपये के पोस्टेज स्टेम्प भिजवायें)

प्रस्तुत पुस्तक में कविहृदय मुनिराज श्री द्वारा लोक भाषा में रचित स्तोत्र, स्तुति, स्तवन, प्रकाशित किये गये हैं।

● **श्री जिनेन्द्र दर्शन स्तुति** – संपादन – उपरोक्त अनुसार, प्रकाशक – श्री सौधर्म वृहत्तपोगच्छीय त्रिस्तुतिक जैन संघ – भीनमाल, प्राप्तिस्थान – उपरोक्त अनुसार, मूल्य – सदुपयोग।

चौवीस तीर्थंकरों की स्तुति, प्रदक्षिणा दोहे, भक्तामर स्तोत्र, गुरूगुण इक्कीसा आदि का उपयोगी संकलन है।

● **ध्वजाऐं फहरें जिनशिखर** – सम्पादक – कनकराज पालरेचा, प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान – श्री जैन नवयुवक मंडल – रानी (राज.) ३०६ ११५ मूल्य – तीस रूपये।

रानी में सम्पन्न प्रतिष्ठोत्सव की स्मृति में प्रस्तुत स्मारिका मे प्रतिष्ठा के महत्व, जिनपूजन क्यों? वर्तमान युवा पीढि की स्थिती आदि विषयों को समाहित कर उपयोगी बना दिया है।

● **मनुष्य की ऐसी ज़िन्दगानी** – लेखक – मुनि श्री अजित शेखर विजयजी म. प्रकाशक – श्री जैन संघ – गुन्टुर ५२२ ००३, (आ. प्र.) पृष्ठ १०६, मूल्य – पन्द्रह रूपये।

व्यक्तित्त्व की विषमताओं को दूर कर विचार–वाणी–व्यवहार में एकरूपता लाने के लिए विविध विषयों पर मार्गदर्शन किया गया है।

● **युवा सन्देश** – लेखक – मुनि श्री रत्नसेन विजयजी म. प्रकाशक – स्वाध्याय संघ अम्बात्तुर – मद्रास ६०० ०९८ प्राप्तिस्थान – शांतिलाल डी. जैन, इन्डियन ट्रांइंग इक्युपमेन्ट इन्ड. शेड नं.२, सिडको, इन्ड. स्टेट, अम्बात्तुर–मद्रास–९८ पृष्ठ–१ मूल्य – पन्द्रह रूपये।

युवकों के नाम लिखे गये खुले पत्र सन्मार्ग से विचलित युवाओं के लिए प्रेरणास्पद है। युवा साथियों को प्रेरणा देनेवाला सुंदर प्रकाशन है।

● **तीर्थंकर चरितावली** – लेखक – जीवन प्रकाश 'जीवन' प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान – आचार्य श्री आत्माराम जैन प्रकाशन समिति जैन स्थानक – लुधियाना–८ पृष्ठ–१८८, मूल्य – पन्द्रह रूपये।

इसमें चौवीशी के २४ तीर्थकरों का काव्यमय चरित्र दिया गया है।

● **अमृतकण** – संकलन – कुमारपाल वि. शाह – प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान – दिव्यदर्शन ट्रस्ट ३९, कलिकुंड सोसायटी धोलका जि. अहमदाबाद –३८७ ८१० पृष्ठ–२२, मूल्य – पांच रूपये।

पूज्य आचार्य श्री भुवनभानुसूरीश्वरजी के प्रवचनों मे से विचारकणों का संकलन प्रकाशित किया गया है।

प्रकाशित विशेषांक

● **प्राकृतविद्या (त्रैमासिक)** – (पर्यावरण – सन्तुलन एवं शाकाहार विशेषांक) सम्पादक – डॉ. प्रेमसुमन जैन, प्रकाशक – एवं प्राप्तिस्थान प्राकृत–अध्ययन प्रसार संस्थान–अशोकनगर, ऊदयपुर (राज.) वर्ष ३ संयुक्तांक १–३ (अप्रेल–दिसम्बर) मुल्य – पचास रूपये, पृष्ठ २००।

● **शान्ति निकेतन (द्विमासिक) (श्रद्धांजलि – विशेषांक)** – सम्पादक – अशोक शाह, प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान प्रेरणा प्रकाशन ट्रस्ट शान्तिनिकेतन साधना केन्द्र–तीथल (बलसाड़) वर्ष ६ अंक ७–८ (अक्टोबर + नवम्बर + दिसम्बर)

● **सुशील संदेश (मासिक) (भगवान महावीर विशेषांक)** – सम्पादक – श्री नैनमल सुराणा, प्रकाशक – श्री सुशील फाउन्डेशन, वर्ष ५, अंक ५२, जनवरी १९९२, प्राप्तिस्थान – सुशील संदेश प्रकाशन मन्दिर सुराणा कुटीर, रूपाखान मार्ग, पुराने बस स्टेण्ड के पास – सिरोही ३०७ ००१ (राज.)

(१) थाने के निकट मानपाडा में निर्माणाधीन जिनगृहमंदिर एवं उपाश्रय का भूमिपूजन करते हुए संघवी परिवार (२) श्री ज.के.संघवी व के.के.संघवी का बहुमान करते हुए धाना जैन (राजस्थानी) संघ के अध्यक्ष श्री चन्दनमलजी पूनमचंदजी एवं सेनेसिंग इस्टी श्री बाबुभाई भीकमचंदजी मेहता (३) संघवी परिवार की बहनों का मानपाडा संघ द्वारा स्वागत [समाचार पृष्ठ ५७ पर]

તપસ્યા પણ મોંઘવારીનાં ભરડામાં !

– શ્રીમતી ગીતા જૈન

ન્યાયપ્રિય કુદરતની સરળ અને ગરીબોની બેલી સમ કૃપાદૃષ્ટિ દરેકે દરેક સાધારણમાં સાધારણ પ્રાણી સુધી અમી વર્ષાવે છે. એની બનાવેલી દરેક ચીજ-વસ્તુ બધા માટે સહજ સુલભ છે. જેમ કે સૂરજ, ચાંદ, તારા, વરસાદ વગેરે. દરેક જણા એની સુંદરતાનો આનંદ વગર ખર્ચે આસાનીથી પ્રાપ્ત કરી શકે છે. એનાં દ્વારા પ્રાપ્ત થતી સેવામાં પણ ભેદભાવ નથી. સૂર્ય એક સરખો પ્રકાશ સૌ માટે રેલાવે છે. એ જ પ્રમાણે આવશ્યક ચીજો પણ પ્રાથમિકતાનાં ધોરણે સર્વેને સહજ ઉપલબ્ધ છે. હવા કે જે પ્રાણી માત્રને જીવિત રહેવા માટે સૌથી પહેલી જરૂરત છે તો એણે હવાને સર્વત્ર સુલભ પ્રાપ્ય બનાવી છે. કેમકે હવા બહુ જરૂરી છે એટલે કિંમતી હોવા છતાં – એની કિંમત નથી / મફત મળે છે. જે દિવસે હવા (પ્રાણવાયુ)નાં પણ દામ લગાવવામાં આવશે ત્યારે ઉપયોગિતાની દૃષ્ટિએ પ્ર આવતી હોઈ એની કિંમત શું રહેશે ? સરકારના હાથમાં જો એનો પૂરવઠો ચાલ્યો જશે તો રસોઈ ગૅસની જે હવાના સિલિન્ડરની કિંમત પણ દર માસે વધતી જ જવાની - સારૂં છે કે કુદરતે એની 'સપ્લાઈ' પોતાને હસ્તક રાખી છે ! હવા પછી બીજી અગત્યની જરૂરિયાત પાણીને પણ વધુ ને વધુ ઉપલબ્ધ થઈ શકે એવી વ્યવસ્થા કરી છે. એની પણ નિઃશુલ્ક વર્ષા થતી રહે છે. શું માનવી પોતાની બનાવેલી કોઈ કિંમતી ચીજને આટલી સુલભ, સહજ અને મફત બનાવી શકે ? એ તો જરૂરિયાત, ગરજ અને ઉપયોગિતાનાં ધોરણે વસ્તુના ભાવ વધારતા જ જશે. ત્રીજી જરૂરિયાત છે ખોરાકની – વગર ભોજને માનવી લાંબો સમય સુધી જીવી શકતો હોઈ એ ત્રીજી આવશ્યકતા છે. ભોજનની ઉત્પત્તિ તો કુદરત કરે છે, પણ એનું ઉત્પાદન મનુષ્ય દ્વારા અને એમની માલિકીમાં થતું હોવાથી મનુષ્યોએ એ વડે નફો કમાવાની પ્રવૃત્તિને અપનાવી લીધી, હાં ! વચ્ચે વચ્ચે 'બ્લેક' પણ કરી લે છે – કેમકે એની 'સપ્લાઈ' એનાં હાથમાં હોય છે. કુદરતે પોતાની 'સપ્લાઈ' માં ક્યારેય કાપ કે 'બ્લેક' કર્યું નથી.

આ જ રીતે જીવનની એક મહત્તમ જરૂરિયાત છે– અધ્યાત્મ સંસ્કારની – જેને કારણે જ મનુષ્ય, મનુષ્ય બની શકે છે. વગર સંસ્કારે મનુષ્ય અને જાનવરમાં કોઈ ફરક નથી હોતો. સંસ્કારની એક પાતળી રેખા જ મનુષ્ય અને જાનવર વચ્ચેની સીમા/હદ નક્કી કરે છે. આ સંસ્કાર પ્રાપ્ત થાય છે – ધર્મથી/અધ્યાત્મથી. ધર્મ મનુષ્યને જ્ઞાન ચક્ષુની ભેટ આપે છે, ચર્મ ચક્ષુથી તો ફક્ત બાહ્ય આવરણ જ દેખાય, **પરંતુ જ્ઞાનચક્ષુથી આપણે ભીતરી ભાવનો એકસ-રે સુધ્ધાં કરી શકીએ છીએ.** આ ધર્મ, આ અધ્યાત્મ પણ કુદરતે બધા માટે સહજ અને સુલભ બનાવ્યાં - જેની કોઈ કિંમત જ ન આંકી શકાય, જે બેશુમાર કિંમતી છે, જે અણમોલ છે, એ સર્વ ને મફત/નિઃશુલ્ક મળે છે.

જેવી રીતે અનાજનાં વિષયમાં અગાઉ કહી ગઈ કે માનવીનાં હાથમાં જ્યાં જે વસ્તુ ગઈ એની કિંમત એણે વ્યવસાયના આધારે વધારવી શરૂ કરી દીધી. આજ મારા લેખનો એક મુદ્દો છે. જૈનધર્મની સાધના, ઉપાસના બધું જ કંઈ સહજ છે, ફક્ત માનવ માત્ર માટે નહીં પણ સૃષ્ટિનાં પ્રાણીમાત્ર માટે એમાં કર્તવ્ય નિર્દેશ છે. જેમાં મનુષ્યનાં અપરાધને પણ સહજ ગણાવામાં આવે છે, એમાં અપરાધની સજા નહીં ક્ષમા આપવામાં આવે છે. **જૈનધર્મ ક્ષમાનો ધર્મ છે, પ્રેમનો ધર્મ છે, કરૂણાનો ધર્મ છે,** બસ અફસોસ છે તો ફક્ત એક જ વાતનો કે અનેકવાર જાતે જૈન કહેવડાવનાર વ્યક્તિને જ જૈનધર્મની આ સુક્ષ્મભાવના સમજવામાં નથી આવતી, એટલે આત્મસંશોધન/આત્મ પરીક્ષા/ આત્મ પ્રાયશ્ચિત હેતુ આત્મશુધ્ધિની જે તપસ્યાઓ છે અને જે ધર્મ કાજે બધા માટે સહજ સુલભ હોવા છતાં પણ થયું કંઈક ઉલ્ટું જ છે. ધર્મની આ તપસ્યાઓ - સાધનાઓ બાહ્ય સાજ સજ્જાથી એટલી મોંઘી થઈ ગઈ છે કે લોકો એને આત્મશુધ્ધિ કે ધર્મ ભાવનાને બદલે લોકાચારની દૃષ્ટિથી કરવા

લાગ્યા છે. દેખાદેખીથી, કોઈ પડોસી અથવા સંબંધીએ અઠ્ઠાઈ કરી છે તો મારે પણ કરવી જોઈએ. એ જ પ્રમાણે માસક્ષમણ, આયંબીલ, વગેરેનું પણ છે - વર્ષીતપની આકરી તપસ્યા પણ કરાય છે. આ બધા પાછળ ધર્મની પ્રેરણા જરૂર દૃષ્ટિગોચર થાય છે. પણ આ તપસ્યાઓ પછીનું સ્વરૂપ ખૂબ જ લોકાચાર અને વ્યાવહારિકતાનું થતું જાય છે. જેમાં ભવ્ય સરઘસ/વરઘોડા, ચાય-નાસ્તા, બુફે પાર્ટી, ભોજન, સજાવટ, સાંજીનાં ગીત વગેરે અનેક પ્રકારનાં ખર્ચાનાં નવાં નવાં પ્રકારો જોડાતાં જાય છે. લોકો આમાં લગ્ન આદિ સાંસારિક પ્રસંગોની જેમ પ્રભાવના - ભેટ - ચાંદલા રૂપે રૂ.... પૈસા રોકડ સિવાય સોના - ચાંદીનાં આભૂષણો વગેરેની પણ લેતી દેતી કરવા લાગ્યા છે. તો આ તપસ્યાઓ કરતી વખતે પણ માણસ ખર્ચ અને બજેટનો વિચાર પહેલેથી કરવા લાગે છે – આટલું ખર્ચ તો કરવું જ પડશે, આટલું લેણ - દેણ, આટલી પ્રભાવના, આટલાં પૈસા તો વાપરવા જ પડશે, નહીં તો ખરાબ લાગશે. તો આ ખરાબ ન લાગે એ માટે માણસ સારૂં લગાડવાનું કામ વધુ ને વધુ રૂ. ખર્ચીને જ કરી શકે ને ! આમ ધર્મ ને અધ્યાત્મની સાથે લોકાચારનો વ્યવહાર ગુંથાઈ ગયો, આ વ્યવહારની સાથે અને ખર્ચની સાથે રૂપિયાની સાથે એ જ ચિંતા - ફિકર કે જે સગાઈ - લગ્ન વગેરેમાં થાય છે એ જોડાઈ જાય છે. આથી ધર્મ સાધનાની ભાવનાઓ ગૌણ થઈ જાય અને લૌકિક ભાવનાઓ પ્રબળ થઈ જાય છે. આમ આ સંલગ્ન થયેલી ધનખર્ચની વાતથી સમાજનો સાધારણ માનવી કે જેની ખરેખર ધર્મ પ્રત્યે અગાધ શ્રધ્ધા હોય, ધર્માચરણનું પાલન પણ પૂર્ણ નિષ્ઠાથી કરતો હોય, તપસ્યા કરવાની ઈચ્છા પણ હોય, પણ ધર્મ સાધનાર્થે ખર્ચ, લેણદેણ તથા લોકાચારની વાતથી ડરી જાય છે.

આ પ્રકારનો લોકાચાર, તપસ્યા કે ધર્મ સાધનામાં મોટા અવરોધરૂપ બની ગયો છે. લોકો ખર્ચ અને વ્યાવહારિક લોકાચારના ડરથી આ પ્રકારની આત્મશુધ્ધિની તપસ્યાથી કતરાવા લાગ્યા છે/દૂર થઈ રહ્યાં છે. ત્યાં સુધી જોવામાં આવ્યું છે કે માસખમણવાળા બહેન કે ભાઈ ૨૫ કે ૨૭ દિવસનાં ઉપવાસ બાદ, અઠ્ઠાઈવાળા ત્રીજે કે પાંચમે દિવસે પારણા કરી લે છે અથવા તો ઘરનાં વડિલો ખર્ચનાં ડરથી સાધના અધૂરી છોડવા માટે દબાણ લાવે છે/મજબૂર કરે છે.

જેવી રીતે સગાઈ - લગ્નના પ્રસંગે ખર્ચ વધુ કરીને જ પ્રતિષ્ઠા દેખાડવાનો સામાન્ય રિવાજ થઈ ગયો છે - દરેક વ્યક્તિ પોતાની આર્થિક તાકાતથી વધુનો ખર્ચ કરવા લાગ્યો છે. ઠીક એ જ પ્રમાણે ધર્મ સાધનાનું સ્વરૂપ સાત્વિક ધર્મ ભાવનાનું ન રહેતાં વ્યાવસાયિકતાનું થતું ગયું છે. દા. ત. આ સંપૂર્ણ આયોજનની પ્રભાવનામાં કિંમતી આભૂષણ, સોના ચાંદીની વસ્તુઓ, કિંમતી વસ્ત્રો, સ્ટીલનાં વાસણો રોકડા રૂપિયા ઉપરાંત લગ્નનાં સત્કાર સમારંભોમાં ભેટ અપાતી આનંદપ્રમોદની વૈભવી ચીજોની તમામ વસ્તુઓ જેમાં રેફ્રીજરેટર, એયરકંડીશનર, પંખા અને ઈલેક્ટ્રીકનાં અન્ય સાધનો, વિવિધ ફર્નીચર, મોટર - વાહન વગેરે સુધીનો આ લેણદેણનો અપવાદ ક્યાં જઈને અટકશે એ વિચારણીય પ્રશ્ન છે.

આ સિવાય તપસ્યાની પૂર્ણાહુતિમાં ભવ્ય સરઘસ અને વરઘોડા - બેન્ડવાજા સહિતનું ખર્ચીલું પ્રદર્શન થાય છે અને એનું સમાપન મોટાં ભોજન સમારોહમાં થાય છે. આ બધા રિવાજો ઓછા વત્તા પ્રમાણમાં દરેક નાના - મોટા માણસો કરે છે જે દરેક જણની ગજા શક્તિની બહારની વાત હોય છે. દુઃખ તો એ વાતનું છે કે આ બધી ઊપરી સજાવટ ને ધર્મની સાથે જોડી દેવામાં આવી છે, જ્યારે કે ધર્મ અને ધનનો કોઈ સીધો સંબંધ છે જ નહીં. મજાની વાતતો ત્યાં છે કે આ બધું ખર્ચીલું પ્રદર્શન - પ્રચલન સમાજના નવધનાઢ્યો દ્વારા શરૂ થયેલ છે. જે રીતે લોકો પાસે ધનનો પ્રાદુર્ભાવ થયો છે, એને અનુરૂપ એમણે ધન ખર્ચના નવા નવા માર્ગો શોધી કાઢયાં છે. એમનાં આ ભદ્દા પ્રયાસોથી ધર્મ કે સમાજની કેટલી સેવા થઈ છે એ તો કોઈ નાદાન બાળક પણ સમજી શકે છે. બધાથી કંઈક અલગ કરી દેખાડવાની દેખાદેખી અને હુંસાતુંસીની હોડ લગાવીને સમાજમાં

પોતા પ્રત્યે આકર્ષણ ઊભું કરવાની એમની આ ઘેલછાને પરિણામે સમાજના ગરીબ મધ્યમવર્ગના પરિવારના લોકો ને આ પ્રથાઓ/રિવાજો દંડ સ્વરૂપે ભોગવવા પડે છે. સમાજમાં બધાની સામે ટકી રહેવા, છોકરા - છોકરીઓને વરાવવા પ્રતિષ્ઠા તો જાળવવી જ પડે.

મેં ઉપર વ્યાવસાયિકતા શબ્દનો પ્રયોગ કર્યો છે – આ વ્યાવસાયિકતા નાની મોટી તપસ્યા કે દિવસોની ગણતરી પર આધારિત છે. જેટલા દિવસની તપસ્યા હોય છે, એને અનુસાર ખર્ચ અને લેણદેણની વ્યાવહારિકતા કરવામાં આવે છે. મારો ઇશારો સ્પષ્ટ છે કે આવી વ્યાવહારિકતા ધર્મભાવનાના આધાર પર ન હોઈ ને ફક્ત લૌકિક આધાર પર નિર્ભર કરે છે. જેમ કે "એની સાથે મારે કેટલો સંબંધ છે? એણે તપસ્યા નિમિત્ત કેટલો ખર્ચ કર્યો છે? એણે મને મારી તપસ્યા વખતે શું આપ્યું હતું? એને ત્યાં પ્રસંગ આવ્યો ત્યારે એણે મને કેવું આમંત્રણ આપ્યું હતું?" આવી વાતો વિશુધ્ધ વ્યાવસાયિક ભાવથી તોલી જોખીને એનાં આધારે જ આમંત્રણ અને ભેટ અપાય છે. આ રીતે એક બીજા પ્રત્યેની લેણદેણનો હિસાબ રાખવાથી અસલી તપસ્યાનો અધ્યાત્મ ભાવ ભૂલાવી દેવાય છે. પરિણામ એ આવે છે કે **ધર્મસાધના અધ્યાત્મની સુલભ વસ્તુ ન રહેતાં એક મોંઘી પ્રણાલિકા બની ગઈ છે.**

બસ, આ જ અત્રે વિચારવાનું છે કે ધર્મ ને ધનના વ્યવહારથી, ખર્ચના વ્યવહારથી અલગ રાખીને ફક્ત આત્મશુદ્ધિ અને મોક્ષનો આધાર માનવામાં આવે – ધર્મ આરાધનાથી/તપસ્યા વડે આત્મકલ્યાણ પ્રાપ્ત કરીએ એ જ આ લેખની ભાવના છે. શું આપણે સૌ સમાજનાં બહેન-ભાઈઓ આ પ્રકારની અનાવશ્યક ખર્ચાલી પ્રથાઓને ધર્મ-તપસ્યાઓથી અલગ કરીને એને મોંઘવારીનાં ભરડામાંથી ઊગારીશું?

અસ્તુ!

यदि आप चाहते हैं कि -

- **समाज में व्याप्त कुरीतियों, कुप्रथाओं मे सुधार हो,**
- **धार्मिक शिक्षा का प्रचार/प्रसार हो,**
- **सामाजिक चेतना और जागृति का विस्तार हो,**

तो आज ही अपने नगर में

"अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जेन नवयुवक परिषद"

की शाखा स्थापित कीजिए।

संपर्क सूत्र :-

- **अध्यक्ष . सेवंतीलाल मोरखीया, १४६ कीका स्ट्रीट . बम्बई - ४.**
- **महामंत्री - सुरेन्द्र लोढ़ा, धानमंडी - मन्दसौर (म.प्र.) ४५८ ००१.**

प्रेरक प्रसंग

● जब बुल्गानिन और ख्रुश्चेव भारत आये तो एक दिन पंडितजी के साथ उस समय बाहर निकले, जबकि दफ्तरों के बंद होने का समय था। अनगिनत कर्मचारी साइकिलों पर बाहर निकल रहे थे और मंत्री लोग अपनी बड़ी - बड़ी गाड़ियों पर घर जा रहे थे। ख्रुश्चेव के प्रश्न करने पर पंडितजी ने हंसकर कहा, 'जो लोग पैदल या साइकिलों पर है; वह जनता है और जो लोग मोटरों में हैं, वे जनता के सेवक हैं।

રાજમતી

—પં. શ્રીપૂર્ણાનન્દવિજયજી 'કુમાર શ્રમણ'

વર્તમાન ચોવીશીના બાવીશમા તીર્થંકર પરમાત્મા શ્રી નેમિનાથના ભોગવલી કર્મો નષ્ટ પ્રાય હોવા છતાં પણ પોતાના આત્મા સાથે આઠ ભવોથી સંબંધિત રાજીમતીને સંસારમાં શી રીતે રહેવા દેવાય ? તેવા પ્રકારના આશયથી વિવાહનો પ્રસંગ ઉપસ્થિત કર્યો, જાન લઈને આવ્યા પણ..."સાંસારિક નશ્વર સુખોને માટે હું લગ્નગ્રન્થિમાં જોડાઉં અને મારી સાથે આવેલા જાનૈયાઓનાં ભોજન માટે લાખોની સંખ્યામાં મૂક પ્રાણિઓનો વધ થાય, તેના કરતાં હું જ મારા પૌદ્‌ગલિક સુખોનો ત્યાગ કરૂં" તેવી ઉદાત્ત અને સર્વથા અદ્વિતીય ભાવદયાને વશીભૂત થયેલા ભગવાન નેમિનાથ લગ્નના તોરણે ન આવતાં સર્વસ્વ ત્યાગ પ્રધાન દીક્ષાના માર્ગે આવ્યા, પ્રવ્રજિત થયા.

તેમના ભાઈ રહનેમિ સાથે રાજીમતીને પરણાવવાની ભાવના બંને કુટુંબોને થઈ, પણ..."માનસિક રીતે, દીનદયાલ ત્રિલોકીનાથ, દેવાધિદેવ ભગવાન નેમિનાથના નામની ચૂંદડી ઓઢેલી હું રાજીમતી હવે વડિલોના કહેવાથી બીજાના નામની ચૂંદડી ઓઢું તો મારી ખાનદાની, સત્ત્વશીલતા અને નારી માત્રના આભૂષણરૂપ શિયળની મર્યાદાનો લોપ થયા વિના રહેવાનો નથી, જે સર્વથા અધમ માર્ગ છે. કેમ કે રૂપ, રંગ, જુવાની, ભણતર, ચાલાકી ઈત્યાદિ બાબતો તો માનવતાને ખતમ કરીને દાનવતાની બક્ષીસ પણ આપી શકે છે, જ્યારે ખાનદાનીની મર્યાદા, ધાર્મિકતા અને સ્વાર્થ બલિદાન માનવના જીવતાં જીવનમાં જ દેવતાઈ ગુણોની બક્ષીસ આપનારા છે. આ કારણે ઊંચ ખાનદાનમાં જન્મીને વ્યક્તિમાત્રને માટે પૌદ્‌ગલિક સુખોના બલિદાન સિવાય બીજો ધર્મ છે જ નહિ." રાજમતીના ઉપરોક્ત વિચારો જ્યારે બંને કુટુંબોએ જાણ્યા ત્યારે હતાશ થયેલા રહનેમિએ સંયમ માર્ગ સ્વીકાર્યો અને ગિરનાર પર્વતની ગુફામાં ધ્યાનસ્થ થયાં, પરંતુ આત્મિક જીવનની સ્થિરતા વિના ધ્યાનની તાળી શી રીતે લાગવાની હતી ? કેમ કે સંયમ સ્વીકાર પછી પણ રહનેમિ મુનિરાજના મનમાં એક વાત રહી જ ગઈ હતી કે "રાજીમતી મને પરણી ગઈ હોત તો ઠીક થાત" સંયમ સ્વીકારતાં પહેલા આ પાપશલ્યને દૂર કર્યા પછી જ તેમણે દીક્ષા લેવી જોઈતી હતી, પણ માનસિક જીવનના શલ્યોને તથા ગુપ્ત વાસનાઓને દૂર કરવાં બચ્ચાઓનો ખેલ નથી.

નેમનાથ પ્રભુને કેવળજ્ઞાન થયાં પછી, રાજીમતીએ દીક્ષા લીધી અને ગિરનાર પર્વતના સહસ્રામ્ર વનમાં સ્થિત સમવસરણમાં બિરાજમાન પરમાત્માને વંદન કરવા માટે રાજીમતી સાધ્વીજી પર્વત પર ચડી રહ્યાં હતાં. મુશળધારાએ વરસતાં વરસાદના કારણે સાધ્વીજીએ એક ગુફામાં પ્રવેશ કર્યો. જેમાં રહનેમિ મુનિરાજ ધ્યાનસ્થ હતાં. ગુફામાં અંધકારને લઈ સાધ્વીને ખબર ન હતી કે તેમાં કોઈ છે ? ભવિતવ્યતાના કારણે પોતાના વસ્ત્રોને સૂકવતી સાધ્વીજી મ. ના વિજળીના ચમકારા જેવા શરીર ઉપર દ્રવ્યધ્યાનસ્થ

મુનિજીની નજર પડી અને નેમિનાથ તથા રાજીમતીથી હતાશ થયેલા કામદેવે વૈરનો બદલો લેવાની ભાવનાથી પોતાનું અજેય શરસંધાન મુનિ પર કર્યું અને તે પૂર્ણરૂપે ઘાયલ થયા. પછી તો ઉત્તેજિત થયેલી કામવાસનાના માલિકને ભય અને લજ્જા રહેતી નથી. ત્યારે જ તો બેશરમ, બેમર્યાદ, બેઈમાન, ખાનદાન ધર્મથી બેદરકાર અને મનથી બેકરાર થયેલા મુનિએ કહ્યું કે: "રાજીમતી! આ જુવાનીમાં તપ તપવો, સંયમ પાળવો, ઈન્દ્રિયોનું દમન કરવું અતિ દુષ્કર છે. માટે આપણે બંને સંયમનો ત્યાગ કરી ઘેર જઈએ અને વૃદ્ધાવસ્થામાં ફરીથી દીક્ષા લઈને આત્મકલ્યાણની સાધના કરીં."

સિંહ અને હરણ, વાઘ અને બકરી, સર્પ અને નોળીઓ જેમ જન્મજાત વૈરી છે, તેમ મૈથુનકર્મ અને બ્રહ્મચર્યધર્મ, સદાચાર અને દુરાચારમાં પણ હાડવૈર છે. કેમ કે બંનેની ચેષ્ટા, ભાષા તથા વ્યવહારમાં આકાશ પાતાળ જેટલો ફરક અનુભવગમ્ય છે.

ધીર, વીર, ગંભીર, સજ્જન, સત્ત્વશીલ, વિદ્યાવંત, ચારિત્રવંતાદિ માનવોને માટે પણ અમુક સમયો ભયોત્પાદક અને જીવનની પરીક્ષા કરાવે તેવા એકાંત સ્થાનોની શક્યતા નકારી શકાતી નથી; માટે તેવા સમયોમાં પોતાના જીવનની પરીક્ષામાં ઉત્તીર્ણ થાય તે મહામાનવ છે, દેવ છે અને તપસ્વી છે. **મસ્તિષ્કમાં ઉશ્કેરણી કરાવે તેવી પરિસ્થિતિમાં પણ જે ભાગ્યશાળીના જીવનમાં કોઈ પણ જાતનો વિકાર ન આવે તે ધીર છે અને ક્રોધ, લોભ, ભય તથા હર્ષ આદિના પ્રસંગોમાં પર જેને ઉશ્કેરણી ન થાય તે ગંભીર છે.**

જેમનાં જીવનમાંથી માયાશલ્ય, મિથ્યાત્વશલ્ય અને નિદાનશલ્ય સર્વથા સમાપ્ત થઈ ગયા છે, તે રાજીમતી સાધ્વીજીએ સર્વથા નિર્ભય બનીને જવાબ આપ્યો કે 'હત રે ભૂડા દેવરિયા મુનિ!' "ખાનદાન ને કલંકિત, સંયમમાત્રાથી પતિત, તથા સદ્‌ગતિ-તપોધર્મ અને જીવનધનને બરબાદ કરાવનારા પાપ શબ્દોને ઉચ્ચારતાં તમને શરમ નથી આવતી." સત્કર્મોને માટે લીધેલી મહાવ્રતીય પ્રતિજ્ઞાઓને તોડવાના ભાવ રાખવા કરતાં સેયં તે મરણં ભવે સંયમઘાતી થવા કરતાં મરવું શ્રેયસ્કર છે.

જે ઉચ્ચસ્તરીય ખાનદાનમાં તમે જન્મ્યા છો, તેનાં મોઢેથી પરસ્ત્રી પ્રત્યેના આવા અપશબ્દો પુરૂષની સીત્તેર પેઢીને કલંકીત કરનારા હોવાથી તેમની ખાનદાનીમાં તેમના પુત્રો કે પુત્રીઓ, ડોક્ટર, માસ્ટર, સોલિસીટર, બેરીસ્ટર કલેક્ટર તથા કરોડાધિપતિ, લક્ષાધિપતિ, પ્રધાનમંત્રી, શિક્ષામંત્રી આદિના પદો પ્રાપ્ત કરી શકશે. પરંતુ તેઓ કદિપણ સજ્જન-મહાજન કે ચારિત્રના વિષયમાં કોઈને માટે પણ વિશ્વાસનીય બની શકતા નથી. તેઓ કદાચ સંત-મહાસંત બને તો પણ તેમનાથી સંસારને, સમાજને તથા દેશને ક્લેશ-કંકાસ-વિરોધ-સંપ્રદાયવાદ તથા સંઘાડાવાદના અખાડાઓની બક્ષીસ સિવાય બીજા એકેય તત્ત્વની આશા રાખી શકાતી નથી.

દેવરિયા મુનિજી! આપણે બંને અત્યારે એકાંત, સર્વથા એકાંત ગુફામાં છીએ. હું તમને પૂછું છું કે પુરૂષોએ, સ્ત્રીઓને નરકની ખાણ, અદિટઠ કલ્યાણી, ગંદી, અપવિત્ર અને પુરૂષોના જીવનને સર્વસ્વ હરનારી કહી છે. તે કેવળ પુરુષોના મિથ્યાભિમાન કે મિથ્યાભાષાને સૂચિત કરના આ શબ્દો નથી? ખુબ સમજી લેજો કે **પુરૂષ સ્ત્રીને કે સ્ત્રી પુરૂષને નરક આપનારા નથીહોતા, પરંતુ પોતાના માનસિક જીવનમાં છુપાયેલું કે**

છુપાવી રાખેલું પાપતત્ત્વજ વ્યક્તિને નરક અપાવનાર છે. ઉદીરણા કરીને ઉદિત થયેલી, કરેલી, પોષેલી, વધારેલી કામવાસના જ પુરૂષને તથા સ્ત્રીને નરક આપનાર છે. તીર્થંકર પરમાત્માના શિષ્ય બન્યા છો તો પણ તાત્ત્વિક, સત્યમયી ભાષાનો વ્યવહાર કરતાં ન શીખ્યા. આનાથી બીજું અજ્ઞાન કયું? નરક અપાવનાર પાપતત્ત્વ, નથી પુરૂષના શરીરમાં રહેતું કે નથી સ્ત્રીના શરીરમાં રહેતુ કેમકે શરીર તો બિચારૂં પૌદ્‌ગલિક હોવાથી જડ છે. કેવળ સાધન છે અને ચૈતન્ય સ્વરૂપ આત્મા સાધ્ય છે. પરંતુ તે આત્મામાં જ્યારે દુર્બુદ્ધિ, અવિવેક અને ચારિત્રમોહનીય કર્મનો અતિરેક થાય છે ત્યારે તે આત્મા પણ મલિન, પાપબુદ્ધિ બનીને નરક તરફ જવાનો રસ્તો તૈયાર કરવા માટે પારકી સ્ત્રીને ફોસલાવે છે અને સ્ત્રી પણ પોતાના ભાણતર-ગાણતર તથા ખાનદાનીનું દેવાલું કાઢીને પરપુરૂષ પ્રત્યે આકર્ષાય છે, ત્યારે પૂર્વભવનું ઉપાર્જન કરેલું અને આ ભવમાં વધારેલું પુરૂષનું પુરૂષવેદ કર્મ અને સ્ત્રીનું સ્ત્રીવેદ કર્મ જ પાપભાવનાનો ઉત્પાદક બનતો હોવાથી તેમનાં જીવનમાં ગંદા નિમિત્તો, ચિત્રો, કથાનકો, કાવ્યો, ગીતો તથા આચાર-વિચાર અને ઉચ્ચારથી ભ્રષ્ટ થયેલા માનવોનો સહવાસ વધવા પામે છે અને જ્યારે જ્યારે તે ગંદા તત્ત્વો વધે છે અને મર્યાદાથી બહાર જાય છે ત્યારે વ્યક્તિનું મન જ નરકપ્રદ બનવા પામે છે. તેથી પુરૂષને માટે સ્ત્રીનું શરીર કે સ્ત્રીને માટે પુરૂષનું શરીર નરક આપનાર નથી, પણ સ્ત્રીને જોઈ જોઈને આંખ મિંચામણા કરનાર, તેની સાથે ગંદી ચેષ્ટા, ગંદો વ્યવહાર કે તેની સાથે મર્યાદાથી બહાર જઈને વધારેલો સંબંધ જ નરક તરફ લઈ જનાર છે. તેવી રીતે પુરૂષના રૂપાળા અને મદમાતા શરીરને જોઈને સ્ત્રી પોતાનું ભાન ભૂળશે તો તે સ્ત્રી પોતાના પાપે જ નરક તરફ પ્રસ્થાન કરશે. આવી પરિસ્થિતિમાં 'સ્ત્રીને આડગુણા કામ હોય છે' આવા વચનો શું જૈન શાસનને માન્ય છે? અથવા પોતાના પાપોનું, કામવાસનાનું કે હૃદયની કમજોરીનો ટોપલો સ્ત્રીના માથા ઉપર નાખીને પોતાની જાતને નિર્દોષ સાબિત કરવાનું પુરૂષોનું કવિયોનું તથા સ્ત્રીઓથી ભગ્નહૃદય માનવોનું આ મિથ્યા પ્રપંચ છે? તોફાને ચડેલા કામદેવના નશામાં પુરૂષ જ્યારે ભૂંડ તથા ગર્દભ કરતાં પર નીચે ઉતરે છે ત્યારે તેવા મુછાળા મર્દોને માટે જ જિનેશ્વર પરમાત્માની દ્વાદશાંગીએ સાતમી નરક કહી છે પરંતુ સ્ત્રી કદિ પણ સાતમી નરકે જતી નથી. હવે તમે જ નિર્ણય કરો કે અષ્ટગુણા કામનો માલિક પુરૂષ હોય છે કે સ્ત્રી?

હું નેમનાથને માનસિક દૃષ્ટિએ પરણેલી હોવાથી તમારા માટે એકવાર નહીં પણ સાતવાર પરસ્ત્રી છું. આવી સ્થિતિમાં તમારા માટે સંયમઘાતિની બનવા પામું તે અતીવ નિંદનીય કર્મ છે. કેમ કે જૈન શાસને જીવામાત્રને સંયમ આપવાનો અધિકાર આપ્યો છે. તો પછી હું તમને સંયમથી પડવા દઉં અથવા મારૂં રૂપ, લાવણ્ય, બોલવાની ચાલાકી કે બ્રહ્મચર્ય ધર્મથી સુરક્ષિત મારૂં જીવન તમારા સંયમના પતન માટે બને તે કોઈ કાળે પણ ઈચ્છનીય નથી. અને તમારા જેવા મહાવ્રતધારીઓને સ્ત્રીઓનો સહવાસ કરવો-વધારે પડતો સહવાસ કરવો, તેમની સાથે ખાનગી વાતો કરવી તે એક મોટામાં મોટું સામાજિક દૂષણ છે, તેમ સમજીને દેવરિયા મુનિજી! સાવધાન થાઓ, સ્વસ્થ થાઓ અને આધ્યાત્મિક જીવનને સર્વસ્વ માનનારા બનો. **સ્ત્રીના શરીરમાં સુંદરતાની કલ્પના તો કામાંધ માનવોએ કરી છે, જ્યારે તાત્ત્વિક મહાસંતોએ સ્ત્રીનું શરીર અશુચિ અને મળમૂત્રની કચારી સમું કહ્યું છે.** હવે છેવટની વાત સાંભળી લ્યો કે દેવરને માટે ભાઈની

ધર્મપત્ની માવડી. સમી હોય છે, તો માવડી ઉપર મન બગાડીને સંસારના ઈતિહાસને બગાડવાનું પાપ કોઈ કાળે કરશો નહીં, અન્યથા વર્ણશંકર પ્રજાની ઉત્પત્તિ થતાં સંસાર કદરૂપો બનશે. જેના કડવા ફળો સૌને ભોગવ્યા વિના છુટકો નથી. તમારી જ ખાનદાનીમાં જન્મેલા દુર્યોધિન તથા દુ:શાસન વગેરે પોતાની માવડીસમી દૌપદી ભાભી પર ખોટી નજર કરી તો ૧૮ અક્ષૌહિણીની સંખ્યામાં માનવોનો સંહાર થયો અને સંસારના ઈતિહાસમાં તે દેવરિયાઓના મોઢા કાળા રંગના થયા માટે સ્વસ્થ થઈને આપણા દેવર ભાભીનો ઈતિહાસ સદૈવ સુવર્ણાક્ષરે લખાય તે માટે પરમાત્માના ચરણે પધારો અને સંયમની પાલના દ્વારા મોક્ષ મેળવો.

નોંધ : બેશક! સ્ત્રી તથા પુરૂષને ઘી અને અગ્નિની ઉપમાં આપવામાં આવી છે. તેનો યથાર્થ એટલો જ છે કે બંને પોતપોતાની સદાચાર, ખાનદાન અને ધાર્મિક મર્યાદામાં સ્થિર રહી શકે. કેમ કે ભયોત્પાદક સૂત્રો કે શ્લોકોના કારણે વ્યક્તિ માત્રને પાપભીરૂતા થાય તે હરહાલતમાં પર ખોટું નથી.

પશુરક્ષા પ્રજાના તમામ વર્ગના હિત માટે છે.

સેવંતી મ. સંઘવી

પશુ હત્યા બંદ કરવાથી માત્ર હિંદુ પ્રજાને જ લાભ થશે, એવું જે માનવામાં આવે છે તે ખોટુ છે.

પશુઓ ચીતાના છાણ-મુતર અને શ્રમથી આ દેશની જમીન માંથી દર વરસે કરોડો ટન અનાજ ઉત્પન્ન કરી આપે ઉ. તે આ દેશના માત્ર હિંદુ પ્રજાજનો જ ખાય છે, કે આ દેશના તમામ પ્રજાજનો ખાય છે.

પશુઓ વિશ્વશ્રેષ્ઠ શકિનદાયક તત્વો, તાજુ દૂધ-ચીખ્ખુ ઘી અને મીળા છાશ આથી માત્ર હિંદુ લોકોના જ સ્વાસ્થ્યનું રક્ષાણ કરે છે, કે દેશના તમામ લોકોના સ્વાસ્થ્યનું રક્ષાણ કરે છે!

પશુઓ પોતાના છાણ ધ્વારા મફત માત્ર હિંદુ ગ્રામ્યપ્રજાને જ પુરુ પાડે છે!

ખેતા અને ભારવદન માટે સારા ખળદો-પાડા-ઉંટ વિગેરેના જકર શું માત્ર હિંદુપ્રજાને જ છે?

તો પછી પશુંઓના રક્ષાના જવાબદારી માત્ર હિંદુઓના જ છે, કે દેશના તમામ પ્રજાજનોની છે? તેમાં પણ વિશેષ જવાબદારી તમામ પ્રજાના પ્રતિનિધિઓની બનેલી પાલમિન્ટની છે.

પશુંરક્ષા સાથે માત્ર હિંદુ પ્રજાના જ ધાર્મિક અધિકારો નથી જોડાયા પણ રાષ્ટ્રના તમામ પ્રજાજનોના જીવન જીવવાના અધિકારો જોડાયા છે.

પશુંની રક્ષામાં દેશના લગભગ તમામ પ્રશ્નોનો ઉકેલ સમાયો છે. છતાં દેશના મોટા ભાગના રાજકર્તાઓ રાજકીય પક્ષો આ પાયાના પ્રશ્ન ઉપર ધ્યાન કેન્દ્રિત કરવાને બદલે તુચ્છ પ્રશ્નોમાં પોતાના શક્તિઓની વ્યય કરી રહ્યા છે.

श्रीराजेन्द्र वचनामृत

जहाँ घूसखोरी लूटपाट, महंगवारी और आपसी फूट का साम्राज्य रहता है, वहाँ न प्रजा को सुख मिलता है, और न सुखभर निद्रा आ सकती है।

जीव संसार में अकेला ही आता है और अकेला ही जाता है; ऐसी परिस्थिति में एक धर्म को अपना लेने से आत्मा का उद्धार होता है और किसी से नहीं।

जीवन स्नेही, वैभव और शरीर-शक्ति आदि जो कुछ दृश्यमान सामने है, वह समुद्री तरंगो के समान क्षणभंगुर है। यह न कभी किसी के साथ गया और न किसी क साथ जाता है।

जैसे सुगन्धित वस्तु की सुवास कभी छिपी नहीं रहती, वैसे ही गुण अपने आप चमक उठते हैं।

जो सज्जन होते हैं वे सदगुणी होकर भी अंशमात्र ऐंठते नहीं और न ही अपने गुण को अपने मुख से जाहिर करते हैं।

जिसप्रकार आधा भरा हुआ घड़ा झलकता है, भरा हुआ नहीं; काँसे की थाली रणकार शब्द करती है, स्वर्ण की नहीं; और गदहा रेकता है घोडा नहीं; इसी प्रकार दुष्ट स्वभावी दुर्जन थोड़ा भी गुण पाकर ऐंठने लगते है और स्वल्प बुद्धि के कारण सारी जनता को मूर्ख समझने लगते हैं।

जिसके कुटुम्ब में कभी सुख और कभी दुख: इस प्रकार तुमुल जमा रहता है, वह सुखी नहीं महान दुःखी है।

समाज में जब तक धर्मश्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएँ न होंगी तब तक समाज अस्त-व्यस्त दशा में ही रहेगा।

हाट, हवेली , जवाहरात, लाड़ी, वाड़ी, गाड़ी सेठाई और सत्ता सब यहीं पड़े रहेंगे। दुःख के समय, इनमें से कोई भी भागीदार नहीं होगा और मरणोपरान्त इसके उपर दूसरों का आधिपत्य हो जाएगा।

अशाश्वत एवं क्षणभंगुर सुख में लिप्त न रह कर ऐसे आनन्द को प्राप्त करने का यत्न करो जो कभी नाशवान ही न हो।

कर्म-सत्ता को जिसने जीत लिया वही सच्चा विजयी है इसलिए इसे जीतने का सच्चा मार्ग सीखो।

प्राप्त दौलत से सुकृत करो, वह तुम्हें आगे भी सहायक सिद्ध हो सकेगा

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

क्या आप जानते हैं?

कि आज के प्रचलित टूथपेस्टों में उपयोग में लाये जाने वाले फॉस्फेट और जिलेटिन का निर्माण मृत प्राणी की हड्डिओं से किया जाता है? कई लोगों को इस का पता नहीं है. मृत प्राणी की हड्डियों का इस्तेमाल जिस टूथपेस्ट या टूथ पाउडर में किया जाता हो, इसको उपयोग में लाना उचित नहीं है.

अमर टूथपेस्ट — टूथपाउडर में

किसी भी अभक्ष्य पदार्थ का इस्तेमाल नहीं होता. आयुर्वेदिक जड़ी बुट्टियों का इन में बहुत ही सावधानीभरा उपयोग किया जाता है

आयुर्वेदिक
अमर
टूथपेस्ट-टूथपाउडर

**नये युग की हर्बल-लहर
जो दांतों को निरोगी, मज़बूत और
चमकता रखे.**

अमर टूथपाउडर, एक्स्ट्रा स्ट्राँग के नियमित उपयोग से पायोरिया तक के दांत और मसूड़ों के विविध रोग मिट सकते हैं. और श्वास की दुर्गंध भी दूर होती है.

आदर्श दंत-रक्षक — रेग्युलर टूथपेस्ट. रु. ७.५०
आदर्श दंतरोग-निवारक — स्ट्राँग टूथपेस्ट. रु. ८.५०
पायोरिया के इलाज के लिए आदर्श — एक्स्ट्रा स्ट्राँग टूथपाउडर. रु. ११.५०

भारत का एकमात्र अहिंसक आयुर्वेदिक उत्पादन.

निर्माता: स्वामि औषधालय प्रा. लि., ४९७, एस.वी.पी. रोड, बम्बई-४०० ००४.
फैक्ट्री: ४६४, न्यू जी.आई.डी.सी., कतारगाम, सुरत-३९५ ००८.

संपादक - जे.के.संघवी अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।